भाग्यफल

[स्वभाव, चरित्र, विवाह, आय-व्यय, सन्तान, रोग, मृत्यु,
उन्नति-अवनति, प्रभृति समस्त जीवन की त्रैकालिक
घटनाओं को बतलाने वाला]

लेखक—
श्री पं० नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य,
न्याय-ज्योतिषतीर्थ, साहित्यरत्न

मूल्य

प्रथम संस्करण मितम्बर १९४८ सजिल्द १||=)

अजिल्द १||)

प्रकाशक—

कान्त कुटीर, आरा

श्री सरस्वती प्रींटिङ्ग वर्कस लिं०

आरा

द्वारा मुद्रित

बालशिक्षक श्रद्धेय पं० रामचरण शर्मा खुडिला

(धौलपुर) निवासी के कर कमलों में

सादर यह प्रयास समर्पित

—नेमिचन्द्र

विषय-सूची

मास क्रम से उत्पन्न हुए पुरुष और नारियों के शुभाशुभ फलादेश की अनुक्रमणिका नीचे दी जा रही है, इसमें प्रथम अंक संख्या पुरुषों की और द्वितीय अंक संख्या नारियों की है।



प्राक्कथन

भाग्यफल का निर्माण मित्रों की प्रेरणा का फल है। दि० जैन विद्वत्परिषद् के द्वितीय वार्षिक अधिवेशन के समय सोनगढ़ में मित्रवर श्री० पं० परमेष्ठीदासजी शास्त्री ने 'वीर' के लिये लेख का तकाजा किया, इसके पश्चात् भी उनके कई पत्र निबन्ध मंगाने के लिये आये। फलतः मैंने 'बारह महीनों में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश' शीर्षक लेख-माला 'वीर' में चालू की। 'वीर' के पाठकों को यह लेखमाला बहुत पसन्द आई तथा अनेक महाशयो के पत्र भी इस आशय के मेरे पास आये कि हमारा फलादेश ठीक निकला है, इसे पुस्तक-रूप में प्रकाशित कराइये। मैंने उन लेखों को पुनः संशोधित और परिवर्धित कर पुस्तका-कार देने के लिये सोचा, पर अनेक कठिनाइयों के कारण इस संकल्प को जल्द कार्यरूप में परिणित न कर सका। अस्तु,

अब यह भाग्यफल पाठकों के समक्ष है। इसके निर्माण में मैंने बृहद्पाराशरी, नारचन्द्रजातक, बेड़ावृत्ति, मानसागरी, केवलज्ञानहोरा, फलितसूत्र, भविष्यफल, जातकपारिजात, जातकतत्त्व, सर्वार्थचिन्तामणि, बृहजातक, नारदसंहिता, भद्रबाहु-संहिता, त्रैलोक्यप्रकाश, एस्ट्रोलोजी फौर आल, गाइड टू एस्ट्रोलोजी, ट्वल्व मन्थस् , करेक्टर एन्ड केपेबिलटीस् आदि संस्कृत और अंग्रेजी की पुस्तकों से सहायता ली है। इसका फल कैसा घटेगा, यह तो पाठकों पर ही छोड़ता हूँ। हाँ, इतना अवश्य है कि हिन्दी भाषा में इस प्रकार के साहित्य का अभाव है, जिसकी पूर्ति

मे यह एक इकाई है। मुझे विश्वास है कि जिनके पास अपनी जन्म-पत्री नहीं है, वे भी अपने भाग्य को इसके द्वारा जान सकेंगें।

मुझे प्रेस कापी तैयार करने मे श्रीमती सौ० चन्द्रमुखीदेवी न्याय-तीर्थ और श्रीमती सौ० सुशीला देवी से सहायता मिली है, इसके लिये मै आप दोनो का आभारी हूँ। सरस्वती प्रेस के व्यवस्थायक श्री० जुगलकिशोर जैन, मित्रवर बा० रामनरेशलाल श्रीराम होटल पटना और श्री० पं० तारकेश्वर त्रिपाठी, ज्योतिषाचार्य आरा को भी नही भुलाया जा सकता है, आप लोगों से मुद्रण कार्य एवं ग्रन्थ निर्माण कार्य में पर्याप्त सहायता मिलती रही है।

जैन-सिद्धान्त-भवन, आरा

ता० २०-६-४८

नेमिचन्द्र शास्त्री

भाग्यफल

प्रत्येक व्यक्ति अपनी भवितव्यता जानने के लिये उत्सुक रहता है। अनादि काल से भविष्य मे घटित होने वाली शुभाशुभ घटनाओं को ज्ञात कर मानव उनके अनिष्ट फल से बचने के लिये प्रयत्न करता आरहा है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति दुःख प्राप्त करना नहीं चाहता है। मानव की इसी प्रवृत्ति ने ज्योतिष शास्त्र को जन्म दिया है। गरीब, अमीर, शिक्षित, अशिक्षित, सभ्य, असभ्य प्रभृति सभी व्यक्ति अपनी उन्नति-अवनति, जीवन का ह्रास-विकास, सुख-दुःख आदि के विषय मे चिन्तित रहते हैं। वे यह जानना चाहते हैं कि उन्हें किस समय शान्ति और सुख की प्राप्ति होगी, उनके जीवन में ऐसा कौनसा अवसर आयगा जब वे भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति कर प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। अपने इसी भाग्य रहस्य का निर्णय ज्योतिष शास्त्र द्वारा कराना चाहते है। क्योंकि ज्योतिष शास्त्र प्रत्येक व्यक्ति के भाग्य अदृष्ट (जन्म जन्मान्तरों के संचित कर्म) को व्यक्त करता है।

भारतीय दर्शन का सिद्धान्त है कि यह आत्मा अमर है, तथा इसके साथ अनादि काल से कर्मों का प्रवाह चला आ रहा है इस कर्म-प्रवाह के कारण ही आत्मा अशुद्ध हो गया

कृष्ण पक्ष में उत्पन्न हुए व्यक्ति का स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा भी होता है लेकिन शुक्ल पक्ष में पैदा हुए व्यक्ति का स्वभाव स्नेही होता है, यह अपने परिवार के साथ तो स्नेह रखता ही है लेकिन अन्य लोगों के साथ भी स्नेह का व्यवहार करता है। पंचमी, ७ मी, ८ मी और १३ को उत्पन्न हुए व्यक्ति विशेष महत्वाकांक्षी होते हैं। ये सब कार्यों में अपनी ही प्रधानता रखना चाहते हैं, कभी-कभी इनकी यह हरकत इन्हें कष्टदायक भी हो जाती है।

इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति वैद्य, डाक्टर, सैनिक, साधारण व्यापारी, कम्पाउण्डर, मंत्री, मुंशी, मुख्तार, नाविक और असफल शिक्षक होते हैं। ज्यादातर इस मास के पैदा हुए व्यक्ति डाक्टरी विद्या में पूर्ण सफल होते हैं। यों तो व्यापार करते हैं लेकिन अर्थ-संचय की प्रवृत्ति कम रहती है, जिससे सफल व्यापारी नहीं हो सकते हैं। कृषक भी इस महीने वाले सफल नहीं होते हैं, यद्यपि जी तोड़ श्रम करते हैं, लेकिन कृषि का मर्म न जानने के कारण उसमें सिद्धहस्त नहीं हो सकते। इन व्यक्तियों में धन उपार्जन की योग्यता अच्छी रहती है तथा अच्छे कार्यों में मुक्तहस्त से धन व्यय करना भी खूब जानते हैं, इनके हाथ सदा खुले रहते हैं, यही कारण है कि इनके पास धन एकत्रित नहीं हो पाता। ये व्यक्ति इतने हेकड़ होते हैं कि कठिन से कठिन कार्य में बिना परिणाम सोचे कूद पड़ते हैं। शुक्ल पक्ष में उत्पन्न हुए व्यक्ति अधिक बहादुर और साहसी होते हैं।

कृष्ण पक्ष में उत्पन्न व्यक्ति प्रायः उच्च शिक्षित या अर्द्धशिक्षित अवश्य होते है। शुक्ल पक्ष की ३,४,५,८,१४,१५ तिथियां में उत्पन्न हुए व्यक्ति शिक्षित और अवशेष तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति अशिक्षित या अर्द्ध शिक्षित होते है। यदि भाग्यवश शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को किसी व्यक्ति का जन्म रविवार को हो तो वह व्यक्ति अपने जीवन में बड़े ऊँचे कार्य करने वाला होता है। विदेश यात्रा भी वह अवश्य करता है। यों तो साधारणतः इस महीने में उत्पन्न हुए सभी व्यक्ति यात्रा प्रेमी होते है। कृष्ण-पक्ष की १,२,६,८,१०,१४ और ३० इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति शिक्षा प्रेमी होते है। अवशेष इस पक्ष की तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति अर्द्धशिक्षित या अशिक्षित होते हैं। यदि कदाचित भाग्य से इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति शिक्षित हो भी गये तो भी वे पूर्ण शिक्षत नहीं हो सकते। इसका प्रधान हेतु यह है कि उपर्युक्त कृष्ण पक्ष की तिथियाँ अज्ञान द्योतक है, इसलिये किताबी ज्ञान प्राप्त करलेने पर भी वास्तविक ज्ञान का आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता।

आर्थिक स्थिति—इस मास वाले व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति तीन प्रकार की संभव है, भोजन वस्त्र से तबाह, मध्यम स्थिति और कहीं से प्राप्त अन्योपार्जित विपुल सम्पत्ति के अधिकारी। इस महीने के आरम्भिक चार दिनोंमें उत्पन्न हुए व्यक्ति प्रायः खर्च अधिक करने के कारण कभी-कभी भोजन वस्त्र के लिये भी तबाह हो जाते हैं। कृष्ण पक्ष की पंचमी से अष्टमी

तक इन चार दिनों में एवं शुक्ल पक्ष की सप्तमी से लेकर एकादशी तक इन चार दिनों में इस प्रकार इन ८ दिनों में उत्पन्न हुए व्यक्ति मध्यम परिस्थिति के होते हैं। इनके पास भी अर्थ अधिक संचित नहीं रहता है। कृष्ण पक्ष की नवमी से लेकर त्रयोदशी तक और शुक्ल पक्ष की द्वादशी, त्रयोदशी इन दो तिथियों में उत्पन्न व्यक्तियों को अन्योपार्जित वित्त मिलता है। चाहे यह पैत्रिक सम्पत्ति के रूप में हो, चाहे कहीं अन्य स्थान से मिले, लेकिन इन तिथियों के व्यक्तियों के पास अवश्य कुछ धन रहता है। साधारणतः इस मास के लोग बहुत कम धनी होते है, हां अपने पुरुषार्थ के द्वारा यश खूब कमाते हैं और चैन तथा आराम की जिन्दगी व्यतीत करते है।

विवाह—इस मासमें उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों के विवाह प्रायः विलम्ब से होते है। साधारणत, २० वर्ष की आयु से लेकर २८वर्ष की आयु तक विवाह अवश्य हो जाता है। इस मास में उत्पन्न होने वाले व्यक्तियों में एक विशेपता यह रहती है कि वे एकाकी जीवन विताने से घबड़ाते है। अतः इन्हे किसी आश्रय की आवश्यकता रहती है। यद्यपि इनका स्वभाव मित्रता करने के लायक नहीं होता, फिर भी जिससे इनकी मित्रता हो जाती है उसका साथ अन्त तक देते हैं। स्वाधीन प्रवृत्ति के होने के कारण प्रायः मिलना जुलना कम पसन्द करते हैं। कृष्ण पक्ष की दशमी से लेकर शुक्लपक्ष की अष्टमी तक उत्पन्न हुए व्यक्तियों में गुप्त प्रेम भी देखा जाता है। इन तिथियों में

उत्पन्न हुए व्यक्तियों की तीन शादियाँ हो जाती हैं। पूर्णिमा को जिनका जन्म होता है वे प्रायः, एक उपपत्नी रखते है। २१ वर्ष से लेकर २८ वर्ष तक की आयु का समय इस मास के व्यक्तियों के लिये बहुत सावधानी का होताहै। प्रायः इस समय दुष्ट वृत्तियों का जन्म होता है। वैशाख मास में कृष्ण पक्ष की १,३,८,१०,११ इन तिथियों में उत्पन्न हुए पुरुष हस्त मैथुन रोग के शिकार हो सकते है। इस महीने की ये तिथियाँ अप्राकृतिक मैथुनेच्छा को उत्पन्न करने वाली है। प्रेम का महत्व इस महीने के व्यक्ति नहीं जानते।

शारीरिक स्वास्थ्य—प्रायः शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहता है, सर्दी, गर्मी ये बरदाश्त नहीं कर सकते। रक्त-चाप की बीमारी इस मास वाले व्यक्तियों को होती है। इस मास के कुछ व्यक्ति आकस्मिक घटनाओं के शिकार भी होते है जैसे—आग से जलना, पानी में डूबना, अस्त्र से छिन्न होना इत्यादि। सोना कम से कम ७ घंटे इस मास वाले व्यक्तियों को आवश्यक होता है। कब्ज रोग प्रायः सभी को रहता है, कमरदर्द और सिरदर्द की बीमारी भी कभी-कभी होती है। कफ जन्य व्याधियाँ अधिक हुआ करती हैं। दही और कटहल बहुत हानिकारक होते हैं। दूध और गेहूं की रोटी विशेष लाभदायक होती है। जन्म से ३,५,६,८,१०,११,१४,२१,२४,३५,३७, ३८ और ४२ से लेकर ४८ वर्ष तक की आयु का समय कष्ट का होता है। इस मास वाले व्यक्तियों का अकालमरण बहुत कम

होता है। कार्त्तिक, माघ और चैत्र ये तीन महीने इनके लिये कष्टदायक होते हैं। कृष्ण पक्ष के जन्म वालों के लिये अगहन और माघ कष्टकर बताये हैं। इनके लिये वैशाख और ज्येष्ठ ये दो महीने प्रायः अधिक सुखदायक होते हैं। गर्मी के दिनों में लू भी जल्दी लगती है। मेष राशि के सूर्य के ७वें अंश में जन्म लेने वाले (वैशाख शुक्ल ५,२) तिथियों में जन्मे व्यक्ति प्रायः, लू लगने से मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

चरित्र की कमजोरी और दृढ़ता—वैशाख मास में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति प्रायः नैतिक होते हैं। ईमानदारी, इनका विशेष गुण होता है, एक बार जिस बात को कह देते हैं जान जाने पर भी उससे इनकार नहीं करते हैं, व्यावहारिक झूठ के अतिरिक्त सफेद झूठ नहीं बोलते हैं। धर्मभीरु प्रायः होते हैं। बड़े पुरुषों का सम्मान करना एवं उनका आदेश मानना इनका प्रधान कर्त्तव्य होता है हृदय के स्वच्छ होते हैं, हाँ कृष्ण पक्ष के व्यक्ति कुछ कुटिल और गम्भीर स्वभाव होने के कारण अपने मन की बात को छिपाने वाले होते हैं। लैङ्गिक शैथिल्य प्रायः शुक्ल-पक्ष के व्यक्तियों में अधिक होता है। कृष्ण-पक्ष की प्रतिपदा तक उत्पन्न हुए व्यक्ति पेट के कपटी और लैङ्गिक आचरण के शुद्ध होते हैं। इनकी बात का पता लगाना बड़ी टेढ़ी खीर होता है। १८वर्ष से लेकर ३३ वर्ष की आयु तक किसी अपराध में इस मास वाले व्यक्ति जेल भी जाते हैं, नैतिक आचरण साधारणतः इस मास वाले व्यक्तियों का अच्छा होता है।

अच्छा और बुरा समय—२१ वर्ष की आयु से लेकर २८ वर्ष की आयु तक का समय परिवर्तनशील होता है, इस समय अपने स्थान को छोड़ कर अन्यत्र जाना पड़ता है। ३५वर्ष की आयु में सुख मिलता है, २७ से लेकर ३५ वर्ष तक की आयु में भाग्योदय होता है इस समय में जीवन पूर्ण विकास को प्राप्त होता है। ५ वां वर्ष, ७ वां वर्ष, ११ वां वर्ष, ३४वां वर्ष कष्टकारक है। इस समय व्यक्ति के ऊपर शारीरिक कष्ट आते है। १५वां, २२वां, ३१वां, और ४८वां वर्ष आर्थिक दृष्टि से कष्ट दायक है, ५५वां ५६वां ५८वां वर्ष सुखदायक है, इस समय घर में उत्सव आदि मांगलिक कार्य होते है। ७५वर्ष की आयु तक इस मास वाले जीवित रहते है। २८ वर्ष की आयु से लेकर ३५ वर्ष की आयु तक का समय जीवन के लिये स्वर्ण अवसर होता है, इस समय पुरुषार्थी व्यक्ति अधिक से अधिक उन्नति कर सकता है। आषाढ, भादों, अगहन, और पौष महीने सर्वदा अच्छे रहते है। इन महीनों में प्रत्येक कार्य सफल हो सकता है। मंगल का दिन इस मास वाले व्यक्तियों को अधिक सफलता देने वाला होता है। गहरे चमकदार रंग की वस्तुएं अधिक सुखदायक होती हैं। हीरा की अंगूठी पहनने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव कम हो जाता है।

संख्या—इस मास वाले, व्यक्तियों को ८, ३, और १ का अंक अच्छा होता है। अर्थात् रेश या फाटका लगाने वालों को इन अंकों पर दाव लगाने से लाभ होता है। जिन

संख्याओं का जोड़ ९ होता है वे संख्याए भी सुखकर होती हैं जैसे ६+३, ४+५, ८+१, ७+२ अर्थात १,२,३,४,५,६,७,८, की संख्या अपनी योगवाली संख्या के साथ शुभ फल देन वाली होती हैं।

जीवन का सामान्य पर्यालोचन—माता, पिता का सुख इस मास वाले व्यक्तियों को प्रायः अच्छा रहता है। भाइयों की संख्या अधिक से अधिक ६ तक हो सकती है। लेकिन कृष्णपक्ष के व्यक्तियों के २ भाई से ज्यादा प्रायः नहीं होते। सन्तान इस मास वालों को खूब उत्पन्न होती है।

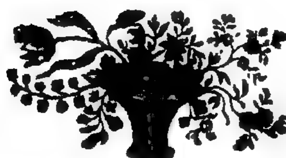
भाई और माँ का सुख कम होता है, मां की अपेक्षा इस मास वाले पिता से अधिक प्रेम करते है और चाचा तथा चाची से सदा भयभीत रहते है। चचेरे भाइयों का सुख भी कम होता है। जीवन प्रायः इस महीने वालों का सुखमय व्यतीत होता है। मूर्ख व्यक्ति कम ही इस मास में उत्पन्न होते है। जो मूर्ख भी रह जाते है वे भी अपने व्यवसाय में खूब प्रवीण होते है, जीवन का मध्यभाग अधिक सुखकर होता है, स्त्रियों के प्रति आकर्षण अधिक होता है। वैशाख मास के व्यक्ति जीवन में अनेक उत्थान और पतनों को देखते हैं, इनका जीवन कठोरता की अग्नि में सदा तपा करता है। अपने साहसी और अक्खड़ स्वभाव के कारण ये किसी से डरते नहीं; कठिन से कठिन और खतरनाक कार्यों में भी ये साहस नहीं खोते हैं। इस मास का पूर्ण प्रभाव शुक्ल पक्ष की तृतीया

से दिखलाई पड़ता है। प्रायः वैशाख मास के सभी व्यक्ति किसी न किसी बात में ख्याति प्राप्त करते है।

वैशाख मासमें उत्पन्न होनेवाली कन्याओं का फलादेश

इस मास में उत्पन्न होने वाली नारियाँ विशेष कामुक प्रवृत्ति की होती है। ये घर गृहस्थी के कार्यो में खूब निपुण होती है। भोजन बनाने में इन्हे अधिक दिलचस्पी होती है। शिक्षा और दस्तकारी में इनकी अच्छी प्रगति होती है, पति से प्रेम रखती है, स्वभाव रूखा और लड़ाकू होता है, घर के लोग प्रायः नाखुश रहते है। शादी १८ वर्ष के पहले ही हो जाती है। कृष्णपक्ष में उत्पन्न हुई नारियो का चरित्र प्रायः शिथिल होता है। लैङ्गिक भावनाये अधिक तीक्ष्ण होती है। इस मास की नारियों में यह एक विशेषता होती है कि ये रूखे स्वभाव की होने पर भी मेल, जोल अधिक रखती है। सौभाग्य अच्छा होता है, सन्तान अधिक संख्या में उत्पन्न होती है। मध्य अवस्था मे आकस्मिक रोग या किसी अन्य बात का आक्रमण होता है जिससे मृत्यु होते-होते बचती है। इस महीने में उत्पन्न हुई नारियों को शिक्षित और सुन्दर पति मिलता है। इनका जीवन सर्वदा सुखमय बीतता है। विलासिता और फैशन इन्हे अधिक प्रिय होती है। आमोद-प्रमोद अधिक पसन्द करती है। इस मासवाली नारियों को प्रथम सन्तान १६, १८ और २७ वर्ष की आयु में उत्पन्न होती है।

जिनका जन्म रविवार और शनिवार को दोपहर के बाद होता है उन्हें ५ पुत्र और इन्हीं दिनों को दोपहर के बाद होता है उन्हे ५ कन्याएँ होती है। सोमवार और बुधवार को दोपहर के पहले जन्मग्रहण करनेवाली इस मास की नारियों को ३ पुत्र और दोपहर के पश्चात् जन्म लेनेवाली नारियों को ४ पुत्र और ३ कन्यॉए होती है। मंगल और गुरुवार को जन्मी देवियों को साधारण सन्तान सुख और शुक्रवार को जन्मी देवियों को सन्तान सुख का अभाव होता है। आर्थिक दृष्टि से इस मास की जन्मी देवियॉ सधारणतः सुखी होती है; सैकड़े पचास को अर्थजन्य कष्ट का अनुभव करना पड़ता है। यों तो इनका विवाह-सम्बन्ध प्रायः अच्छे घरों में होता है तथा पति भी पढ़े लिखे मिलते है, जिससे भौतिक आवश्यकता की पूर्त्ति में कुछ बाधा नहीं आती है, फिर भी अर्थसंचय करने में ये सर्वथा असमर्थ रहती है।



ज्येष्ठ मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति स्थिर, धीर, और सावधान होते है। शान्ति और आराम की जिन्दगी इन्हें पसन्द होती है। ये व्यवहार-कुशल होते हैं। शुक्ल-पक्ष के व्यक्ति अधिक व्यावहारिक होते हैं। इस मास के जन्मे हुए व्यक्तियों को प्रेम, सौन्दर्य और शिष्टता का व्यवहार अधिक पसन्द रहता है। देहात में जन्मे व्यक्ति भी सौन्दर्योपासक होते हैं, शहरी व्यक्ति तो विशेषरूप से भावुक और सौन्दर्य प्रिय होते हैं ये व्यक्ति जल्दी क्रुद्ध नहीं होते, लेकिन जिस समय इनका क्रोध उभड़ पड़ता है उस समय उग्र रूप धारण करलेता है। प्रायः इस मास वाले व्यक्ति पुरानी व्यवस्था के हामी होते हैं, नवीन सुधार इन्हें पसन्द नहीं होता है। कदाचित सुधारकों से इनकी मुठभेड हो जाया करती है। गायन विद्या में ये व्यक्ति अच्छी दक्षता प्राप्त कर सकते है, यदि ज्येष्ठ मास के जन्मे व्यक्ति के विचारों में परिवर्तन हो गया तो फिर पक्के सुधारक और समाजवाद के पोषक बन जाते हैं। ज्यादातर कम्युनिस्ट भी इसी मास के जन्मे व्यक्ति होते हैं। परिस्थिति के परिवर्तन से इस मास वाले ज्यादा लाभ उठाते हैं। कृषि-कर्म करने में दक्ष और अपने परिवार के व्यक्तियों के सुख-स्वार्थ के लिये सब कुछ त्यागने वाले होते है। स्वार्थ की भावना इनमें अधिक रहती है, जब तक अपने स्वार्थ की पूर्ति नहीं होती है तब तक अपनी मित्रता का निर्वाह करते हैं,

सफल वक्ता, कुशल-लेखक और योग्य चिकित्सक इस मास में जन्मे व्यक्ति होते हैं। यदि अनुकुल परिस्थितियां इन्हें मिलती हैं, तो पुलिस विभाग और अध्यापकी-कार्य को भी संपन्न करते हैं। जासूसी का कार्य कुशलता-पूर्वक कर सकते हैं। ज्येष्ठ मास के जन्मे व्यक्तियों में स्वाभाविक क्षमता ऐसी होती है कि वे किसी गूढ़ रहस्य को पता आसानी से लगा लेते हैं। इनका मिजाज इतना तुनुक होता है कि थोड़ी सी उपेक्षा भी इन्हे असह्य होती है। आवेगशील होने के कारण ये लोग किसी बात का तुरन्त निर्णय कर लेते है, जिससे इन्हे कभी-कभी बड़ी भारी हानि भी उठानी पड़ती है।

इस मास के जन्मे व्यक्ति परिश्रम साध्य काम को कभी पसन्द नहीं करते और अर्थोपार्जन के कार्य को शीघ्र कर लेते हैं। इन लोगों में व्यवसायिक मौलिकता अधिक होती है अतएव नूतन आविष्कारों के द्वारा धनोपार्जन करते है। इस मास की १०मी, ११सी और १३सी तिथि में जन्मे व्यक्ति अच्छे व्यापारी होते है। ये लोग स्टाक एक्सचेंज का काम बड़ी योग्यता से करते है। नौकरी से इन्हें अच्छा लाभ नहीं होता है। पंचमी और नवमी को पैदा हुए व्यक्ति आपत्ति से जल्द घबड़ानेवाले होते है, इनका स्वभाव जनाना होता है तथा बोलचाल भी स्त्रियों जैसी होती है। प्रतिपदा को रविवार या मंगलवार को तथा आर्द्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति

विशेष कामुक होते हैं और संसार में कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकते। इन्हें पारिवारिक सम्पत्ति मिलती है, लेकिन ये लोभ प्रवृत्ति के कारण उसका भली प्रकार सदुपयोग नहीं कर पाते। बुधवारी छठ को जन्मे व्यक्ति बड़े उद्योगी और परिश्रम शील होते है। विघ्न-बाधाएं इन्हें रोक नहीं सकती हैं। अनुशासन का कार्य ये बहुत अच्छी तरह से कर सकते हैं।

चारित्रिक तारतम्यता इस मास के व्यक्तियों में अधिक देखी जाती है, एक महान् चारित्र का धारी होता है तो दूसरा पक्का दुराचारी। द्वितीया, तृतीया, और पंचमी इन तिथियो में उत्पन्न हुए व्यक्ति आचरण के अच्छे होते है, इनका स्वभाव भी मिलनसार होता है, हॉ मायाचार इनमें जरूर रहता है ये किसी बात को सहन नहीं कर सकते है। सदा अपनी ही बात पर डटे रहते है। जब ये बीमार होते हैं तो थोड़ी सी बीमारी से ही इतना घबड़ा जाते हैं कि अन्य व्यक्ति भी इनके साथ परेशानी उठाता है। शुक्ल पक्ष की दशमी, एकादशी और पूर्णिमा को उत्पन्न व्यक्ति अच्छे भाग्यशाली होते हैं। इनका स्वभाव मिलनसार होता है और ये संसार की किसी भी शक्ति से नहीं डरते है। सदा अच्छे सद्‌गुणी व्यक्तियां की संगति करते हैं। अधिक मानसिक श्रम करने के कारण इन लोगों को स्नायु संबंधी रोग हो जाते हैं। स्नायु तथा मस्तिष्क संबंधी परिश्रम करने के कारण इनको नस-दाह के साथ-साथ, हाथों,

आखों और चेहरे पर गुठलियाँ पड़ जाती हैं। अन्त में रक्त-चाप तथा पक्षाघात हो जाने का भी भय रहता है। इस मास वाले व्यक्ति अधिकतर पूर्ण आयु के होते हैं। अकालमरण बहुत कम का होता है। कृष्णपक्ष की सप्तमी, अष्टमी और दशमी को उत्पन्न होने वाले राज सम्मान प्राप्त करते हैं तथा अष्टमी को २२-३०, इष्टकाल पर भरणी नक्षत्र में जन्म लेने वाले निश्चय से राज कर्मचारी होते हैं। इसी दिन कृत्तिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले जेल जाते हैं। इन व्यक्तियों के ऊपर हत्या का जुर्म लगाया जाता है जिससे इन्हें कष्ट-सहित जेलयात्रा करनी पड़ती है। कृष्णपक्ष की एकादशी से लेकर शुक्लपक्ष की चतुर्थी तक उत्पन्न होने वाले व्यक्ति देश-भक्त होते हैं तथा देश को उन्नति शील बनाने में मदद करते हैं। इन व्यक्तियों के शत्रु अधिक होते हैं, लेकिन सदा ये शत्रुओं को परास्त करते रहते हैं। इनका अधिकांश समय आमोद-प्रमोद में व्यतीत होता है। कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को जन्म लेने वाले प्रायः व्यसनी होते हैं, भाग्य से शायद एकाध व्यक्ति सच्चरित्र निकलता है। हाँ इस तिथि के कुछ व्यक्ति सफल कहानी लेखक और वक्ता होते हैं। साहित्य सेवा की लग्न इनके मन में लगी रहती है। शुक्लपक्ष की पंचमी को जन्म लेने वाले व्यक्ति कलाकार और गायक होते हैं। इन्हें कलाओं से अधिक प्रेम होता है और आजीवन कला की आराधना करते रहते हैं।

आर्थिक स्थिति—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति अधिकांश कमाऊ होते हैं। वे जिस कार्य में लग जाते हैं, उसीसे धन पैदा कर लेते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यापार में इस मास वाले ज्यादा लाभ उठा सकते है। २२,२६,२८,३१,३७ और ४७ वें वर्ष में भाग्योदय होता है। आर्थिक स्थिति साधारणतः अच्छी होती है। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी और षष्ठी इन तिथियों के पूर्वार्द्ध में जन्म लेने वाले मध्यवित्तवान और उत्तरार्ध में जन्म लेने वाले पूंजीपति या निर्धन होते है। कृष्ण पक्ष की पंचमी के उत्तरार्ध में उत्पन्न हुए व्यक्ति साधु या सन्यासी भी होते है यदि इस दिन मंगलवार हो तो वह व्यक्ति परले दर्जे का आवारा होता है। जीवन के प्रारंभ में साधारणतः इस मास वाले व्यक्तियों को कुछ आर्थिक कष्ट होता है, लेकिन मध्य जीवन और अन्तिम जीवन मे उन्हें अर्थ की चिन्ता नही रहती। शुक्लपक्ष की एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक जन्म लेनेवाले व्यक्ति प्रायः धनी होते है तथा मिल आदि के द्वारा अपने व्यवसाय की उन्नति करते हैं। कृष्णपक्ष की पंचमी से लेकर अमावस्या तक जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः मध्यम धनी होते है। इनका जीवन उत्तरोत्तर उन्नति करता चला जाता है तथा इनका भाग्योदय १८ वर्ष की आयु से लेकर ४९ वर्ष की आयु तक होता है।

मेष राशिवाले इस मास में जन्मे व्यक्ति अल्प धनी, वृष राशि वाले अधिक धनी, मिथुन राशिवाले मध्यम धनी,

कर्क राशिवाले अधिक धनी, सिंह राशिवाले मिल मालिक, कन्या राशिवाले अल्प धनी या निर्धन, तुला राशिवाले अल्प धनी, वृश्चिक राशिवाले निर्धन, धनु राशिवाले मध्यम धनी, मकर राशिवाले साधारण धनी, कुम्भ राशिवाले अधिक धनी, और मीन राशिवाले मध्यम धनी होते हैं। प्रायः इस मास में जन्मे व्यक्तियों के जीवन का अन्तिम भाग सुख कर होता है। कृष्णपक्ष को त्रयोदशी को १३-२० इष्टकाल पर जन्मे व्यक्ति को भूमि के नीचे से धन मिलता है। इसे लौटरी, जुआ आदि से भी धन की प्राप्ति होती है। इस मास के बुध, शुक्र और गुरु इन वारों में जन्म लेने वाले व्यक्ति अपने बुद्धिबल से धनोपार्जन करनेवाले और रविवार मङ्गलवार एवं शनिवार को उत्पन्न हुए व्यक्ति शारीरिक बल से धनोपार्जन करनेवाले होते हैं। सोमवार को जन्मे व्यक्ति शारीरिक और बौद्धिक इन दोनों शक्तियों से धनार्जन करते हैं।

विवाह और मित्रता—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों की मित्रता कम रहती है, ये अपने स्वार्थ में पक्के रहते हैं इसलिये इनके मित्र कम रहते है। हाँ, इतनी विशेषता इस मासवाले व्यक्तियों में अवश्य रहती है कि जिसके साथ एक बार मित्रता हो जाती है फिर उसका आजीवन निर्वाह करते हैं। शादी इनकी छोटी उम्र में ही हो जाती है। सोमवार को पंचमी तिथि में उत्पन्न हुए व्यक्तियों की शादी प्रायः नहीं होती, यदि कदचित शादी हो भी जाय तो विवाह के

कुछ ही दिन बाद स्त्री मर जाती है कृष्ण पक्ष की दशमी से लेकर शुक्ल पक्ष की पंचमी तक जन्मे व्यक्तियों की एक से अधिक यानी दो-तीन शादियां होती हैं। कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को जन्मे व्यक्ति प्रायः एक उपपत्नी भी रखते हैं, साधारणतः इस मास में जन्मे व्यक्तियों की शादी १८ वर्ष से लेकर २६ वर्ष की उम्र के बीच में हो जाती है। शुक्ल पक्ष मे जन्म लेने वाले व्यक्तियों में से अधिकांश व्यक्तियों के दो विवाह होते है।

सन्तान सुख - इस मास में जन्मे व्यक्तियों के सन्तान ११ तक होती हैं, लेकिन जिनका जन्म सन्ध्या काल का होता है उनके जप-तप के बाद ही सन्तान उत्पन्न होती है। कृष्णपक्ष की १, ३, ५, ६, ७, ८, ९ इन तिथियों में पैदा हुए व्यक्तियों को अधिक संतान उत्पन्न होती है। शुक्लपक्ष की १, २, ४, ५, ७, ८, ११, १२, १३ इन तिथियो में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को लड़के अधिक और लड़कियाँ कम एवं कृष्णपक्ष २, ४, १०, ११, १२, १३ तथा शुक्लपक्ष की ३, ६, १४ इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को लड़कियाँ अधिक उत्पन्न होती हैं। सधारणतः इस मास में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को सन्तानसुख अच्छा रहता है।

स्वास्थ्य—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहता है। कृष्णपक्ष की १, ४, ६, ८, १० इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को क्षय रोग, शुक्लपक्ष की ११, २, ७, १३, १५ इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को

फायलेरिया या मुटापा का रोग एवं शेष तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का स्वास्थ्य प्रायः अच्छा नहीं होता।

ज्येष्ठ मास में उत्पन्न हुई नारियों का फलादेश

इस मास में जन्मी नारियाँ साधारण आर्थिक स्थिति की होती है। दुर्भाग्य इनका साथ सदा देता है, धनी घराने में शादी होने पर भी ये निर्धन ही रहती हैं। सोम और प्रदर रोग इन्हे सदा रहते है, वैशाख मास में उत्पन्न हुए पुरुषों के साथ विवाह होने से ये सुखी रहती है। सास का सुख इस मास की नारियों को कम होता है। इनका प्रारंभिक जीवन ऐश और आराम का होता है लेकिन अन्तिम जीवन दुःख-मय हो जाता है। संतान इस मास में उत्पन्न हुई नारियों को अधिक होती है। १५, १६, १८, २१ और २२ वे वर्ष इनके जीवन के महत्त्वपूर्ण होते है। इस मास में जन्म लेनेवालियों में एक विशेषता यह होती है कि ये अपने लिये अशुभ किन्तु अन्य कुटुम्बियों के लिये शुभ होती है। कृष्ण-पक्ष की दशमी से लेकर शुक्ल-पक्ष की ३ तक उत्पन्न हुई समाज-सेवा और देश-सेवा में भी भाग लेती है। इनमें सच्चा मातृस्नेह पाया जाता है। प्रायः इस मास की नारियाँ शिक्षित, अर्द्धशिक्षित एवं साक्षरा होती हैं। परिवार के व्यक्तियों के साथ इनका कम मेल रहता है। लड़ाकू प्रवृत्ति शुक्ल-पक्ष में जन्मी नारियों की विशेष होती है, लेकिन जीवन में अच्छे कार्य्य भी इन्हीके द्वारा होते हैं।

इस मास में जन्म लेनेवाली देवियों को सन्तान सधारण होती है, पश्चिमी ज्योतिषियों के मतानुसार इस महीने में रविवार को उत्पन्न होने वालियों को ५ सन्ताने, सोमवार को जन्म लेनेवालियों को ३, भौमवार को जन्मी नारियों को ८, बुधवार को जन्म लेनेवालियों को १०, गुरुवार को जन्मी देवियां को ६, शुक्रवार को जन्मी देवियों को ७ और शनिवार को जन्मी देवियों को ४ सन्तानें होती हैं। इस मासवालियां की सन्ताने मृत्यु के मुख में भी बहुत जाती हैं। इनके जीवन मे कई अवसर उन्नति के आते है। विवाह के बाद पति-गृह में ससुराल के लोगों के साथ कलह होने से इनका जीवन नारकीय हो जाता है। सैकड़े दस इस मासवाली नारियॉ २० वर्ष की आयु से शिक्षण देने का कार्य्य आरम्भ करती हैं। इन की बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है। माता-पिता की सेवा इनके द्वारा ज्यादा होती है। पिता से इन्हें ज्यादा सुख मिलता है, पति द्वारा परित्याग भी इन का होता है। आर्थिक दृष्टि से ये स्वतन्त्र होती है। योगक्षेम के लायक ये स्वयं अर्जन करती है। इनके लिये १, ७, ९, १०, ११, १४, १६, २४, २६, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३६, ४२, ४५, ५७ और ६२ वें वर्ष घातक होते हैं। १८, २६, ३६, ३८ ४८, ५०, ५५, ६५ वें वर्ष सुख कारक होते हैं। इन वर्षों में इनका विकास होता है तथा ३६ और ३८ वें वर्ष में किसी पद की प्राप्ति भी इन्हें हो सकती है। इनका प्रभाव समाज में उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है।

अषाढ़ मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति बड़े ही विलक्षण होते हैं। ये सदा शरीर की अस्वस्थता के कारण बेचैन रहते है। प्रायः ये साहित्यिक, विद्वान, कवि और लेखक होते है। इनका स्वभाव अक्खड़ होता है। अपने हाथ में एक साथ अनेक कार्य्य ले लेने से इन्हें कभी कभी हानि उठानी पड़ती है। इस मासवाले व्यक्ति जल्द ही प्रसन्न और जल्द ही अप्रसन्न होने वाले होते है। कभी कभी उनका क्रोध इतना अधिक बढ़ जाता है कि ये शत्रु का नाश किये बिना सुख-शांति की सांस नही लेते है।

प्रायः इस मासवाले व्यक्ति लम्बे, दुबले-पतले और गौर वर्ण के होते है। ये अपने को आवश्यकता से अधिक चालाक सिद्ध करने का प्रयत्न करते है। शुक्ल-पक्ष के व्यक्ति असाधारण प्रतिभाशाली बताये गये है। ये अपनी तकलीफो और झंझटों को बहुत बढ़ाकर कहते है। कृष्ण-पक्ष में पैदा हुए व्यक्ति त्यागी और स्नेही होते हैं। इनकी प्रतिभा अत्यन्त अद्भुत होती है, वे कठिन से कठिन विषय को भी सरलता से दूसरों को समझा सकते हैं। ये किताबी कीड़े होते हैं तथा प्रयत्न करने पर सफल कलाकार बन सकते हैं। इनके कुटुम्बियों का स्नेह इन्हें बहुत कम मिलता है। हां, जहां जाते है वहां अनेक स्नेही इन्हें मिल जाते हैं; जिससे कुटुम्बियों का अभाव इन्हें खटकता नहीं है।

कुछ ज्योतिषियों का अभिमत है कि इस मास वाले देशभक्त, साहित्यसेवी और परोपकारी होते है। इनके द्वारा प्रत्येक कार्य्य बुद्धिमानी पूर्वक किया जाता है। अषाढ़ मास में जन्मे व्यक्तियाँ में एक सबसे बड़ी विशेषता यह पायी जाती है कि ये विपत्ति से घबड़ाने-वाले नहीं होते हैं। संघर्ष से इनके जीवन का विकास होता है। इनका स्वभाव भी संघर्ष-प्रिय होता है। जिस प्रकार सोने का रंग अग्नि में तपाने से खिलता है, उसी प्रकार संघर्ष और परिस्थितियों से इनकी उन्नति होती है। इनका चरित्र प्रायः मध्यम दर्जे का होता है। कृष्ण-पक्ष में जन्मे व्यक्ति कामुक और क्रोधी तथा शुक्ल-पक्ष में जन्मे व्यक्ति भावुक और शांतिप्रिय होते है। जिन व्यक्तियों का जन्म रात मे होता है वे अपने वचनों के पक्के नही होते है। इनके विचार क्षण-भंगुर होते है तथा ईमानदार भी नहीं होते। लेकिन इस मास में दिन मे पैदा होनेवाले भक्त, गायक, कवि और विषय-वासना के दास होते है। इनका चित्त सदा अशान्त रहता है, मन में कल्पनाओं का बवंडर उठता है। राजा, विद्वान् और बड़े पुरुषों के द्वारा इनका सम्मान होता है। कभी कभी घरेलू झगड़ों से ऊब कर ये व्यक्ति आत्म-हत्या भी कर लेते है। इनका वैवाहिक-जीवन सुखी नहीं होता, पति-पत्नी में मन-मुटाव बना रहता है।

यों तो इस मास वाले व्यक्ति बड़े स्फूर्तिमान तथा चंचल होते हैं और जिस किसी से जल्द ही अपना परिचय कर लेते हैं

तथा जिससे इनका परिचय होता है वह व्यक्ति इनके प्रति बड़े अच्छे भाव रखता है। ये लोग बड़े दृढ विचार के होते है, इसलिये इन्हे प्रभावित करना जरा टेढी खीर होना है। प्रायः इस मास वाले सभी व्यक्ति उच्च कोटि के मातृ-प्रेमी होते हैं, इनकी प्रवृत्ति भी प्रेम तथा आदर्श की ओर होती है। ये सौन्दर्य्य उपासक होते है, ये सुन्दर गृह-निर्माण करते है। यदि परिस्थितियों की अनुकूलता हुई तो ये लोग अपने मित्रों और कलाविदों के प्रति बड़ी उदारता दिखलाते है और आनन्द मय वातावरण बनाते है। अपमान और द्रोह से इन्हें बड़ी घृणा होती हैं, उत्तेजित किये जाने पर ये प्रबल विरोध का सामना करने को अन्तिम श्वास तक तैयार रहते है तथा अन्त तक अपने पक्ष का समर्थन करते रहते है।

पाश्चात्य लोगों का मत है कि इस मासवाले व्यक्ति प्रायः स्वस्थ और बलिष्ठ होते है। कभी कभी सौन्दर्योपासना इन्हे धोका दे देती है, कारण ये अपनी उपर्युक्त प्रवृत्ति के कारण सुन्दर स्त्रियों के वश में जल्द हो जाते है, जिससे इन्हें अनेक कष्ट सहन करने पड़ते है। ये भोग-लिप्सा की तृप्ति के लिये नीच कर्म करने को भी तत्पर हो जाते है तथा झूठी बाते बनाना और मिथ्या बोलना इनके बाये हाथ का काम होता है।

कृष्ण-पक्ष की १, ४, ९, १३, १४ इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति अपने जीवन में सदा सुख, यश और सम्मान प्राप्त करते हैं, इनके पास विपुल सम्पत्ति होती है लेकिन इनमें एक

विशेषता यह होती है कि अपने भोग के लिये खर्चीले होते हैं पर दान-पुण्य आदि कार्य्यों के लिये एक धेला भी खर्च करना उचित नही समझते। उपर्युक्त तिथियों में उत्पन्न होने वालों का स्वभाव कुछ चिडचिड़ा तथा गुर्दा कमजोर होता है, इनमें पुंसत्व शक्ति भी कुछ कम होती है, प्रायः बचपन में इनके जीवन में कुछ खराबियां आ जाती है। इसीलिये पुंसत्व शक्ति में न्यूनता आ जाती है, जिन व्यक्तियों का इस मास में अश्विनी, कृत्तिका, रोहिणी, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्रों में जन्म होता है, वे प्रतापी, शूरवीर और कार्य्य-कुशल होते हैं। इनका मस्तिष्क कल्पना-शक्ति प्रधान होता है। ये सदा अपने सम्बन्धियों से स्नेह करते है, इनका प्रारम्भिक जीवन उन्नतिशील होता है, मध्य जीवन में अनेक संघर्ष सहन करने पड़ते है तथा अपमान आदि भी होते है अन्तिम जीवन में उदासीनता आ जाती है तथा घर से विरक्त होकर वन और मठों में निवास करना पडता है।

जिन का जन्म आषाढ मास शुक्ल-पक्ष की २, ३, ४, ७, ८, ११, १२ तिथियों में होता है वे प्रायः अस्त्र-शस्त्र चलाने में प्रवीण होते है; ये सैनिक, सेनापति, डाक्टर और पुलिस विभाग के अफसर होते हैं। शासन विभाग का कार्य्य अच्छा करते है। इनका प्रधान लक्ष्य सेवा-वृत्ति की ओर रहता है। कृष्ण-पक्ष के जन्मे व्यसनी, देशभक्त और राष्ट्रसेवक होते है। लेकिन शुक्ल-पक्ष में जन्मे शासनविभागीय कार्य्य करने

में दक्ष होते हैं। जिनका जन्म आषाढ़ शुक्ल-पूर्णिमा को होता है, वे विद्या व्यसनी, सफल शिक्षक, कुशल कृषक और विमान चालक होते हैं। इनका जीवन विशेष रूप से परदेश में व्यतीत होता है, ये अपने स्थान पर भी रह कर प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। इनमें सिर्फ एक स्वार्थ-भावना का दुर्गुण रहता है, जिससे अन्य लोग इनका अविश्वास करते है।

आर्थिक स्थिति—इस मास के जन्मे व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति साधारण होती है। जिनका जन्म इस महीने में रविवार के दिन होता है वे धनी-मानी होते हैं तथा इन्हें लाटरी से धन मिलता है। पैत्रिक सम्पत्ति के न होने पर भी ये अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी कर लेते है। जिस व्यापार को ये करते है, उस में पूर्ण सफल होते है। सोमवार को जन्मे व्यक्ति प्रायः नौकरी करते है, इनका भाग्य अच्छा होता है और श्रम करने पर इन्हें धनागम होता है। पर इतना सुनिश्चित है कि इस महीने में सोमवार में जन्मे व्यक्ति पूंजीपति कदापि नहीं हो सकते। मिल, व्यापार एवं कारखाने के कार्य्य भी इस दिन के व्यक्ति योग्यता पूर्वक नहीं कर सकते। इनमें धनार्जन की शक्ति कम होती है। यदि कदाचित अवसर मिला तो ये कुशल डाक्टर तथा ओवरसियर बन कर कुछ धनार्जन कर लेते हैं।

जिन व्यक्तियों का जन्म इस मास में मंगलवार के दिन होता है वे प्रायः दरिद्र या साधारण परिस्थिति के व्यक्ति

होते हैं; किन्तु मंगलवार के दिन १, ४, ७, ६, ११, १३ इन तिथियों में जिनका जन्म होता है वे नियमित रूप से धनी होते है। बुधवार को जन्म लेने वाले मध्यम परिस्थिति के होते है। शुक्रवार के दिन इस महीने में जिन व्यक्तियों का जन्म होता है वे प्रायः व्यवसायी और शनिवार के दिन पैदा होने-वाले याचक, भिक्षु, सन्यासी और पुरोहित होते है। इनके पास साधारणतः कुछ धन संचित रहता है। इस मासवाले व्यक्तियों की आय व्यय से अधिक होती है जिनका जन्म २३ घटी, २५ पल इष्टकाल पर होता है, उनमें अधिकांश व्यक्ति अधिक व्यय करने वाले होते है। यों तो साधारणतः इस मासवाले लोभी और परिमित व्यय करने वाले होते हैं। हां, अवसर आने पर अधिक खर्च कर डालते हैं। इनका प्रधान पेशा नौकरी होता है। कुछ व्यक्ति व्यापार भी करते हैं, किन्तु लाभ कम होता है।

आषाढ मास में जन्मे व्यक्ति प्रारम्भ में अल्प धनी होते है। ये अपने पुरुषार्थ के बल से अच्छा पैसा पैदा करते है। इन्हें सहयोग नही मिलता है, अथवा कम ही सहयोग प्राप्त होता है, फिर भी ये धनार्जन कर लेते है। यों तो इस मास में जन्मे कम ही व्यक्तियों को धन से अभिरुचि होती है, ये प्रायः अल्प सन्तोषी होते है। किन्तु चालाक और कार्य्यकुशल परले दर्जे के अपने को साबित करते हैं। आषाढ़ कृष्ण-पक्ष ३, ६ और १२ को जन्मे नौकरी द्वारा ऊँचा पद प्राप्त

करते हैं। असेम्बली के मेम्बर, धारा सभाओं के मंत्री या सदस्य भी उक्त तिथियों मे पैदा हुए व्यक्ति होते हैं, तथा धनार्जन का साधन भी इनका राजनैतिक क्षेत्र ही होता है। कम धनी होते हुए भी इस मासवाले अच्छा सम्मान प्राप्त करते हैं, सभी इन्हें अपना समझ कर सौहार्द प्रकट करते है। इस मासवाले व्यक्तियों को मित्रों के द्वारा भी धनार्जन होता है।

आर्थिक दृष्टि से इस मास वालों को कभी कष्ट नहीं होता है। हां, जो लोग सम्पादक, लेखक और चित्रकार होते है, उन्हे ३६ वर्ष की आयु में आर्थिक कष्ट होता है। १८, २४, २८, ३०, ३२, ३८, ३६, ४०. ४२, ४८. ६२, ६४, ६५ और ६७ वे वर्ष आर्थिक दृष्टि से अच्छे माने गये है। २६, ३५, ३६, ३७, ४१, ४५, ४६, ५५, ६६ वे वर्ष आर्थिक संकट के बताये गये है। इस मास के जन्मे व्यक्तियों को भोजन-वस्त्र का कष्ट नहीं होता है। सैकड़े दस व्यक्ति पराश्रय होकर जीवन-यापन करते है।

विवाह और मित्रता—इस मास मे जन्म लेने वाले व्यक्तियों का विवाह १६, १८, २०, २१, २३, २५, २८, ३२, ३६, ३७ वर्षों में होता है। जिनका जन्म कृष्ण-पक्ष की ३, ६, ९, ११ तिथियों को होता है वे दो विवाह करते हैं तथा जिनका कृष्ण-पक्ष की १, ५ को २७।३३ इष्टकाल पर होता है वे तीन विवाह करते हैं। शुक्ल-पक्ष की २, ६, ८, ९, १२, १३ तिथियों में पैदा होनेवालों का निश्चित रूप से विवाह होता है किन्तु

शुक्ल-पक्ष की १३ तिथि को जन्म लेने वाले व्यक्ति दो या तीन विवाह भी करते है। अनुभव बतलाता है कि इस मास को १, १४, १२ तिथियों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का विवाह नहीं होता है। यों तो इस मासवालों के मित्र कम ही होते है। पर इनके स्वभाव मे इतनी विशेषता होती है कि ये जहां रहते है वहा इनके दो चार हितैषी अवश्य बने रहते है। तथा इनके शत्रु बहुत कम होते है। क्योंकि इनका व्यवहार इतना मधुर होता है कि शत्रु को भी नत मस्तक होना पड़ता है।

अच्छा और बुरा समय—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को २४, २६ २७, २९, ३१, ३२, ३३, ३४, ३८, ४२, ५४, ५५, ५८, ५९, ६२, ६४, ६६ वे वर्षों में भाग्योदय का अवसर आता है। ४, ६, ९, १०, ११, १३, १५, १६, १७, १८, २४, २८, २९, ३०, ५५, ४७, ५७, ६१, ६२, ६३ वे वर्ष में ऐसे अवसर आते है जिनमे इन्हे नाना प्रकार के झंझट रहते है तथा अपने व्यवसाय मे हानि होती है। दूसरे व्यक्तियों के द्वारा धोखा भी इन्हे उपर्युक्त वर्षों में ही दिया जा सकता है। अतएव धोखे से उक्त वर्षो में सजग रहना चाहिये।

रोग और घातक वर्ष—आषाढ़ मास मे उत्पन्न हुए व्यक्तियों को १, २, ४, ५, ७, ११, १६, १९, २४, २९, ३४, ३८, ४४, ४५, ४७, ४८, ५४, ५५, ५७, ६२, ६४, ६६ और ७१ वें वर्ष में बीमारियां उत्पन्न होती है। २७, ३४, ३८, ४८, ५५, ५७, ६६

और ६७ वें वर्ष में विशेष बीमारी उत्पन्न होती है, जिससे ये वर्ष घातक होते हैं।

जीवन का विकास—इस मास में उत्पन्न हुए अपने जीवन का विकास २६ वे वर्ष से आरम्भ करते हैं। १९ वें वर्ष में परिस्थितियों का ऐसा चक्कर आता है जिससे इनके जीवन के विकास मे विभिन्न प्रकार की अड़चने आती है। पर जो व्यक्ति इन परिस्थितियों को पार कर आगे बढते हैं वे निश्चित रूप से अपने जीवन को विकसित कर लेते हैं। जीवन के विकास का समय २६ वे वर्ष से ३४ वे वर्ष तक ही आता है जो व्यक्ति अपने इस समय का सदुपयोग कर लेते है, वे निश्चित रूप से आगे बढ जाते है। इस मासवाले व्यक्तियों पर सत्संगति का प्रभाव जल्द पड़ता है। अतः जीवन के विकास में इन्हें संगति का प्रधान स्थान समझना चाहिये।

अनुकूल समय—कार, कार्त्तिक, पौष और माघ मास इनके लिये विशेष शुभ दायक होते हैं। बुधवार इस मासवाले व्यक्तियों के लिये अधिक श्रेष्ठ दिन है। तिथियों मे १, ४, ९, १०, ११, १४ अधिक शुभ बतायी गई है।

सन्तान सुख—इस मास में उत्पन्न होनेवालों को संतान सुख साधारण होता है। जिनका जन्म गुरुवार को २४।३० इष्टकाल पर इस महीने में होता है उनको पुत्र-सुख अधिक और जिनका जन्म शनिवार को २९।३४ इष्टकाल पर होता है उन्हे पुत्र सुख नहीं होता। शुक्रवार की रात को

जन्मे व्यक्तियों को कन्या-सुख अधिक होता है। इस मास की १, ३, ५, ८, ११, १३ इन तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को संतान सुख अच्छा और ७, ४, ६, १४, १५ इन तिथियों में उत्पन्न होनेवालों को संतान-सुख साधारण या अल्प होता है। जिन का जन्म आषाढ मास की किसी भी तिथि को वृष राशि के नवांश में होता है वे अधिक पुत्र वाले होते हैं तथा उनकी संतान योग्य, शिक्षित और चरित्रवान होती है, किन्तु जिनका जन्म मेष राशि के नवांश में होता है और पंचम भाव में मीन राशि रहती है उनके संतान का अभाव होता है। ऐसे लोगों की स्त्री प्रायः बीमार रहती है तथा वे स्वयं भी अल्प-वीर्य होते है, जिससे संतान उत्पन्न नहीं होती है।

आषाढ़ मास में उत्पन्न हुई नारियों का फलादेश

इस मास में उत्पन हुई नारियां स्वस्थ्य और प्रसन्न होती है; इनका गार्हस्थिक जीवन अत्यन्त सुखमय होता है, ये पति की प्रिय, अन्य कुटुम्बियों की आंख की तारा होती है। साधारण शिक्षा के अतिरिक्त ये विशेष शिक्षा प्राप्त करती है। इनकी साहित्य की ओर विशेष रुचि होती है। आमोद-प्रमोद इन्हें अधिक पसन्द होते है। संतान-सुख इन्हें अच्छा होता है सुहाग भी अच्छा रहता है। जिनका जन्म इस महीने में शुक्र और बुध के दिन होता है वे धनिक होते हुए भी अधिक दुःख वहन करती हैं।

इस मास की नारियों में एक विशेषता यह होती है कि ये सुकुमार प्रकृति की होती हुई भी दबंग होती है। किसी गुण्डे या अन्य वासना के दास व्यक्ति का इतना साहस नहीं होता कि इनकी तरफ आंख उठा कर देख सके। प्रायः सभी सदाचारिणी होती है, इनका हृदय स्वच्छ होता है। कपट और मायाचार इनमे अल्प होता है। प्रायः स्त्री के यथोचित सभी गुण इनमें पाये जाते हैं। कृष्ण-पक्ष की नारियों की अपेक्षा शुक्ल-पक्ष की नारियां अधिक सुन्दर होती है, सेवा-वृत्ति की भावना इनमें अधिक होती है। इनके घातक वर्ष ४, ६, ७, ६, ११, १४, १६, १६, २१, २४, २५, २६, २७, २८, ३४, ३८, ४२, ४६, ६४, ६६ और ६७ है। १८, २०, २२, ३०, ३६, ४४, ४८, ५४ और ५८ वे वर्ष इनके लिये बहुत अच्छे होते है। इन वर्षों में इन्हे संतान-लाभ, धन-प्राप्ति तथा इनके पति की उन्नति होती है। इनके जीवन के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण समय २२ वे वर्ष का है, इसमें इनका विकास होता है।



श्रावण मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति अधिक भावुक और संवेदनशील होते हैं। इनकी इच्छा और अनिच्छा दोनों ही उत्कट हुआ करती हैं और वे बहुधा मनःस्थिति के प्रवाह में प्रवाहित होते रहते हैं। कभी कभी ये अपनी भावुकता के कारण दूसरों के लिये कष्ट-दायक भी हो जाते हैं। घर तथा परिवार इन्हें अधिक प्रिय होता है। इस मास में जन्मे व्यक्ति परिवर्त्तन को अधिक पसन्द करते हैं। नवीन सुधार और क्रान्ति इन्हें प्रिय होती है लेकिन अन्ततोगत्वा निन्दा के भय से ये सुधार से मुंह मोड़ लेते है इनकी अन्तरात्मा अधिक बलिष्ठ नहीं होती, शरीर इनका साधारणतः बलिष्ठ होता है, स्वभाव से मिलनसार होते हैं, लेकिन कृष्ण-पक्ष में जन्मे व्यक्ति शुक्ल-पक्ष में जन्मे व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक मिलनसार होते हैं।

जिनका जन्म श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को ११ घटी ३० पल इष्ट काल पर होता है वे व्यक्ति बड़े भाग्यशाली और धर्म-प्रचारक होते है। ये जगत में एक नई क्रान्ति करते हैं और साधारण जनता के लिये एक आदर्श मार्ग चलाते है, लेकिन इसी दिन जिनका जन्म १७ घटी ३५ पल इष्ट काल पर होता है वे संसार के लिये कष्ट-दायक होते है। प्रायः इस समय में उत्पन्न हुए व्यक्ति डाकू, चोर और व्यभिचारी होते हैं, इनकी आजीविका हिंसा के प्रधान साधनों से होती है। जिन व्यक्तियों का जन्म ३१

घटी ५४ पल में इष्ट काल पर होता है वे पक्के राजनीतिज्ञ होते हैं। शासन व्यवस्था चलाने में पटु होते है। श्रावण कृष्णा द्वितीया को अनुराधा नक्षत्र में ११ घटी ४९ पल इष्ट काल पर जिन व्यक्तियों का जन्म होता है वे निश्चितरूप से डाक्टर, प्रोफेसर, स्पीकर और लेखक होते हैं। साधारणतः इस दिन उत्पन्न हुए व्यक्ति कविता-प्रेमी होते हैं, २५ घटी ३७ पल इष्ट-काल के पश्चात् जन्म लेनेवाले निश्चित कवि होते है, ये अनेक भाषाओं में कविता करते हैं। इनकी प्रतिभा विलक्षण होती है तथा कभी कभी ये पक्के दार्शनिक बन जाते है। अनुभव बतलाता है कि इसमें ग्रहों की स्थिति ऐसी होती है जिससे इस महीने में उत्पन्न हुए व्यक्ति सफल दार्शनिक या नैयायिक नहीं बन सकते है। हाँ यद्वा-तद्वा रूप से दार्शनिक हो सकते है। अंग्रेजी ज्योतिष के गोचर सिद्धान्त के अनुसार मालूम पड़ता है कि श्रावण कृष्णा ७ और श्रावण शुक्ला १३ को उत्पन्न हुए व्यक्ति गणितज्ञ और वैज्ञानिक होते है तथा इन्ही तिथियों में उत्पन्न हुए व्यक्ति ज्योतिर्विद् और वैदिक भी होते है। पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने श्रावण में उदय होने वाली ताराओं का परीक्षण कर बतलाया है कि इस मास में जन्मे व्यक्ति संस्थाओं के अधिष्ठाता, जहाजों के कप्तान, घर सजानेवाले और पारिवारिक आवश्यकता की चीजों के व्यापार में कुशल व्यवसायी होते हैं। इनका स्वभाव झक्की होता है, सदा इन्हें अपनी बात ही सच्ची जंचती है। मजदूर विभाग में काम करने वाले इस

मास के व्यक्ति कार्य्य कुशल होते हैं, कला के ये मर्मज्ञ होते हैं। ये अपने अधिकारी की सदा उपेक्षा करते रहते हैं और अवसर मिलने पर अधिकारियों के विरोध में बगावत भी करते हैं।

पूर्वीय ज्योतिष के अनुसार इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति दलाल, पुरानी वस्तुओं के विक्रेता, शिक्षक, डाक्टर और कवि अथवा लेखक होते हैं। जो व्यक्ति मैनेजर हों, उन्हें सदा घरेलू वस्तुओं के व्यवसाय की मैनेजरी करनी चाहिये, इसमें उन्हे अच्छी सफलता मिलने की सम्भावना है। पराशर का मत है कि इस मास वाले व्यक्ति कल्पना-शील होने के कारण बड़े बड़े व्यवसायों की स्कीम सुन्दर बना सकते हैं, तथा सफल प्रबन्धक हो सकते हैं। लेकिन अपने तुनुक मिजाज के कारण कभी कभी इन्हे बड़ी भारी हानि उठानी पड़ती है। इनका स्वभाव नम्र होने के साथ साथ क्रोधी भी होता है। अपनी आलोचना और निंदा इन्हे जरा भी पसन्द नही होती है। सदा ये अपनी हलचल में ही लगे रहते हैं। घी का व्यवसाय यदि ये करें तो इन्हे अच्छा लाभ हो सकता है।

मकान बनाने के कार्य्य में इस मास में उत्पन्न हुए मजदूर विशेष सफल हो सकते हैं और शिल्प-कला में पूर्ण योग्यता भी प्राप्त कर सकते हैं। परिश्रम और व्यवसाय करने में ये किसीसे पीछे नहीं रहते कुछ लोग इनके अनुयायी भी बन जाते हैं।

जैनाचार्य नारचन्द्र का मत है कि इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति साहसी और कार्य्यकुशल होते हैं। अपने ऊपर

किसी का अंकुश सहन नहीं करते, व्यवसाय में सदा उच्च-श्रेणी के रहते है। यदि किसी विभाग के मैनेजर या अधिकारी हो जाते हैं तो उस कार्य्य को बड़ी योग्यता के साथ संभालते है, अधिकांश उन्नति इस मास वाले व्यक्तियों की सहयोगियों पर आश्रित रहती है। इनका स्वभाव कुछ झक्की होता है और "क्षणे रुष्टा, क्षणे तुष्टा" वाली कहावत इनके साथ लागू होती है। बुद्धिमान और भावुक होने के साथ-साथ भयभीत भी इस मास वाले व्यक्ति होते है, रात में अकेले कहीं आना जाना इन्हें अधिक भयप्रद होता है। इनका मस्तिष्क ४० वर्ष की आयु के पश्चात् कुछ विकृत-सा हो जाता है तथा अपने झक्की स्वभाव के कारण कुछ अप्रिय हो जाते है। सामान्यतया समस्त जीवन पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि इस मासवाले व्यक्ति उद्योगी और परिश्रमी होते है। इनका जीवन मन्थर गति से उन्नति की ओर बढता चला जाता है। कृष्ण-पक्ष की १, २, ४, ७, ८, ९, ११ और १३ तिथियों में जन्म-लेनेवाले व्यक्ति प्रायः नौकरी करते है। यदि कदाचित व्यवसाय करते भी है तो इन्हें पूर्ण सफलता नहीं मिलती है। कृष्ण-पक्ष की अवशेष तिथियों में जन्मलेनेवाले व्यक्ति व्यवसाय में अधिक सफल होते है। यदि कदाचित से नौकरी करते हो तो भी इन्हें नौकरी छोड़ कर व्यवसाय ही करना चाहिये। शुक्ल-पक्ष की १, २, ५, ८, ११, १२ और १३ तिथियों मे उत्पन्न हुए व्यक्ति व्यापारी अच्छे हो सकते है। तथा ११ और १२ तिथियों में

जन्म ग्रहण करनेवाले मिल मालिक हो सकते हैं, अवशेष शुक्ल-पक्ष की तिथियों मे जन्मलेनेवाले नौकरी में ही लाभ उठा सकते है।

विवाह और मित्रता—श्रावण मास मे जन्म लेनेवाले व्यक्तियों का विवाह ६, १२, १४, १६, १७, १८, २०, २१, २४, २६, २८, ३२ और ४२ वर्ष की आयु मे होता है। जिनका जन्म कृष्ण-पक्ष की १, २, ३, ५, ८, ११, १२ और ३० तिथियों मे होता है उनका विवाह युवावस्था के प्रारम्भ मे ही हो जाता है तथा इनका दाम्पत्य-जीवन सुखमय बीतता है। किसी किसी का मत है कि कृष्ण पक्ष की ३, ५, ८ तिथियों के उत्तरार्ध मे जन्म लेने वाले व्यक्तियों के दो या तीन विवाह भी होते हैं तथा इनकी पत्नियाँ चतुर और सुन्दर होती है। ये व्यक्ति अपनी भावुकता के कारण कुट्टिनी स्त्रियों के पंजे मे भी फंस जाते हैं तथा आचरण हीन बन जाते हैं। शुक्ल पक्ष की २, ६, १०, १२ और १५ को जन्म लेने वाले व्यक्तियों का विवाह प्रायः छोटी उम्र मे हो जाता है। शुक्ल-पक्ष की अवशेष तिथियों मे जन्म लेनेवाले व्यक्तियों का विवाह प्रौढ़ावस्था मे होता है।

जिनका जन्म श्रावणी पूर्णिमा को होता है उनके विवाह प्रायः दो होते है और इस दिन जन्मे व्यक्ति अधिक कामुक भी होते है, जिनका जन्म इस मास की किसी भी तिथि को १६ घटी ४७ पल इष्ट काल पर होता है उनका विवाह प्रायः नहीं होता है। इस मासवाले व्यक्तियों के मित्र कम होते हैं तथा इनके रूक्ष

व्यवहार के कारण शत्रु अधिक होते हैं। इनके शत्रुओं की संख्या ३० तक हो सकती है जो इन्हें समय समय पर हानि पहुँचा सकते हैं। झक्की स्वभाव के कारण इनके मित्र भी इनसे परेशान रहते हैं। और हार्दिक मित्रता रखने वाले इनके लिये बहुत कम होते है। कभी कभी ये अपने व्यवहार के कारण अनेकों मित्र पैदा कर लेते है, लेकिन थोड़े दिनों के बाद वे सब मित्र इनका साथ छोड़ देते है और कारण वश, शत्रु का कार्य्य करने लगते हैं। जिन व्यक्तियों का जन्म कृष्ण-पक्ष की ११ को हो तथा इस दिन यदि रोहिणी नक्षत्र हो तो ये व्यक्ति बहुत मिलनसार होते हैं, इनसे इनके परिवार के लोग सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते है।

शुक्ल-पक्ष की १० को जन्मे व्यक्ति व्यवहार कुशल होते है और अपनी चतुराई के कारण जहाँ रहते है वहाँ के वातावरण को अपने अनुकूल बनाये रखने का प्रयत्न करते है। यदि इस दिन जन्मे व्यक्ति किसी शिक्षा-संस्था में प्रविष्ट हो जायँ तो निश्चितरूप से ये उस संस्था की उन्नति कर सकते हैं। शिक्षा-प्रिय होने के साथ साथ ये सदाचार-प्रिय भी होते है और अवसर मिलने पर इस दिशा में अधिक प्रगति कर सकते हैं।

अच्छा और बुरा समय—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों की १७, १८, १९, २२, २४, २६, २८, २९, ३१, ३२, ३३, ३४, ३६, ३८, ४१, ४४, ४५, ५४, ५५, ५६, ५७, ५९, ६२, ६४, ६६ और

७० वे वर्षों में विशेष उन्नति होती है और इन्हीं वर्षों में इनके भाग्य का सितारा चमकता है। १५, १६, २०, २१, २३, २५, २७, ३०, ३२, ३९, ४७ और ६३ वे वर्षों में कुछ आर्थिक कष्ट रहेगा। जिन व्यक्तियों की मेष, मिथुन, कर्क और तुला राशियां होती है, वे इस मासवाले व्यक्ति ३१ वे वर्ष की आयु में सुख और शान्ति प्राप्त करते है। उनका समय इस आयु से अच्छा व्यतीत होने लगता है। प्रायः इस मास में उत्पन्न व्यक्तियों को ३४ वर्ष की आयु मे अशुभ ग्रहों का प्रभाव अनिष्टकर होता है अतः इस समय दानादि द्वारा अशुभ ग्रहों की शान्ति करने से उनका प्रभाव न्यून होता है।

घातक वर्ष—श्रावण मास मे उत्पन्न हुए व्यक्तियों को जन्म से ३, ५, ६, ७, ८, और ११ वे मास कष्ट कारक होते है, जिनका जन्म अश्विनी, मघा, अश्लेषा, रोहिणी और श्रवण में होता है वे व्यक्ति प्रायः अल्पायुवाले होते है। १, २, ३, ५, ७, ९, १०, ११, १४, १६, १७, १९, २०, २४, २६, २८, २९, ३०, ३५, ३८, ४५, ४७, ४९, ५४, ५६, ५७, ६२, ६४, ६८, ७२ और ७५ वे वर्ष में बीमारिया उत्पन्न होती है। इस मासवाले व्यक्तियों को बालारिष्ट रहता है। अतः जन्म से लेकर ८ वर्ष की आयु तक नाना प्रकार के रोग होते रहते है। २३, २८, ३२, ३६, ३८, ४७, ४९, ५४, ५८, ६४ और ७२ वे वर्ष में विशेष बीमारियाँ उत्पन्न होती है। जिनका जन्म कृष्ण-पक्ष की २, ३, ५. ११, १४ को होता है उन्हे २८ वे वर्ष मे विशेष बीमारी का सामना

करना पड़ता है तथा जिनका जन्म शुक्ल-पक्ष की १, २, ४, ८, १२, १५ को होता है उन्हें जन्म से लेकर ११ वर्ष की आयु तक प्रायः कष्ट रहता है और ५४, ५८ एवं ६४ वे वर्ष विशेष कष्ट-मय व्यतीत होते हैं।

जीवन का विकास—श्रावण मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों के जीवन का विकास २३ वें वर्ष से आरम्भ होता है। २८ वें और ३७ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं, इन दोनों वर्षों में अनुकूल साधनों के मिलने पर ये अपने जीवन का शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक विकास अच्छी तरह से करता है। ४५ वर्ष की आयु से लेकर ५३ वर्ष की आयु तक का समय विशेष सावधान रहने का है। इतने समय में अनेक उत्थान और पतन व्यक्ति के सामने आते हैं। यदि इस समय का व्यक्ति सदुपयोग कर लेता है तो उसका जीवन सदा के लिये सुख-मय हो जाता है। इस मासवाले व्यक्तियों पर अन्य का प्रभाव कुछ नहीं पड़ता है, स्वतन्त्र विचारक होने के कारण ये स्वयं ही अपने पुरुषार्थ द्वारा अपने मार्ग को प्रशस्त करते हैं। ३१ वाँ वर्ष प्रायः परिवर्तनशील रहता है, इसमें घबड़ाना नहीं चाहिये। जो व्यक्ति ३१ वें वर्ष को अच्छी तरह बिता देते हैं, उनका भाग्योदय पूर्णरूप से ३७ वर्ष की आयु तक अवश्य हो जाता है। ३१ वें वर्ष में इस मास में जन्मे व्यक्तियों के समक्ष कुछ ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जिससे विकास रुक जाता है।

कुछ व्यक्ति १८ वे वर्ष की आयु में विकास की ओर बढते है, लेकिन २३ वे वर्ष की आयु तक उनके समक्ष केतु का प्रभाव रहने से अनेक बाधाएँ आती है जिससे उन्नति के समस्त मार्ग रुद्ध हो जाते है। इसीलिये इस मासवाले व्यक्तियों को १८ वर्ष की आयु से लेकर २२ वर्ष की आयु तक दृढ अध्यवसाय करना चाहिये, जिससे उन्नति के मार्ग रुद्ध न हो। यदि अपने स्वभाव मे इस मास वाले व्यक्ति कुछ सुधार करले तो इनकी सारी कठिनाइयॉ दूर हो सकती है। ईमानदार और सच्चरित्र होना अत्यावश्यक है।

अनुकूल समय—माघ, फाल्गुन और श्रावण ये तीन मास श्रावण मे जन्म लेनेवाले व्यक्तियों के लिये शुभ-दायक होते है। अगहन और कार्त्तिक अधिक अनिष्टकर होते है तथा अवशेष मास सामान्यतया अच्छे होते है। रविवार और सोमवार इस मास मे जन्मे व्यक्तियों के लिये विशेष सिद्धिदायक होते है। संक्रान्ति आरम्भ होने का समय विशेष लाभदायक होता है। तिथियों मे २, ३, ६, ७, ११, १३ अधिक शुभ होती है।

सन्तान सुख—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को संतान सुख अच्छा होता है। जिनका जन्म रविवार को १७ घटी ४९ पल इष्टकाल पर होता है उन्हे ७ पुत्र और २ कन्याये, इसी दिन १९ घटी २० पल इष्टकाल पर होता है उन्हें सन्तानाभाव, २१ घटी ४१ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें ४ कन्याये और २

पुत्र, २९ घटी ३१ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें ४ पुत्र और ७ कन्यायें, २४ घटी ३० पल इष्टकाल पर होता है उन्हें ३ पुत्र और २ कन्यायें, ३२ घटी ५४ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें १ पुत्र और १ कन्या, ३७ घटी ५३ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें ४ पुत्र ३ कन्यायें, ३९ घटी १४ पल पर होता है उन्हे ५ पुत्र और ४ कन्यायें, ४४ घटी ५८ पल पर होता है उन्हे संतानाभाव, ५१ घटी ३७ पल पर होता है उन्हे ८ पुत्र ५ कन्याये एवं ५५ घटी इष्टकाल से अधिक इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है उन्हें साधारणतः ५ सन्तानें होती हैं।

सोमवार को १९ घटी १९ पल इष्टकाल पर जन्म लेने वाले व्यक्तियों को संतानाभाव और इस से कम या अधिक इष्टकाल पर जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को संतान सुख होता है। प्रायः अधिक से अधिक ११ सन्तान और कम से कम ४ सन्तानें होती हैं। मंगलवार को २३ घटी ४८ पल इष्टकाल पर जन्म लेने-वाले व्यक्तियों को सन्तान-सुख का अभाव, और इस से कम या अधिक इष्टकाल पर जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को अच्छा सन्तान-सुख होता है। बुधवार को ११ घटी १४ पल इष्टकाल पर जन्म-लेनेवाले व्यक्तियों को सन्तानाभाव और इससे अधिक इष्टकाल में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को पूर्ण सन्तान-सुख होता है। गुरुवार और शुक्रवार को ४१ घटी ५२ पल इष्टकाल पर जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को सन्तान सुख का अभाव या अल्प सन्तान सुख, इससे अधिक व कम इष्टकाल पर जन्म लेनवाले व्यक्तियों को

पूर्ण सन्तान-सुख होता है। शनिवार को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को सामान्य संतान-सुख होता है। श्रावण मास की १, २, ३, ४, ६, ८, १०, ११ तिथियों में जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्तियों को संतान सुख साधारण होता है। अवशेष तिथियों में जन्मे व्यक्तियों को अच्छा संतान सुख होता है।

आर्थिक स्थिति—इस मास में जन्मे व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति मध्यम दर्जे की होती है। इनका प्रधान व्यवसाय व्यापार होता है। नौकरी में कम आमदनी होती है। १९, २२, २६, ३०, ३५, ३८, ४०, ४२, ४८, ५२, ५४, ५७, ५९, ६२, ६३, ६७ वें वर्षों में आमदनी ज्यादा और १८, २०, २१, ४०, ५३, ५५, ५६ वें वर्ष धन नाश करनेवाले होते हैं।

श्रावण मास में उत्पन्न हुई नारियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न हुई नारियाँ योग्य माता और गृहिणी होती है। इनमें मातृत्व-भावना अधिक प्रबल रहती है, इन्हें बाल-बच्चे अधिक प्रिय होते हैं, कारण इस मास की नारियाँ अपना सारा समय संतान के सुख चिंतन में व्यतीत करती है। घर और परिवार की प्रत्येक वस्तु से इन्हें अधिक प्रेम होता है तथा यथासाध्य प्रत्येक कुटुम्ब के सदस्य की सेवा के लिये ये नारियाँ तैयार रहती हैं। इनका स्वभाव साधारणतः मिलनसार और विशेषतः झक्की होता है। मोह और माया इन नारियों में विशेषरूप से पाई जाती है। घरेलू प्रबंध भी

इस मासवाली नारियाँ अच्छा करती हैं। नर्स और डाक्टरी करने में ये निपुण होती है। इस मास की कुछ नारियाँ सुन्दर और सुयोग्य लेखिकाएँ होती है। शिक्षिका का कार्य्य भी बड़ी निपुणता से करती है। इनमें कामुकता और भावुकता दोनों ही अधिक रूप से विद्यमान रहती हैं। कभी कभी इन्हें उपयुक्त कारणों से कष्टों का भी सामना करना पड़ता है।

ये नारियाँ प्रायः संचयशीला होती है और पुरानी वस्तुओं के संग्रह से इन्हें अधिक आनन्द आता है। इनका घरेलू जीवन प्रायः सुख-मय बीतता है। पति इन्हें सुन्दर और शिक्षित मिलते हैं। शुक्ल-पक्ष में उत्पन्न हुई नारियाँ प्रायः शिक्षिता होती हैं। संगीत और चित्र-कला में ये निपुणता प्राप्त कर सकती है। ये प्रायः धनी होती है और आमोद-प्रमोद इन्हें अधिक पसन्द होते हैं।

गुरुवार और मंगलवार को जिन नारियों का जन्म होता है वे पुरुषों के समान कठोर कार्य्य करने में समर्थ होती है। इस मास में उत्पन्न होनेवाली सभी नारियों को संतान सुख होता है, लेकिन, जिनका इस महीने के किसी भी दिन २१ घटी ५९ पल इष्टकाल पर जन्म होता है वे प्रायः निःसंतान होती है। हाँ, इनमें एक विशेषता यह होती है कि ये अपनी वचन चातुरी से बड़े-बड़े बुद्धिमान व्यक्तियों को भी मोहित कर लेती है। अनुशासन करने की क्षमता इनमें अधिक होती है। मालकिन और गृहस्वामिनी के पद पर आसीन होकर ये अच्छा

कार्य्य कर सकती है। कृष्ण-पक्ष की नारियों का चरित्र रहस्य-मय होता है तथा कोई दुराचारिणी भी होती है। लेकिन, शुक्ल-पक्ष में जन्म लेनेवाली सभी नारियां सदाचारिणी और मधुर-भाषिणी होती हैं।

इस मास मे जिन नारियों का जन्म शुक्र, बुध और सोमवार को १८ घटी ४२ पल इष्टकाल से लेकर २९ घटी १६ पल इष्टकाल के भीतर होता है उन्हें प्रायः वैधव्य दुःख उठाना पड़ता है। प्रायः ये सुन्दर होती हैं, स्त्रियोचित गुण इनमे पर्याप्त मात्रा मे पाये जाते है। इनके लिये १, ३, ५, ६, ७. ८, १०, १२, १३, १४, १५, १८, २२, २४, २५, २६, ३०, ३२, ३४. ३८. ४२, ४८, ४६, ४३, ५५, ६२, ६३, ६४, ६६ और ६७ वे वर्ष घातक होते हैं।

विवाह—इनका अगहन, माघ, वैशाख और आषाढ़ मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों के साथ होने से जीवन अधिक सुख-मय होता है। कार मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों के साथ शादी होने से बराबर कलह रहती है तथा जीवन का वास्तविक आनन्द नहीं आता है। २२ वे और २५ वे वर्ष की आयु में इन्हें सुख और शान्ति अधिक मिलती है। जिनका जन्म कृष्ण-पक्ष में २, ३, ५, को होता है, वे नारियां माता-पिता का सुख कम प्राप्त करती है।

—:o:—

भाद्र-पद मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में जन्मे हुए व्यक्ति विशाल-हृदय एवं उदार विचार वाले होते है। ये किसी चीज को छोटी मात्रा में लेना पसन्द नहीं करते; बृहद्रूप में ही लेना चाहते हैं। अनेक कार्य्यों के जन्म दाता भी इस मास के जन्मे व्यक्ति होते हैं। संपादन शक्ति इनमें अधिक होती है, बड़े-बड़े व्यवसायों के जन्म दाता भी ये लोग होते हैं; इनकी इच्छा-शक्ति प्रबल होती है, विचार इतने दृढ़ होते है कि एक बार किसी कार्य्य के संबन्ध में निश्चय कर लेने पर फिर वे उसे बदलना नहीं चाहते, अनेक विघ्न, बाधाओं के आने पर भी अपने लक्ष्य तक ये पहुंच ही जाते है। इनमें आकर्षण इतना अधिक होता है कि दूसरे व्यक्ति इनकी ओर बिना किसी प्रलोभन के आकृष्ट हो जाते है और इनके प्रभाव में आकर अनुयायी बन जाते है।

स्वभावतः ये बड़े विश्वसनीय होते हैं, कभी किसीको धोखा नहीं देते। इनका लक्ष्य बहुत ऊँचा रहता है और अनेक कष्ट सह कर भी अपने लक्ष्य स्थान को प्राप्त करना ये अपना प्रधान कर्त्तव्य समझते हैं। प्रायः स्वभाव से घमंडी और लालची होते हें। उदार होते हुए भी स्वार्थ की पूर्त्ति में कोई त्रुटि नहीं आने देते। इस मास में जन्मे व्यक्ति प्रायः देश-भक्त और राज-भक्त होते हैं, इनका हृदय अत्यन्त कोमल होता है कुसमय में अन्य व्यक्तियों के ये काम आते हैं; जहाँ तक संभव

होता है ये अन्य व्यक्तियों की सहायता करते हैं। स्वभाव से कृपण होते हुए भी अवसर आने पर सहस्रों खर्च कर सकते हैं। ये अवसर वादी होते हैं; जैसा अवसर आता है वैसे ही बन जाते है। अपनी मान-मर्य्यादा की रक्षा के लिये ये सब कुछ करने को तैयार रहते हैं। नीच-से-नीच और ऊँच-से-ऊँच सभी प्रकार के काम ये कर सकते हैं।

व्यवसाय की दृष्टि से इस मास वाले व्यक्ति प्रायः ऊँचे व्यापार करने वाले होते है। चोर, डाकू, अध्यापक, किसान, डाक्टर, जहाज, संचालक, वैज्ञानिक और लाइब्रेरियन होते है। यद्यपि शिक्षक के समस्त-गुण नैतिकता आदि इनमें नही होते, फिर भी इस क्षेत्र में कुछ कार्य्य कर सकते है। पाश्चात्य ज्योतिषियों का मत है कि भाद्रपद मास में जन्मे व्यक्ति व्यापार में अधिक उन्नति कर सकते है। लक्ष्मी इनकी दासी होकर रहती है और अर्थिक संकट का सामना इन्हे नहीं करना पड़ता, लेकिन कुछ ऐसे भी दुर्भाग्यशाली व्यक्ति होते है जो सदा अन्न-वस्त्र के लिये तरसते रहते है। ऐसे व्यक्तियों का जन्म २१ घटी ३९ पल इष्टकाल के आस-पास होता है तथा शनि और मंगल गोचर से अष्टम में रहते हैं। इसीलिये इन लोगों को प्रायः सर्वदा कष्ट उठाना पड़ता है। इस मास में जन्मे व्यक्तियों की पूर्ण सफलता किसी वस्तु के स्वामी होने पर ही निर्भर करती है, जब ये किसी काम के मैनेजर या संचालक बन जाते हैं तो उस काम की चरम-उन्नति करके ही सुख की सांस

लेते हैं। गायन और वाद्य से भी इन्हें प्रेम होता है, मनोरंजन की सामग्री सदा ढूँढ़ते रहते हे।

चरित्र इनका दृढ नही होता है, किसी को सच्चरित्र पाइयेगा तो किसी को दुश्चरित्र। पर इतना सुनिश्चित है कि इनका जीवन प्रायः वासनात्मक होता है, वासना की पूर्त्ति के लिये ये हर प्रकार के काम करने को प्रस्तुत हो जाते है। ये अपने उद्योग और अध्यवसाय से प्रधान सेनापति, और शिक्षा-मंत्री तक हो जाते हैं। अर्थमंत्री के कार्य्य में इन्हे पूर्ण सफलता मिलती है, अर्थ-शास्त्र के ज्ञाता भी ये होते है। अन्य कार्य्यों की अपेक्षा ये इस महत्वपूर्ण कार्य्य को बड़ी योग्यता के साथ सम्पन्न करते है। इनके स्वभाव में एक विशेषता यह होती है कि ये विचारों को बड़ा महत्त्व देते हे। प्रत्येक लौकिक-कार्य्य को सोच समझ कर करते है और जब तक साधक, बाधक कारणों का समुचित विचार नहीं कर लेते, तब तक आगे नहीं बढ़ते। कभी कभी इनके स्वभाव में भक्कीपना भी पाया जाता है और ये अपनी शनक मे आकर असाध्य कार्य्यों को भी आरम्भ कर देते है।

भाद्र-पद मास के प्रथम सप्ताह मे जिन व्यक्तियों का जन्म होता है वे प्रायः परिश्रमी, विचारवान और विवेक-शील होते है इस सप्ताह के सभी व्यक्ति शिक्षित और कर्त्तव्यपरायण बताये जाते हैं। लेकिन जिनका जन्म उत्तरा-भाद्र-पद नक्षत्र के तृतीय चरण में तृतीया तिथि को होता है वे अत्यन्त भाग्यशाली होते है, उनके आश्रित अनेक व्यक्ति काम करते रहते हैं तथा ये बड़े

बड़े व्यापारों में खूब सफलता प्राप्त करते हैं। देश, समाज और जाति की उन्नति के लिये बहुत कार्य्य करते हैं, इनका जीवन अच्छे कार्य्यों में व्यतीत होता है। इसी तिथि को ४१ घटी ५७ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है वे तपस्वी और संसार के लिये मान्य होते हैं तथा इसी तिथि को जिनका १४ घटी २७ पल इष्टकाल पर होता है वे फक्कड़, मौलामस्त और और अनुत्तरदायी होते हैं। ज्यादातर इस समय के जन्मे व्यक्ति भिक्षुक, दरिद्री और मंगन होते हैं। २१ घटी ३६ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है वे अपने परिश्रम से धनार्जन कर सुख से जीवन व्यतीत करते हैं, इनकी आधी अवस्था दुःख-मय व्यतीत होती है लेकिन शेष आधी में ये अमन-चैन के दिन बिताते हैं।

द्वितीय सप्ताह में जन्म लेनेवाले व्यक्ति प्रायः विचारक होते हैं। अनुकूल साधनों के मिलने पर इनका अच्छा विकास होता है। कृष्ण-पक्ष की ११ और १३ तिथियों को आश्लेषा और मघा नक्षत्र में ३६ घटी ४१ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है वे राज्यमान्य या पुलिस अफसर होते हैं। यदि त्याग की ओर इनका जीवन झुका तो ये सच्चे त्यागी होते हैं। इस समय के जन्मे व्यक्ति कृषि विज्ञान के सुन्दर ज्ञाता और सफल प्रचारक होते हैं। जिनका जन्म मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में ११ घटी १३ पल इष्टकाल पर होता है वे सफल शिक्षक और शिक्षा-क्षेत्र के प्रचारक होते हैं।

साधारणतया इस मास में जन्म ग्रहण करने वाले सुधार का कार्य्य भी करते हैं, क्रान्ति की लहर एक किनारे से दूसरे तक पहुंचा देना भी इनका मुख्य कार्य्य होता है। इनमें कार्य्य करने की अपूर्व क्षमता होती है, काम करना ही इनका व्यसन हो जाता है। शान्ति और विवेक के साथ काम करने से इन्हें अच्छी सफलता मिलती है।

इस मास के तीसरे सप्ताह में जिन व्यक्तियों का जन्म होता है वे साहसी, शूरवीर और परिश्रमी होते हैं। प्रायः ये शारीरिक श्रम द्वारा ही जीविका अर्जन करते हैं, इन्हें मानसिक क्षेत्र मे कम सफलता मिलती है। इस सप्ताह के व्यक्तियों मे से ५० प्रतिशत शिक्षित और शेष अशिक्षित होते हैं। पर इतनी विशेषता इस मास के व्यक्तियों में होती है कि ये लौकिक कार्य्यों मे अधिक निपुण होने से अपने कार्य्य शिक्षितों से भी उत्तमरूप से करते है। ईमानदारी और शालीनता इस सप्ताह के व्यक्तियों में विशेषरूप से पाई जाती है।

जिन का जन्म शुक्ल-पक्ष की २ और ५ तिथियों को उत्तरा-फाल्गुनी और अनुराधा नक्षत्र मे होता है, वे भाग्यशाली और राज्याधिकारी होते है। इन दिनों मे १८ घटी ४९ पल इष्टकाल पर जन्म ग्रहण करनेवाले व्यक्ति सहकारी कारणों के मिलने पर अन्तिम जीवन मे विरक्त हो जाते हैं। ये अत्यन्त धर्म-प्रेमी, उदार-चरित्र और सहनशील होते है। सेवा-वृत्ति इनमें मुख्य रूप से पायी जाती है। इस मास के चतुर्थ सप्ताह में

जन्म लेनेवाले यशस्वी और महापुरुष होते हैं। इनकी कषाय अत्यन्त मंद और ये संसार से उदासीन होते हैं।

शनिवार और मंगलवार को इस सप्ताह में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों का स्वभाव उद्दण्ड और झक्की होता है, वैसे तो सहानुभूति की मात्रा इनमें भी अत्यधिक होती है, लेकिन कभी कभी अपने झक्कीपने में आकर ये अनुचित कार्य्य भी कर डालते हैं। ४३ वर्ष की आयु में इन लोगों को संकटों का सामना करना पड़ता है। इनका मस्तिष्क बहुत बड़ा होता है और ये अपने पेशे में पूर्ण सफल होते है।

प्रायः इस मास वाले व्यक्तियों का स्वभाव विभिन्न प्रकार का होता है, सहानुभूति, उदारता, अभिमान, शालीनता, प्रेम और दया आदि गुण न्यूनाधिक रूप से सभी में पाये जाते हैं।

विवाह और मित्रता—भाद्रपद मास में जन्मे व्यक्तियों का विवाह ८, ९, १०, १२, १४, १६, १७, १८, २२, २३, २५, २७, २९, ३२ और ४२ वर्ष की उम्र में होता है। इस मास की १, २, ३, ५, ६, ८, ९, १०, ११, १३, १४ तिथियों में जन्म लेनेवाले व्यक्ति प्रायः दो तीन विवाह करते हैं। इनका ग्रहयोग दो तीन स्त्रियों के साथ समागम करने का होता है। प्रायः ये व्यक्ति अपने प्रेम से आकृष्ट कर शादियां करते हैं।

किसी किसी का मत है कि जिनका जन्म शुक्ल-पक्ष की २, ५, ८, ११, १२, १३ और १५ को होता है उनके दो विवाह होते

हैं तथा इनका दाम्पत्य जीवन सुख-मय बीतता है। २४ वर्ष की आयु में इन व्यक्तियों के दाम्पत्य जीवन में कुछ मलिनता आती है पर वह जल्दी दूर हो जाती है। जिन व्यक्तियों का जन्म रविवार को पुष्य नक्षत्र में होता है उनसे प्रेम करने वाली अनेक नारियां होती हैं तथा ऐसे व्यक्ति अपने सदाचार से सबके ऊपर विजय प्राप्त करते हैं। भाद्र-पद शुक्ला १३ को जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति अधिक भावुक होते हैं, ये व्यक्ति अपनी भावुकता के कारण दुराचारिणी नारियों के जाल में फंस जाते हैं, प्रारंभिक जीवन इनका गन्दा होता है, लेकिन प्रौढ़ अवस्था में पहुँचने पर ये अपनी कोरी भावुकता को छोड़ कर वास्तविक जगत में प्रविष्ट हो जाते है।

इनका स्वभाव प्रेमी होता है। मित्रता करने के लिये सदा इच्छुक रहते हैं। इनके मित्रों की संख्या अधिक न होने पर सच्चे मित्र इन्हें मिल ही जाते हैं। इनसे जो एक बार मित्रता कर लेता है, फिर छोड़ने का नाम नहीं लेता। जिनका जन्म भाद्रपद कृष्णा २, ३, ४, ६, ८, १०, ११ और १४ को होता है वे अपनी व्यवहार पटुता के कारण जहां रहते है, वहीं अपने मित्रों का एक खासा वातावरण तैयार किये रहते हैं।

जिनका जन्म कृष्ण-पक्ष की १३ और ३० को होता है वे व्यक्ति मित्रों से रहित होते हैं, सच्चे मित्र उन्हें नहीं मिलते। शत्रु संख्या भी ज्यादा नहीं होती। हॉ कुछ लोग इनकी उन्नति देख कर डरते रहते है और बिना प्रयोजन ही इनसे ईर्ष्या करने

लगते हैं। इनके मिलने-जुलने वाले ज्यादा रहते हैं, भाई-बन्धु भी हृदय में इनसे द्वेष रखते हैं और अवसर मिलने पर इनका अनिष्ट करने को तैयार रहते हैं। साधारण जनता में इनकी प्रतिष्ठा अच्छी रहती है, जिससे सब लोग प्रायः प्रेम का व्यवहार करते हैं।

जिन व्यक्तियों का जन्म इस मास के अन्त में होता है वे अपने मित्रों से शंकित रहते है तथा मित्रों के द्वारा ही व्यसनों में फंसते हैं, इनके ऐसे मित्र बहुत कम होते है जो वक्त पर काम आ सकें।

अच्छा और बुरा समय—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों की १६, १८, १९, २१, २३, २४, २५, २७, २८, ३०, ३१, ३२, ३४, ३८, ४५, ४९, ५३, ६७ और ६९ वे वर्षो में विशेष उन्नति होती है और इन्हीं वर्षों में आर्थिक सुख प्राप्त होता है। जिन व्यक्तियों की सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ और मीन राशियां होती हैं उन्हे २७, २८, ३०, ३१ वे वर्ष में कुछ संकट का सामना करना पड़ता है, आर्थिक कष्ट भी प्रायः इन वर्षों में होता है और मानसिक चिन्ताएँ रहती हैं।

घातक वर्ष—भाद्रपद मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को जन्म से १, २, ३, ४, ८, ९, ११, १४, १५, १६, २४ २६, २८, ३२, ४२, ५२, ५५, ५६, ५८, ५९, ६२, ६३, ६५ और ६७ वें वर्ष में बीमारियां उत्पन्न होती है। हृदय रोग और गले के रोग

ज्यादातर होते हैं; रक्तचाप का प्रकोप ४२ वें वर्ष से शुरू होता है किसी किसी को लकवा और अपस्मार की बीमारी भी होती है दमा तथा शीत जन्य और भी अनेक बीमारियां उत्पन्न होती हैं। इस मास वालों को असाध्य रोग प्रायः नहीं होते हैं। २८ वर्ष की आयु से लेकर ३२ वर्ष की आयु के बीच में बीमारी जरूर आती है।

अनुकूल समय—शुक्र और बुध ये वार इनके लिये अच्छे होते है, इन दिनों में कार्य्य करने से विशेष सफलता मिलती है। फाल्गुन, श्रावण, आषाढ़ और माघ ये मास भी इस मास के जन्मे व्यक्तियों के लिये अच्छे होते है, कार्त्तिक का महीना अनिष्टकारक होता है, पौष भी इनके लिये अच्छा नहीं होता, शेष मास साधारण होते है। तिथियों में २, ३, ८, ६, १३, १४, १५ उत्तम होती है, ४, ५, ६ अनिष्टकारक होती है और अवशेष तिथियां मध्यम होती है।

सन्तान सुख—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को संतान सुख मध्यम दर्जे का होता है। रविवार को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को अधिक संतान, सोमवार को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को अल्प संतान या कन्याएँ अधिक, मंगल और शनिवार को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को अधिक संतान या अधिक पुत्र एवं बुध और शुक्र को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को प्रायः संतानाभाव या कन्याएँ अधिक होती हैं।

जिनका जन्म इस मास की २, ३, ४, ५, ६, १०, १३, १४ तिथियों में होता है उन्हें संतान-सुख मध्यम दर्जे का होता है। जिनका जन्म किसी भी तिथि को इस मास में ५१ घटी १४ पल इष्टकाल पर होता है उन्हें प्रायः संतान नहीं होती। इस समय जन्मे व्यक्तियों को दूसरी शादी करने पर संतान हो सकती है। १६ घटी ४८ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है उन्हे भी प्रायः संतान नहीं होती, इन्हे दत्तक पुत्र ही लेना पड़ता है।

भाद्रपद कृष्णा ६ को ४८ घटी ४७ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म हुआ हो उन्हे १२ सन्तानें होती है तथा अधिकांश पुत्र ही होते हैं। भाद्रपद शुक्ला ७ को १८ घटी २१ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म हुआ हो उन्हें भी प्रायः ८ सन्ताने होती है।

भाद्रपद मास में उत्पन्न हुई नारियों का फलादेश

इस मास में जन्म लेनेवाली स्त्रियां बच्चों के लिये अत्यन्त इच्छुक रहती है। ये एक आदर्श गृहिणी होती हैं। प्रबन्ध करने में अत्यन्त पटु होती है। इनकी आज्ञा की अवहेलना होने से इन्हें अधिक कष्ट होता है, सम्मान का इन्हे ज्यादा ध्यान रहता है, जरा भी सम्मान में बाधा आने से इन्हें अपार क्रोध आता है और हिताहित का बिना विचार किये अनर्थ कर डालती हैं।

इनका स्वभाव साधारणतया अच्छा होता है, संयोगी कारणों के मिलने से इनमें सहसा परिवर्त्तन देखा जाता है।

इस मास में जन्म लेनेवाली नारियां अच्छी गायिका, लेखिका और क्रयविक्रय में निपुण होती हैं। इनका स्वास्थ्य प्रायः अच्छा रहता है। ये दुबली-पतली और सुन्दरी होती हैं। जिनका जन्म विषम संख्यक तिथियों में होता है वे प्रायः स्थूल शरीर वाली होती है, इनमें भोग-लिप्सा भी ज्यादा होती है, पर ये प्रायः सच्चरित्र होती है, पति की सेवा शुश्रूषा करने में इन्हे अपरिमित आनन्द आता है, इनके स्वास्थ्य के लिये गर्म चीजे हानिकारक होती है, अतएव इन चीजों से बचना चाहिये। स्निग्ध और शीतल वस्तुएँ इनके लिये विशेष लाभदायक है।

प्रायः इस मासवाली नारियों में क्रोध की मात्रा अधिक पाई जाती है। इनमें एक यह त्रुटि होती है कि ये अधीर अधिक होती है, इनका चित्त स्थिर नही रहता तथा विचारों में एकता नहीं होती और न इनमें आत्म-विश्वास ही पूर्णरूप से रहता है। इन्हे विनोद-मय वातावरण अधिक पसन्द होता है, इसके बिना इनका मन स्थिर नही होता। इन्हें प्रदर, हिस्टीरिया, चेचक, अपस्मार, योनिदाह एवं गठिया-वात आदि बीमारियां हो जाती हैं।

भाद्रपद मास के प्रथम सप्ताह और चतुर्थ सप्ताह में उत्पन्न हुई नारियां अधिक सुखी होती हैं, बनिस्बत तृतीय और द्वितीय सप्ताह में उत्पन्न होनेवाली नारियों के। इस मास की नारियों को २, ४, १०, ११, १७, १६, २०, २२, २४, २८, ३०, ३६, ४२, ४६, ५४, ५५, ५८, ६१, ६४ और ६८ वें वर्ष मृत्यु दायक है।

आश्विन मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में जन्मे व्यक्ति अत्यन्त दयालु, परोपकारी और संवेदनशील होते है। इनकी बुद्धि इतनी प्रखर होती है कि दुसाध्य और असंभव कार्य्यों को भी बात की बात में सुसाध्य और संभव बना लेते हैं। मिल और बड़े बड़े कार्य्यालयों के संस्थापक होते है। प्रत्येक वस्तु की आलोचना निष्पक्ष दृष्टि से करते हैं। यद्यपि इन्हें थोक माल बेचने की अपेक्षा खुदरा माल बेचनें में ज्यादा लाभ और सुविधा प्रतीत होती है, पर ज्यादातर ये बड़े बड़े व्यापार ही करते है। ये हमेशा सिल-सिलेवार और शांति-पूर्वक काम करना पसन्द करते हैं। बेतरीके के अस्त-व्यस्त काम इन्हें पसन्द नहीं होते। कड़ाई इन्हे अधिक अच्छी जंचती है, इसीलिये प्रत्येक कार्य को व्यवस्थित ढंग से करने का प्रयत्न करते हैं। दूसरों को आदेश देना तथा उस आदेश का पालन कराना इनका स्वभाविक गुण होता है।

इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति अच्छे स्कालर, पुरातत्त्ववेत्ता, दार्शनिक, नैयायिक, ज्योतिर्विद और विज्ञान-वेत्ता होते है। समझदार, सावधान, अनुभवशील और कोमल प्रकृति के व्यक्ति इस मास के जन्मे होते हैं। समाचार-पत्रों का सम्पादन, भाषण शक्ति एवं तरह तरह के पम्फलेट आदि लिख कर जनता को अपने अनुकूल करने की कला में अत्यन्त निपुण होते हैं। इनका स्वभाव उन्नत अच्छा और परोपकारी होता है, दूसरे के दुःख से ये जल्द द्रवित हो जाते हैं।

यद्यपि इनका स्वभाव डरपोक होता है लेकिन ये दूसरे लोगों को निर्भय बनाने का प्रयत्न करते हैं। पुस्तकें संचित करने की इनकी बड़ी भारी लालसा रहती है। अपने निकट सदा एक पुस्तकालय रखना चाहते हैं। इनका जीवन गतिशील होता है। अवसर आनेपर ये बड़े से बड़ा कार्य अपने ही हाथों कर डालते है, ये परीक्षा प्रधानी होते हैं और अपनी पैनी दृष्टि से दूसरे व्यक्तियों का निरीक्षण बहुत जल्द कर लेते हैं। इनका प्रारंभी जीवन दरिद्री और दुःखपूर्ण होता है तथा आगे जाकर इनका अच्छा विकास होता है। आवेगशील होने के कारण ये लोग जल्दी ही किसी बात का निर्णय कर लेते हैं। परिश्रम साध्य कार्यों को कम पसंद करते है और अर्थोपार्जन बहुत आसानी से कर लेते है।

इस मास में जन्मे व्यक्तियों का मस्तिष्क बहुत तेज होता है और ये इतने प्रभावशाली होते है कि शायद ही संसार में कोई ऐसा व्यक्ति मिलेगा, जो इनके प्रभाव से प्रभावित न हो। इनके वचन अधिक प्रामाणिक माने जाते है। सत्य-अहिंसा आदि नैतिकताओं को ये अपने जीवन में पूर्ण-रूप से उतारते हैं। यद्यपि वासना का प्रभाव इन्हे भी अछूता नहीं छोड़ता है, पर तो भी इनकी सारी बातें विलक्षण होती हैं। इनका चेहरा सुलक्षणमय होता है, मस्तिष्क बड़ा और ज्ञान-विज्ञान का भण्डार होता है। कानून, धर्मशास्त्र और राजनीति के ये पूर्ण ज्ञाता होते हैं। इनके अनुयायियों की संख्या अपरिमित होती

है, ये किसी मार्ग के प्रवर्तक भी हो सकते हैं, देश, समाज और राष्ट्रों के महास्तंभ भी हो सकते है।

जिन व्यक्तियों का जन्म आश्विन कृष्णा २, ४, ६ और ९ को होता है वे बड़े भारी प्रभावशील होते हैं, ये अन्य लोगों के भाग्य-विधाता और विद्या-प्रेमी होते है, इनके समक्ष बड़ी-से-बड़ी शक्ति भी झुक जाती है। मंगलवार, शनिवार, और गुरुवार को जन्म लेनेवाले महापुरुष होते है लोग इन्हे देव और आराध्य के समान पूजते हैं, इनके संकेत पर चलने के लिये अनेकों लोग तैयार रहते है। ये साहित्य के भी मर्मज्ञ ज्ञाता होते है, इनके द्वारा नवीन साहित्य का भी सृजन होता है। कभी-कभी इन लोगों का स्वभाव भी झक्की होता देखा गया है, इसलिये ये अपनी धुन में आकर अनुचित कार्य भी कर डालते है, लेकिन इनके सम्बन्ध में इतना सुनिश्चित है कि ये धुन के पक्के होते है। संसार में किसीकी परवाह नहीं करते है जो उचित जँचता है तथा जो न्याय संगत होता है, उसीका प्रचार करते है।

इनके जीवन में एक विशेष बात यह होती है कि ये विचारक होने के साथ-साथ कभी-कभी भावुकता में बह जाते हैं और कुछ अनुचित कार्य भी कर डालते है। आचार्य नारचन्द्र का मत है कि इस मास में जन्मे व्यक्ति 'वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि' होते है। इनमे असीमित विश्वास होता है। ये प्रायः सभी का विश्वास करते है। इस मास के अन्त में उत्पन्न होनेवाले और भी अधिक पराक्रमी होते हैं।

इनका जीवन एक बृहद् दैवी जुलूस होता है, यह जीवन के प्रथम क्षण से लेकर मृत्युतक लगातार चलता ही जाता है। ये भगवान् के बड़े भारी भक्त होते है, पक्के सुधारक भी इन्हें कहा जा सकता है। इनका जीवन वस्तुतः सत्य की प्रयोगशाला होता ह और इनके सारे प्रयत्न मोक्ष की प्राप्ति के लिये होते हैं। यदि अर्थोपार्जन के क्षेत्र में ये प्रविष्ट हो जाते हैं तो उस क्षेत्र में भी इनका मुकाबला कोई नही कर सकता। इनकी दृढता और कार्यलग्नता से व्यापारिक क्षेत्र मे इन्हें अपूर्व सफलता मिलती है। बाजार में इनका बोलबाला होता है। इनकी साख सर्वत्र मानी जाती है।

यदि ज्ञान के क्षेत्र मे इनका झुकाव हुआ तो फिर उस क्षेत्र मे भी इन्हें अपूर्व सफलता मिलती है, आजीवन ज्ञान की साधना मे ये लोग रहते है और संसार के ख्याति प्राप्त ज्ञानियों मे इनका स्थान होता है। विवेक और विचार दोनों ही इनके प्रौढ़ होते है और ये सर्वदा अपने कार्य की सिद्धि मे सब कुछ छोड़ कर लग जाते है। इनका उत्तरार्द्ध जीवन बड़ा महत्वपूर्ण होता है और उसमें सुमेरु की तरह अडिग रहकर अपने कार्यों को संपन्न करते हैं। स्वभाव से इस मासवाले भीरु होते हैं, पर परिस्थितियाँ इन्हें इतना मजबूत और निडर बना देती हैं जिससे इनकी सारी भीरुता काफूर हो जाती है।

आश्विन मास में उत्पन्न होनेवाले व्यक्तियों के स्वभाव में एक विचित्रता यह भी होती है कि ये यदि अच्छे कार्यों में लगे

रहे तो अन्त तक अच्छे ही कार्य करते रहेंगे और कदाचित् बुरे कार्यों की ओर प्रवृत्ति हो गयी तो अन्त तक उन्हीं में लगे रहेंगे। इनके स्वभाव पर दूसरों के उपदेशों का प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि दूसरे ही इनके प्रभाव में आ जाते हैं।

अधिक श्रम करने के कारण इन लोगों को स्नायु सम्बन्धी रोग भी हो जाते हैं। हाथों, आँखों और चेहरे पर गुठलियाँ पड़ जाती हैं और अन्त में रक्तप्रवाह तथा पक्षाघात होने का भी भय रहता है। इन्हें पूर्ण विश्राम लेना तथा पर्याप्त सोना अधिक लाभप्रद होता है।

इस मास के उत्पन्न हुए कृषक खेती के कार्यों में खूब निपुण होते हैं, ये इस दिशा में अधिक उन्नति करते है तथा इनका भी इतना प्रभावशाली व्यक्तित्व होता है कि अन्य लोग इन्हें अधिक मानते हैं तथा जहाँ ये रहते हैं वहाँ की पंचायत या आपसी झगड़ों का निपटारा करते हैं। इनके पाँव में एक प्रकार का निशान होता है जिससे सदा इन्हें सवारी की सुविधा रहती है। कभी पैदल चलने का इन्हें मौका नहीं आता और ये सदा अमनचैन से अपना जीवन व्यतीत करते हैं। प्रायः इस मास में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों में ६० प्रतिशत शिक्षित, २० प्रतिशत मजदूर और २० प्रतिशत कृषक होते हैं।

व्यापारी इस महीने में जन्म लेनेवाले सिर्फ १५ प्रतिशत होते हैं। २ प्रतिशत वकील, ४ प्रतिशत प्रोफेसर, १८ प्रतिशत साधारण शिक्षक, ४ प्रतिशत महापुरुष, १० प्रतिशत लड़ाका,

डाकू, चोर आदि, १५ प्रतिशत सेनापति या पुलिस अफसर, १० प्रतिशत जहाज चालक, मोटर ड्राइवर या अन्य सवारियों के चालक, और १५ प्रतिशत इधर उधर घूमनेवाले अवारा होते हैं। इस मास के जन्मे व्यक्तियों में एक विशेषता यह भी होती है कि वे एक ही कार्य मे प्रवीण हो सकते है। जिनका जीवन स्वार्थ की ओर झुक जाता है वे पक्के स्वार्थी होते है। नारचन्द्र ने एक स्थान मे बताया है कि आश्विन मास में ३० घटी १० पल इष्टकाल से लेकर ३६ घटी ४८ पल इष्टकाल के भीतर जन्म ग्रहण करनेवाले व्यक्ति बड़े ही विलक्षण होते है. इनके हृदय का पता लगाना बडा ही कठिन होता है। इनके सारे कार्य राजनीति की नीव के आधार पर चलते है। कार्य का प्रारंभ तो ये बड़े उत्साह से करते है लेकिन अन्त होते समय इनका सारा उत्साह समाप्त हो जाता है। इनका जीवन निश्चित दिशा की ओर जाता है और सहयोगियो की मदद से ये अपने अभीष्ट कार्यों में अधिक सफलता प्राप्त करते है, इस मास के कुछ व्यक्ति महात्मा होते है।

विवाह और मित्रता—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का विवाह बहुत जल्द छोटी उम्र में ही हो जाता है। इनमे वासना शुरू में अधिक होती है तथा छोटी आयु में कुसंगति के प्रभाव से ये बिगड़ जाते हैं। १०, ११, १४, १७, १८, १९, २०, २१, २३, २४, २८ और ४५ वर्ष की आयु में विवाह के प्रबल योग आते हैं; जिनका जन्म आश्विन कृष्ण २, ३, ४, ६, ७, ९, १०,

११ को होता है उन्हें वैवाहिक सुख बहुत कम होता है तथा ये आदर्श-मार्ग के प्रवर्त्तक होते है। लेकिन कृष्णपक्ष की अवशेष तिथियों में जन्म लेनेवाले व्यक्ति के दो या तीन विवाह भी हो जाते हैं।

जिनके हाथ में तिल का चिन्ह होता है उनके प्रायः दो विवाह होते हैं, वे एक उपपत्नी भी रखते हैं। इन्हें प्रेम के जाल में फँसकर कष्ट भी उठाने पड़ते हैं और कभी-कभी प्रेम के कारण इन्हें आत्म-हत्या भी करनी पड़ती है। प्रेम के क्षेत्र में इन्हें सफलता कम मिलती है, लेकिन इनके संबंध में इतना सुनिश्चित है कि जब इनका प्रेम-मार्ग वासना से हट कर विशुद्ध क्षेत्र में आ जाता है, उस समय ये पक्के भगवद्भक्त हो जाते हैं। करुणा, दया, और सहानुभूति ये तीनों गुण इनमें विशेषरूप से घर कर लेते हैं तथा ये सदा प्रिय होकर रहते हैं। २८ वर्ष से लेकर ३४ वर्ष की आयु के बीच मे इनके जीवन मे अनेक तूफान आते हैं और ये अपनी प्रेमिकाओं को ढूंढते हैं। विचारक होने के कारण ये दुश्चरित्र स्त्रियों के फन्दे में नहीं पड़ते पर कभी-कभी अपनी स्वयं की कमजोरी के कारण प्रेम के गड्ढे में गिर जाते हैं। एकान्त स्थान की साधना इस मासवाले व्यक्तियों के लिये बड़ी हितकर हो सकती है।

इनके मित्रों की संख्या अधिक होती है। अलौकिक प्रभाव के कारण अधिकांश जनता इनकी मित्र हो जाती है। चतुराई और व्यवहार कुशलता इनमें इतनी अधिक होती है कि जिससे

ये सदा अपने चारों ओर शान्ति का वातावरण बनाये रखते हैं। इस मासवाले व्यक्तियों के शत्रु प्रायः नहीं होते और जो होते भी हैं, वे भी अपनी शत्रुता छोड़ कर मित्र बन जाते हैं। जिनका जन्म मंगलवार और गुरुवार को होता है वे सफल सुधारक और अपने वचनों के अमृतमयी प्रवाह के कारण शिक्षित, अशिक्षित सभी प्रकार की जनता के मित्र बन जाते हैं, शनिवार और सोमवार को जन्म लेनेवालों के शत्रु भी अनेक रहते हैं, प्रायः इनके शत्रु अवसरवादी होते हैं और अवसर आने पर कुछ अनिष्ट कर देते हैं। ऐसे व्यक्तियों को ३२, ३४, ३५, ३९ और ४१ वे वर्ष में शत्रुओं से अधिक अनिष्ट होने की संभावना होती है।

अच्छा और बुरा समय—इस मास में जन्मे व्यक्तियों की उन्नति १४ वर्ष की आयु से आरंभ हो जाती है। १७, १८, २०, २१, २३, २४, २५, ३२, ४८, ५२, ७५ और ७६ वे वर्षों मे विशेष उन्नति होती है। २७ वे वर्ष में गुरु का प्रभाव अधिक पड़ने के कारण देश-विदेश में प्रायः सर्वत्र कीर्त्ति कौमुदी फैल जाती है और यह इतना महत्वपूर्ण होता है कि इस मास में जन्मा प्रत्येक व्यक्ति इससे लाभ उठाकर अपनी तरक्की कर सकता है। यदि इस समय का सदुपयोग नहीं किया गया तो फिर जीवन में उन्नति का अवसर मिलना कठिन ही समझना चाहिये। १५, १६, २२, २९, ३१, ४५, ४६, ५४, ५८, ६२, ६५, ६८, ७४ वें वर्ष कुछ कष्टकारक होते है। इनमें व्यक्ति को

आर्थिक और शारीरिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। प्रायः आश्विन मास में जन्मे व्यक्तियों के लिये ३२ वर्ष की आयु से शुभ ग्रहों का योग अच्छा रहता है, जिससे इनकी उन्नति होती चली जाती है।

घातक वर्ष—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को जन्म से १, २, ४, ५ ७, १०, १४, १८, २२, २६, ३७, ४६, ५३, ५४, ५८, ६२, ६६, ६७, ७१, ७४, ७८, ८२, ९०, ९४ और ९७ वे वर्ष मे रोग उत्पन्न होते हैं। इनकी दीर्घायु होती है तथा ये ११० वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। असाध्य बीमारियाँ इन्हे कम होती है, रक्तचाप और नसों का कमजोर होना, ये रोग इन्हें प्रायः होते हैं। जिनका जन्म शुक्लपक्ष की १, ३, ४ और ५ को होता है, उन्हे राजयक्ष्मा होने का योग भी रहता है। प्रमेह और धातुक्षय जैसी बीमारियाँ ३५ वे वर्ष में कष्ट देती है। २९ वाँ वर्ष रोगकारक अधिक होता है, अल्पायुवाले वर्ष २३, २८, ३७, ४९, ५३, ६७, ७१, ७४, ८५, ९३, और ९७ बताये गये है। पूर्णायु इस मासवालों की ११० वर्ष ७ मास १३ दिन की होती है। अन्य व्यक्तियों के आक्रमण द्वारा भी इस मासवालों की मृत्यु होती है।

सन्तान सुख—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को सन्तान सुख अच्छा होता है, लेकिन संतान निकम्मी और जी जलाने वाली होती है। संतान संख्या इस महीने में जन्मे व्यक्तियों की ९ से लेकर १६ तक जाती है। जिनका जन्म कृष्णपक्ष को

२, ४, ७ तिथियों में होता है उन्हें प्रायः संतान का अभाव रहता है या संतान के दुश्चरित्र होने से मानसिक संताप रहता है।

जिनका जन्म शुक्ल पक्ष की ७, ८ १०, १२, १४, १५ को होता है, उन्हें ५ कन्यायें और ६ पुत्र तक हो सकते हैं तथा कन्याएँ सुशीला और सद्गुणी होती हैं पर पुत्रों में अधिकतर स्वार्थी और पितृ दुखदायक होते हैं। रविवार, गुरुवार और शुक्रवार को जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्तियों के २ कन्याएँ और ५ पुत्र होते है तथा अन्य स्त्री से प्रेम हो जाने पर २ कन्याएँ और ३ पुत्र उससे भी होते है। साधारणतः इस मास वाले व्यक्तियो को अच्छा संतान-सुख होता है।

अनुकूल समय—यों तो इस मास में जन्म-लेने-वाले व्यक्तियो को सभी महीने अनुकूल होते है, पर वैशाख, ज्येष्ठ और भाद्रपद विशेष लाभदायक होते है। इन मासों में काम करने से जल्दी काम सफल होता है। शुक्रवार और मंगलवार दिनों में विशेष सफलता प्राप्त होती है। तिथियों मे २, ३, ४, ७, १०, ११, १३, और १५ विशेष फलदायक बताई गई है। इन समयों में काम करने से विशेष सफलता प्राप्त होती है।

आश्विन मास में उत्पन्न होनेवाली नारियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न हुई नारियां सफाई को अधिक पसन्द करती हैं, फैशन से इन्हे अधिक प्रेम होता है। कुटुम्ब के

प्रति अपने उत्तरदायित्व को कम निभाती हैं। स्वार्थ की मात्रा इनमें अधिक होती है। अवसर आने पर ये अपने पुत्र की हत्या करने में भी नहीं हिचकिचाती हैं। चरित्र इनका साधारणतया अच्छा नहीं होता। इन्हें मेला, उत्सव, सिनेमा आदि देखने की लालसा अधिक रहती है। गृहस्थी के कार्यों को जानतीं अवश्य हैं लेकिन मन लगाकर करतीं कम हैं। शिक्षा इन्हें अच्छी मिलती है पर ये उसका दुरुपयोग करती हैं, इन्हें वास्तविकता का विवेक कम रहता है और ज्यादातर ऊटपटांग कार्यों को करती रहती हैं। इनका स्वभाव चंचल होता है, यदि शुरू से इन्हें दबाव में रक्खा जाय तो ये अच्छी लेखिका और अध्यापिका बन सकती हैं। अभिमान की मात्रा इनमें अधिक रहती है। अपने जीवन को ये दिखावटी ज्यादा बनाना चाहती हैं, ज्यादातर इस मास में जन्मी नारियों को शिक्षित और धनी पति मिलते हैं।

कुछ नारियों को आजन्म कौमार्य ही बिताना पड़ता है। इनका स्वभाव मिलनसार और स्वार्थी होता है, बोल चाल साधारणतया अच्छी होती है। पतिदेव को ये प्रसन्न करने का प्रयत्न करती है। लेकिन अपने स्वभाव के कारण पूर्णतया प्रसन्न नहीं कर पातीं। इन देवियों में एक विशेषता यह भी होती है कि ये कभी-कभी सत्संग के प्रभाव से सर्वश्रेष्ठ नारियां भी बन जाती हैं। इनके ऊपर उपदेशों का प्रभाव बहुत पड़ता है और आसानी से जिधर चाहें उधर झुकाया जा

सकता है। हां इनमें एक विशेषता यह भी होती है कि ये समय पड़ने पर कष्ट सहन करने में भी अद्वितीय होती हैं।

यों तो इनका स्वभाव स्वार्थी होता है, पर इनके द्वारा कुटुम्ब की विशेष उन्नति होती है। इनकी शादी करने में माता-पिता को कष्ट उठाना पड़ता है तथा अधिक दौड़-धूप करनी पड़ती है। इनके लिये घातकवर्ष २, ८, १४, १६, १७, १८, २२, २४, २५, २८, ३०, ५४ और ६२ होते हैं। साधारणतः इनका दाम्पत्य-जीवन सुखमय होता है। इस मास में जन्मी नारियों को संतान सुख साधारण होता है। ५४ वे वर्ष में पक्षाघात, अनिद्रा और स्वांस का प्रकोप होता है। इनके जीवन में २२ वाँ वर्ष विशेष महत्व का होता है। २५ वें और २७ वे वर्ष में विशेष प्रकार की बीमारी आती है।

—:०:—

कार्तिक मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस महीने में जन्मे व्यक्ति विशेष रूप से सौन्दर्य-प्रेमी होते हैं। ये ईमानदार, बुद्धिमान, कलाकार, न्यायशील और संवेदनशील होते हैं। इनका स्वभाव प्रसन्नता और उदासीनता का मिश्रितरूप होता है। प्रायः ये आनन्द प्रदान करनेवाले तथा मधुरप्रिय होते है, सदा ये आनन्द की खोज में रहते हैं। इनका दिल सर्वदा उछलता हुआ रहता है, ये सदा सजग रहते हैं। मुस्कुराहट, सौन्दर्य परख और प्रेम इनके सहज गुण होते हैं। किसी कार्य की अधिक छानबीन करना इन्हें पसन्द नही होता, प्रायः परिश्रम से भी डरते है। जहाँ ये जाते है, वहीं इनके सहयोगी तैयार हो जाते हैं। दूसरे को अपनाना इनका प्रधान गुण होता है। प्रेम और आनन्द इनके जीवन के प्रधान लक्ष्य होते है।

प्रायः इस मासवाले व्यक्तियो का जीवन अच्छे कार्यो मे ही लगता है। सार्वजनिक जीवन में इन्हे अच्छी ख्याति मिलती है, इनका सम्मान सर्वत्र होता है, लोग इनके चरणों की पूजा करते हैं। इनमें एक खास विशेषता यह होती है कि ये नीतिज्ञता के कारण कुछ अपने ऐसे अनुयायी तैयार कर लेते हैं, जिनसे इन्हें यश और सम्मान मिलते रहते हैं। इनका स्वभाव मिलनसार होते हुए भी कुछ चिड़चिड़ा होता है तथा जरा सी बातको लेकर झुंझलाने लगते हैं। कभी-कभी ये मौजी

स्वभाव में आकर अपने हृदय की सारी बातें कह डालते हैं, पर सधारणतया गम्भीर होते हैं।

ललित कलाओं में इनकी रुचि आरम्भ से होती है। नाटक के पात्र, लेखक, गायक, चित्रकार ये अच्छे हो सकते हैं। साधारणतः स्वस्थ होने पर भी पेट और पाचन शक्ति पर विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इस मास में जन्मे व्यक्ति यात्राप्रेमी होते हैं। इन्हें यात्राएं अधिक करनी पड़ती हैं तथा यात्राओं से इन्हें लाभ ही होता है, हानि नहीं। इनका सहज झुकाव विलासिता की ओर रहता है, पर अपनी विवेक बुद्धि के कारण जहां तक संभव होता है, जीतने की कोशिश करते हैं। विचारक और प्रचारक दोनों ही ये अच्छे होते हैं। प्रयत्न करने पर जज और डाक्टर का पेशा ग्रहण कर सकते हैं, पर इनका स्वाभाविक झुकाव शिक्षा की ओर विशेष रहता है।

इस मासवाले व्यक्तियों में एक खूबी यह भी होती है कि इनमें ८० प्रतिशत शिक्षित होते हैं और शेष २० प्रतिशत अशिक्षित होते हैं। लेकिन विद्वानों की संख्या कम होती है। कुछ व्यक्ति संगीतज्ञ होते हैं और इस पेशे में उन्हें अच्छी सफलता मिलती है। आलस्य की मात्रा इस मासवाले व्यक्तियों में विशेष रूप से पायी जाती है। यदि आलस को छोड़कर ये मिहनत करने लगें तो फिर देश और समाज के लिये बड़े काम के हो जाते हैं। चरित्र इनका प्रारम्भ में मलिन, प्रौढ़ अवस्था में साधारण और वृद्धावस्था में अच्छा रहता है।

धर्म और नैतिकता इनकी दृष्टि में ऊंचे दर्जे की चीज होती हैं। कभी-कभी ये दुनियां के समक्ष नई चीजें रखते हैं। प्रारम्भ में तो लोग इनकी चीजों की मखौल उड़ाते है, लेकिन बाद में इनकी चीजों की बड़ी भारी इज्जत होती है।

कार्तिक मास में जन्मे व्यक्ति स्फूर्तिमान तथा चंचल होते हैं। एक बार जो इनसे परिचित हो जाता है वह कभी इन्हें भूल नही सकता तथा सदा के लिये इनका भक्त हो जाता है। ये स्वयं बड़े दृढ विचार के होते है, इसलिये इन्हें प्रभावित करना बड़ा कठिन कार्य होता है। इनकी प्रवृत्ति मातृप्रेम की ओर अधिक होती है, वनिताप्रेम की ओर नही। आदर्श मार्ग को कायम रखना भी ये चाहते है तथा आदर्श की पूर्ति के लिये नवीन-नवीन उपाय और रीतियों को भी प्रचलित करते हैं। ये अपने जीवन मे अपने हाथ से सुन्दर गृह-निर्माण कराते है।

इनका स्वभाव इतना कोमल होता है कि जरा सी कड़वी बात भी इन्हें तीर की तरह खटकती है। वास्तव मे ये बड़े भारी भावुक होते है। अपनी निन्दा इन्हें बर्दास्त नहीं होती। जो निन्दक होता है, उससे ये बदला लेना चाहते है। जब तक उससे बदला नहीं ले लेते, इन्हें संतोष नही होता। घर्षित किये जाने पर प्रबल विरोध का सामना करने को तैयार रहते हैं और अन्तिम सास तक अपने पक्ष का समर्थन करते है। कभी-कभी कर्त्तव्य से प्रेरित होकर भी इन्हे अपने पक्ष का समर्थन करना पड़ता है।

कार्त्तिक मास में जन्म ग्रहण करने वाले किसान सफल कृषक नही होते, इनसे शारीरिक श्रम अधिक नहीं हो सकता। वैसे तो वे खेती करते हैं, पर उन्हें उसमें न तो आनन्द ही आता है और न वे उसे पसन्द ही करते हैं। तरकारियां ये अच्छी पैदा कर सकते है तथा बागवानी का कार्य भी निपुणता पूर्वक कर सकते है। इनमें विभिन्न प्रकार के फूल तथा वृक्षों की पौध लगाने की अच्छी योग्यता होती है। अपनी प्रखर बुद्धि की बदौलत बगीचे की शोभा को अल्प खर्च और अल्प समय में ही चमका देते है।

जिन व्यक्तियों का जन्म कार्त्तिक कृष्णा २ को २१ घटी ४६ पल इष्टकाल पर होता है, ये बड़े भाग्यशाली होते है और इन्हें नाना प्रकार के सासारिक भोग उपलब्ध रहते है। जिनका जन्म इसी दिन ४९ घटी १४ पल इष्टकाल से लेकर ५४ घटी ३८ पल इष्टकाल के बीच होता है वे प्रायः दुर्भाग्यशाली होते है, यों तो वे व्यक्ति भी कर्मठ होते है तथा चुपचाप अपने कार्य को पूरा करते हैं। इस मास में जन्मे व्यक्ति व्यापारी भी होते हैं। साधारणतया कपड़ा, किराना और घी के व्यापार में इन्हें अच्छा लाभ हो सकता है। कुछ लोग बड़े-बड़े व्यापार भी करते है। कपड़ा और चीनी के मिलों में अधिक लाभ हो सकता है।

जिन व्यक्तियों का भाग्य अच्छा होता है, वे लोग अपने सहयोगियों की मदद से रंग के व्यापार में अच्छा लाभ उठाते

हैं। सोना चांदी के व्यापार में कम आमदनी होती है। रेस, फाटका, जुआ और लौटरी से २७ वर्ष की उम्र में कुछ आमदनी हो सकती है, लेकिन इतना स्मरण रखना होगा कि ३८, ३९, और ४० वे वर्ष की आयु में फाटका या जुआ में धन नष्ट होता है। अशुभ ग्रहों का प्रभाव इस समय बहुत बुरा पड़ता है तथा जुआ या फाटका में धन हानि होती है।

जिनका जन्म कार्त्तिक कृष्णा १२, १३, १४ को होता है वे अच्छे व्यापारी होते है तथा दान, पुण्य और परोपकार के अनेक कार्य करते है। ये प्रायः एक सामान्य पुरुष होते हैं और समाज या देश के भीतर एक नई स्फूर्ति पैदा कर देते हैं। इनके द्वारा जीवन में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य होते हैं, लेकिन कृष्ण पक्ष में जन्मे व्यक्ति अधिक भाग्यशाली होते हैं। भयानक विपत्ति के आने पर भी घबड़ाते नहीं है और विघ्न-बाधाओं को पार करते हुए भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते है। इनका जीवन समाज और देश के लिये बड़ा लाभदायक होता है।

इस मास मे जन्मे व्यक्तियों का भाग्य विद्या के द्वारा जाग्रत होता है। पास-पड़ोस वाले व्यक्ति इस मास वालों से अधिक खुश रहते है और समय पड़ने पर इनकी मदद करते हैं। यों तो इस मास वालों को जीवन में कठिनाइयाँ अधिक से अधिक उठानी पड़ती हैं लेकिन फिर भी प्रसन्न और गतिशील रहते हैं। काम करने की इन में अपूर्व शक्ति होती है और कुछ व्यक्ति महापुरुष भी होते हैं।

विवाह और मित्रता---इस मास में जन्मे व्यक्ति विवाह और मित्रता करने में बड़े होशियार होते हैं। इनके मित्रों की एक मंडली रहती है, पर प्रायः सभी के सभी मित्र स्वार्थी होते हैं। समय पड़ने पर एक भी मित्र काम नहीं आता और आवश्यकता के समय मुँह छिपाकर भाग जाते हैं। अधिकांश धन इस मास वालों का मित्रों के स्वागत में खर्च होता है, जो व्यक्ति मित्रों से सजग रहते हैं वे अवश्य उन्नति करते है। इनका विवाह प्रायः जल्द हो जाता है। जिन व्यक्तियों का जन्म समसंख्यक तिथियों में होता है, उनका विवाह कुछ देर से और जिनका जन्म विषम संख्यक तिथियों में होता है, उनका विवाह जल्द होता है। विवाह के वर्ष ८, १४, १५, १७, १८, १६, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३२, ३४, ४२, ४६, ५२ है।

जिनका जन्म रविवार को १६ घटी ४९ पल इष्टकाल पर होता है, उनके दो विवाह निश्चित रूप से होते है, इसी दिन २७ घटी ४४ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है, उनके प्रायः तीन विवाह होते है। सोमवार को १७ घटी ४१ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है, उन व्यक्तियों का एक ही विवाह होता है, समसंख्यक घटी और विषम संख्यक पलों वाले इष्टकाल में इसी दिन जिन व्यक्तियों का जन्म होता है, उनका प्रायः विवाह नहीं होता है हां, ये व्यक्ति अपना अनुचित सम्बन्ध अवश्य रखते है। मंगलवार और बुधवार को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को वैवाहिक सुख अच्छा होता है

और इन दिनों में जिनका जन्म ४२ घटी ४६ पल इष्टकाल पर होता है वे निश्चित रूप से एक ही विवाह करते हैं। परन्तु ४४ घटी ४२ पल इष्टकाल पर जन्म लेनेवाले व्यक्ति बहु विवाह करते हैं या अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखते हैं, जिनका जन्म शुक्रवार को १४ घटी १६ पल इष्टकाल पर होता है वे प्रायः एक ही विवाह से सन्तुष्ट रहते हैं।

गुरुवार को ३६ घटी १९ पल इष्टकाल पर जन्म लेनेवाले व्यक्ति संयमी होते हैं और विवाह के पैगामों को ठुकारा देते हैं किन्तु, इस दिन जिनका जन्म २९ घटी १४ पल इष्टकाल पर होता है उनको विवाह सम्बन्ध करने के बावजूद भी सुख नहीं होता। शनिवार की रात में जिनका जन्म इस मास में होता है वे प्रायः एक उपपत्नी रखते हैं तथा प्रत्यक्ष रूप से दो विवाह करते है। दिन में १० घटी १९ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है, वे निश्चित रूप से दो पत्नियां रखते हैं, इनका दाम्पत्य-जीवन कलह में व्यतीत होता है। कभी कभी ये व्यक्ति विरक्त भी हो जाते है, २३ घटी २८ पल इष्टकाल पर जिनका जन्म होता है, उनका दाम्पत्य जीवन अच्छा रहता है, पत्नी अत्यन्त प्रेम करती है तथा सदा आज्ञा का अनुसरण करती है।

अच्छा और बुरा समय—इस मास में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का भाग्य अच्छा होता है, अतः समस्त जीवन में कठिनाइयां कम ही आती हैं। इनका साधारणतः भाग्योदय २४ वर्ष की आयु से होता है पूर्ण भाग्योदय ३५ वर्ष की आयु

में ही होता है। इनकी उन्नति प्रायः १६, १७, १९, २२, २५, २७, २८, ३२, ३३, ३७, ३८, ३९, ४२, ५१, ५७, ५८, ६२, ६४, ६५, ६७, ६८, ६९, और ७३ वें वर्षों में विशेष रूप से होती है। १५, १८, २४, ३१, ३४, ४३, ४४, ४७, ४८, ५५, ६३, ६६, ६७ और ७८ वें वर्षों में कुछ कठिनाइयां आती हैं। विशेष रूप से ३४ और ३६ वे वर्ष अधिक कष्टदायक होते है, इन दोनों वर्षों में चिन्ताओं के साथ नाना प्रकार की बाधाएँ आती हैं जिससे व्यक्ति अपने पेशे की उन्नति में पिछड़ जाता है और एक बार धक्का लगने से कुछ पीछे भी हट जाता है।

यद्यपि ३८ और ३९ वे वर्ष उन्नति कारक हैं लेकिन परिस्थिति की प्रतिकूलता से ये दोनों वर्ष भी कठिनाई दायक हो सकते हैं। व्यक्ति के सारे कारोबार बन्द हो जाते है और वह ऐसे गोरखधन्धे में फंस जाता है, जिससे उसे निकलने का मार्ग नही मिलता कुछ लोग ऐसी परिस्थितियों से घबड़ाकर आत्महत्या भी कर लेते है। इसलिये ३८ वे और ३९ वे वर्ष को खूब सतर्कता से बिताना चाहिये।

घातक वर्ष—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को हैजा, प्लेग जैसी संक्रामक बीमारियां ज्यादा पैदा होती है। इनका बाल्यकाल प्रायः नीरोग बीतता है। १४, १५, १७, १८, २०, २४, ३२, ३८, ४२, ४५, ४७, ४९, ५३, ५४, ५७, ५८, ५९ ६१, ६३, ६४, ६७, ७२, ७३, और ७५ वे वर्षों में रोगों से कष्ट उठाने पड़ते है, इन्ही वर्षों में अल्पायु घातक योग भी होते है।

इस मास वालों की आयु मध्यम होती है। ६४ वर्ष से ज्यादा कम ही लोग जिन्दा रहते हैं।

सन्तान सुख—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को सन्तान सुख अच्छा रहता है। प्रायः छः पुत्र और तीन कन्याएं उत्पन्न होती हैं। जिनका जन्म रविवार को रात में होता है, उन्हें पुत्र सुख उत्तम और कन्या सुख अल्प समझना चाहिये।

रवि, सोम और बुध को जन्मे व्यक्तियों को साधारण सन्तान सुख होता है। मंगलवार को दिन में जन्मलेनेवाले को २ पुत्र २ कन्याएं और रात में जन्म लेने वाले को ४ पुत्र १ कन्या होती हैं। शुक्र को रात में जन्म लेने वालों को साधारणतः सन्तान नहीं होती है। शनिवार को जन्मे व्यक्तियों को तीन पुत्र होते है।

आर्थिक स्थिति—इस मास वाले प्रायः धनी होते है, इन्हें पैतृक सम्पत्ति भी मिलती है। इनके लिये २०, २४, २५, २८, ३०, ३२, ४०, ४२, ४५, ४८, ५३, ५७, और ६५ वें वर्ष विशेष आमदनी के है। २१, २३, २७, ३८, ४१, ४३, ५०, ५६ और ६० वें वर्ष अर्थिक संकट के है। फाटका से इन्हें ४५ से लेकर ४९ वर्ष की आयु तक आमदनी होती है, पर एक बार हानि भी उठानी पड़ती है।

अनुकूल समय—चैत्र, वैशाख, भादों, पौष ये माह उत्तम होते हैं। शुक्रवार सबसे श्रेष्ठ और मंगलवार; सबसे

खराब होता है। तिथियों में २, ४, ५, ७, ८, ११, १३, और १४, १५ श्रेष्ठ हैं; १, ३, तिथियां अनिष्ट कारक हैं और शेष तिथियां मध्यम हैं।

कार्तिक मास में उत्पन्न होनेवाली नारियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न हुई नारियां सुन्दर तथा आकर्षक होती हैं, इन के शरीर की बनावट इतनी अच्छी होती है कि इन्हे देखकर बड़े-बड़े संयमियों का चित्त भी विचलित हुए बिना नहीं रहता। गृहस्थी के कार्य मे अधिक निपुण नही होती हैं और इनमें अल्हडपना सदा वर्तमान रहता है अपने दायित्व का इन्हे कम ख्याल रहता है तथा सारी बातों को मजाक में ही उड़ा देना चाहती है। यद्यपि सन्तान-प्रेम इनमें रहता है, लेकिन ये सन्तान के लिये अधिक उत्सुक नहीं रहतीं। कलहमय अपना जीवन बिताना इन्हे पसन्द नहीं होता है तथा ललित कलाओं की ओर इनका स्वाभाविक झुकाव रहता है। संगीत और चित्रकला से इन्हे अधिक ममत्व होता है, आनन्द और आराम अधिक खोजती है।

इनका स्वभाव इतना अधिक मिलनसार होता है कि सास, ननद इन्हे अधिक प्यार करती हैं। आधी रात में जन्मी देवियों का दाम्पत्य जीवन भी कलहमय व्यतीत होता है। जिन देवियों का जन्म गुरुवार और मंगलवार को होता है, उन्हें सन्तान अधिक उत्पन्न होती है तथा इनमें वासना अधिक होती है। इनका ऊपरी जीवन धर्मात्मा, निष्ठावान और नैतिक

होता है। श्रद्धालु होना इनका सहज गुण होता है। सोमवार और बुधवार को जन्म लेनेवाली नारियों को कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं तथा इनका जीवन संतोष और शांति का होता है। शुक्रवार को जन्म ग्रहण करने वाली नारियों का जीवन अधिक कामुक तथा लाञ्छित होता है।

शनिवार को जन्मी नारियां चतुर, चालाक और स्वस्थ संतान को जन्म देती है, यद्यपि इनकी प्रवृत्ति भी अच्छी नही होती पर इनका दिखावटी जीवन अच्छा रहता है। इस मास वाली नारियों को पतिदेव शिक्षित या अर्द्धशिक्षित मिलते है। धन के खयाल से धनी घरानों में इनका सम्बन्ध होता है। १, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १३, १५, १७, १८, २०, २१, २४, २८, ३२, ३८, ४२, ४६, ५२ और ५५ वे वर्ष कष्ट दायक होते है।

जिन देवियों का जन्म इस महीने में रविवार को होता है, उनका विवाह अमीर घराने में तथा शिक्षित वर के साथ, सोमवार को जन्म होता है, उनका विवाह मध्य वित्त वाले घर में तथा साधारण शिक्षित व्यक्ति के साथ, जिनका मंगलवार को जन्म इस मास मे होता है, उनका विवाह जमीन्दार, कृषक के घर में अर्द्ध शिक्षित या अशिक्षित के साथ, जिनका बुधवार को जन्म होता है, उनका नौकरी पेशेवाले घर में शिक्षित व्यक्ति के साथ, गुरुवार को सन्ध्याकाल में जन्म होता है उनका विवाह सम्पन्न शिक्षित घर में, शुक्रवार को जिनका जन्म होता है उनका विवाह अशिक्षित, नीच प्रवृत्ति वाले घर में और

जिनका जन्म शनिवार को होता है उनका विवाह लुहार, सुनार, कृषक जैसे पेशे वालों के घर में होता है। इस मास-वाली देवियों की आर्थिक स्थिति साधारणतः अच्छी होती है। कन्याएँ अधिक उत्पन्न होने के कारण इन्हें मानसिक कष्ट होता है।

—:०:—

अगहन मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में जन्मे व्यक्ति चुम्बुकीय आकर्षण-शक्तिवाले होते हैं। इनकी शक्ति का विकास चरम रूप में हो सकता है, डिक्टेटरशिप इन्हें अधिक प्रिय होती है और सब कार्यों में ये अपनी ही बात को रखना चाहते है। कृष्णपक्ष के जन्मे व्यक्ति पराक्रमशाली होते हैं, ज्ञान, विज्ञान, राजनीति आदि अनेक विषयों के पंडित होते हैं। इनके पराक्रम के समक्ष बड़ी से बड़ी शक्ति भी झुक जाती है। धैर्य और गतिशीलता इनके जीवन में कूट-कूट कर पायी जाती है, प्रारम्भिक जीवन इन लोगों का अत्यन्त विलासी होता है, परन्तु एकाएक इनका जीवन ऐसा बदलता है, जिससे इन्हे त्यागमय परिश्रमी जीवन बिताना पड़ता है। इस मास में जन्मे व्यक्तियों में से कुछ व्यक्ति संसार के इने-गिने व्यक्तियों में होते हैं, इनके चमत्कारी भाग्य के समक्ष संसार को आश्चर्यान्वित होना पड़ता है।

इस मास में जन्मे कुछ व्यक्तियों में ईर्ष्या, द्वेष की भावना अत्यन्त प्रबल होती है। कभी-कभी ये व्यक्ति अन्य लोगों के लिये खतरनाक हो जाते हैं तथा इनसे रक्षा पाना सहज काम नही होता। एक बार जिसके उपर इनकी वक्र दृष्टि हो जाती है फिर उसे बिना नष्ट किये नहीं छोड़ते हैं। यद्यपि ये दृढ़-प्रतिज्ञ होते हैं पर अवसर आने पर कभी-कभी अपनी प्रतिज्ञा छोड़ भी देते है। इनकी शक्ति इतनी अधिक होती है, जिससे शत्रु बिना चू-चपड़ किये नम्रीभूत हो जाते हैं। इनका चरित्र

साधारणतया मजबूत होता है, लेकिन कृष्णपक्ष में जन्मे व्यक्तियों का चरित्र उतना अच्छा नहीं होता। वासना इनमें इतनी अधिक प्रबलता में रहती है, जिससे इन्हें कभी कदाचित् दुराचार की ओर झुकना पड़ता है।

ये स्वयं अपने मालिक रहते हैं, दूसरों के अण्डर में रहना इन्हे पसन्द नही होता है। प्रशंसा और चाटुकारिता इन्हें पसन्द नहीं होती और ये स्पष्टवादिता ही अधिक चाहते हैं। ये मन्त्री, अभिनेता, सर्जन, प्रोफेसर, शिक्षक, वैज्ञानिक, कृषक और सधारण व्यापारी होते है। इस मासवाले व्यक्तियों को प्रबन्ध कार्य में बहुत सफलता मिलती है। यदि आत्म-संयम और आत्म-नियंत्रण रखना सीख जाये तो इन्हे व्यापार में भी सफलता मिल सकती है। सहन-शक्ति इस मास में जन्मे व्यक्तियों में प्रथम श्रेणी की होती है। कठोर-से-कठोर विपत्ति में भी घबड़ाते नहीं है तथा मौका पड़ने पर छोटे-से-छोटा कार्य भी प्रेमपूर्वक कर लेते हैं। आदर और इज्जत की इन्हे आकांक्षा अधिक होती है। जरा-सा अपमान होने पर भी इनकी अन्तरात्मा विद्रोह करने लगती है। यात्रा ये खूब करते हैं। देश-विदेशों में परिभ्रमण कर अपने ज्ञान भण्डार की वृद्धि करते हैं।

शुक्लपक्ष में जन्मे व्यक्ति गणित और भूगोल में भी प्रवीणता प्राप्त कर लेते है। छात्रवर्ग या कर्मचारियों पर अपना अनुशासन सुन्दर ढंग से चला सकते हैं, प्राचीन भाषा के प्रचारक होकर

विदेश में भी जाते हैं। ये दूसरों को कभी-कभी उनकी भलाई के लिये कष्ट भी पहुचाते हैं तथा जोखिम उठाकर भी इन्हें काम करना पसन्द होता है, परन्तु हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहना इन्हें पसन्द नहीं होता। ये चुभती हुई बातें कहते हैं और खतरे के समय बड़ी ही शांति से काम लेते हैं। इनका स्वभाव कुछ क्रोधी, स्वाभिमानी और निर्भीक होता है।

इस मास वाले व्यक्तियों का स्वास्थ्य साधारणतः अच्छा होता है, ये बहुत कम बीमार पड़ते हैं, इनके कुटुम्बी इन्हें ज्यादा प्रेम करते हैं और अवसर पड़ने पर इनके मददगार अनेक व्यक्ति हो जाते हैं। इनकी कार्यप्रवीणता के सामने असफलता को भी झुकना पड़ता है। इनके हाथ से अनेक कार्यों का श्रीगणेश होता है तथा इन्हें जमीन के नीचे से भी धन मिलता है। जिनका जन्म अगहन कृष्णा १, ३, ८, ११, १३ और १४ को होता है वे व्यक्ति मध्यम कोटि के धनी, जिनका जन्म कृष्णपक्ष ७, ९, १० तिथियों को होता है वे उच्च कोटि के धनी एवं कृष्णपक्ष की ४, ५, ६ तिथियों में जन्म-लेनेवाले अल्प धनी या दरिद्री होते हैं। शुक्लपक्ष की १, २, ५, ७, १०, ११, १२, १४ और १५ को जन्म-लेनेवाले साधारणतः धनी और ३, ४ को जन्म लेनेवाले प्रायः दरिद्री होते हैं।

इनके स्वभाव में यह विशेषता होती है कि इनके प्रभाव में आकर उद्दण्ड से उद्दण्ड कोई भी व्यक्ति इनका आदेश पालने लगता है। जिस व्यक्ति पर इनकी कृपा हो जाती है, फिर उस

व्यक्ति का साथ ये सर्वदा देते है। यद्यपि इनका घरेलू जीवन सुख और शांतिमय नहीं होता है, पर सामाजिक जीवन इनका बड़ा ही आदर्श होता है। सदा ये समाज के मुखिया बनकर उसका संचालन करते हैं। जिन व्यक्तियों का जन्म कृषक परिवारों में होता है, वे वहां भी पचायत के सेर्वे-सर्वा होते हैं और समाज का संचालन सुन्दर ढंग से करते हैं। पाश्चात्य ज्योतिष के सिद्धान्तानुसार इस मासवाले व्यक्ति उग्र स्वभाव के होते हैं तथा इंजिनियरिंग में बहुत चतुर होते है। मकान बनाने के कार्य में इनकी शानी का दूसरा नहीं होता। प्रतिभा इनकी विलक्षण होती है और दस्तकारी के कार्यों में अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करते है।

नारचन्द्र जैनाचार्य के मत से इस मास में जन्मे व्यक्ति प्रायः शारिरिक या बौद्धिक योद्धा होते है और इनका प्रारम्भिक जीवन बडी कठिनाई से बीतता है। अपने साहस और दृढ-संकल्प के कारण अन्त में इन्हें सफलता मिलती है। वे बड़े आवेगशील, स्वतन्त्र और जल्दी काम करनेवाले होते हैं तथा स्वाधिकार चाहते हैं। स्वाधीनता प्राप्त करना अपना जन्म-सिद्ध अधिकार समझते हैं। जब इनके गोचर में मंगल और शनि अष्टम में आते हैं, उस समय इनका झगड़ा होता है। प्रोफेसरी में ये सफल नहीं होते हैं। पर, सफल कवि या दार्शनिक अवश्य हो सकते हैं। कविता इन्हे अधिक प्रिय होती है। ये लोग सफल सैनिक भी बन सकते हैं और अपने साहस के

कारण किसी भी आन्दोलन के नेता भी बन जाते हैं। इनकी पहुंच प्रायः सभी जगत के ऊंचे-से-ऊंचे व्यक्तियों के पास होती है। इन्हें स्त्रियों से सावधान रहने की आवश्यकता होती है, जब ये किसी नारी के प्रेम पास में बंध जाते हैं तो अपना सर्वस्व बिना नाश किये नहीं छोड़ते।

इनकी भावना सदा अपनी महत्ता प्रदर्शित करने की होती है और यही चाहते हैं कि लोग हमें स्वामी या श्रेष्ठ समझें। इनकी दृष्टि में अपना गौरव सब से बड़ा होता है, इसलिये ये अपनी आलोचना सुनना पसन्द नही करते। वे स्वयं अच्छे आलोचक होते है पर अपनी आलोचना से नफरत करते हैं। अहंमन्यता की भावना भी इनमें कम या ज्यादा अंश में पायी जाती है। इनके जीवन में अनेक दुर्घटनाये घटती है। अग्नि या बारूद से जलने का इन्हे सदा भय रहता है, जरा-सी असावधानी में इनका बड़े से बड़ा नुकसान हो जाता है। इनमें नपुंसकता समय से पहले आती है। कुछ व्यक्ति इस मास के जन्मे नशीली वस्तुओं का प्रयोग भी अधिक करते है तथा कुछ की मृत्यु भी नशे के कारण हो जाती है।

विवाह और मित्रता—अगहन मास में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों का विवाह ११, १३, १७, १८, १९, २०, २२, २३, २५, २७, २८, ३०, ३२, ३३, ३५, ३६, ३८, ४२ और ४६ वर्ष की आयु में होता है। जिनका जन्म कृष्णपक्ष की १, ३, ४, ५, ९, ११, १४ और ३० तिथियों में होता है, उनके प्रायः दो विवाह

होते हैं। अवशेष कृष्णपक्ष की तिथियों में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों का एक विवाह होता है, रवि, सोम, मंगल और गुरुवार को जिनका जन्म होता है, उनका विवाह अवश्य होता है। शुक्रवार की रात को उत्पन्न होनेवालों को पत्नी का वियोग जल्दी होता है तथा आधी रात के पश्चात् जन्म लेनेवालों के दो विवाह होते है। शुक्रवार के मध्यान्ह में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों का एक ही विवाह होता है, तथा ये व्यक्ति परस्त्री से प्रेम भी करते हैं। बुध और शनिवार को जन्मे व्यक्तियों के दो विवाह भी होते हैं।

अगहन मास में जन्मे व्यक्तियों के मित्र अधिक संख्या में होते है। इनके स्वभाव में इतना वैशिष्ट्य होता है कि जहा रहते है वहाँ प्रेम का वातावरण बनाये रखते है जिससे मित्रों की सख्या अधिक होती है। इनके सच्चे मित्र भी कई होते है तथा समय आने पर इनके मित्र जान देने को भी तैयार रहते है, शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है परन्तु शत्रु इनका अनिष्ट नही कर पाते है।

घातक वर्ष—अगहन मास में जन्मे व्यक्ति पूर्णायु वाले होते हैं। बहुत कम व्यक्तियों का अकाल मरण होता है। हां बीमारिया इन लोगों को उत्पन्न होती है, पर ये जल्दी ही स्वस्थ हो जाते हैं, एलोपैथिक चिकित्सा इस मास वाले व्यक्तियों को लाभ नहीं करती है। बीमार होने पर आयुर्वेदिक इलाज

ही अधिक लाभदायक होता है। जन्म से ३, ८, १०, १२, १३, १६, २०, २२, २३, २५, २६, २७, २९, ३१, ३३, ३८, ४२, ४५, ४६, ४९, ५२, ५४, ५५, ५७, ५९, ६५, ७०, ७४ और ७९ वे वर्षों में अधिक कष्ट होने की संभावना है। इस मास के शुक्लपक्ष में जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को बाला-रिष्ट भी होता है। इसलिये किसी-किसी के मतमें जन्म से ८ वां, २१ वां, २८ वां दिन तथा १, ३, ५, ६, ७, ९, ११वे मास भी कष्टकारक माने गये है। वात और कफ कारक वस्तुओं के सेवन से बचना चाहिये।

अच्छा और बुरा समय—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का जीवन साधारणतः आनन्द पूर्वक व्यतीत होता है। विशेष रीति से विचार करने पर १४, १८, २०, २१, २३, २४, २७, ४२, ५४, ५५, ५७, ५९, ६१, ६२, ६३, और ७४ वें वर्षों में विशेष दुःख होता है। इनका पूर्ण भाग्योदय १८ वर्ष की आयु से प्रारम्भ होता है। २८ वर्ष की आयु से ३५ वर्ष की आयु तक का समय विशेष महत्वपूर्ण होता है, जीवन का निर्माण प्रायः इसी समय होता है। ३५ वर्ष से ४२ वर्ष की आयु के मध्य का समय जीवन की सफलता का होता है, और ४९ से ५६ वर्ष की आयु तक का काल स्वास्थ्य के लिये कुछ हानिकारक होता है तथा आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक कठिनाइयों का सामना भी व्यक्ति को इसी समय में करना पड़ता है।

सन्तान सुख—अगहन मास में जन्मे व्यक्तियों को पुत्रों की अपेक्षा कन्या सुख अधिक होता है। लेकिन जिन व्यक्तियों का जन्म शुक्ल पक्ष में होता है उन्हें ६ पुत्र और ५ कन्यायें तक होती है। कृष्ण पक्ष में जन्म ग्रहण करनेवालों को ४ कन्यायें और अधिक से अधिक दो पुत्र होते है।

अनुकूल समय—इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों को मंगलवार विशेष लाभदायक होता है। महीनों में कार्तिक, अगहन, वैशाख, और श्रावण अच्छे बताये गये हैं। तिथियों में ४, ५, ७, ११, १३ और १५ विशेष अच्छी १, ३, अनिष्ट-कारक और अवशेष तिथियां मध्यम होती है। संख्या में इन्हें सदा ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०, ९९, १०८ श्रेष्ठ है तथा जिन संख्याओं का योग ९ हो, ऐसी संख्याएँ भी उत्तम बतायी जाती है।

आर्थिक स्थिति—इसमास वालों की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है। प्रायः ये लोग अच्छे धनी होते है। युवावस्था में इन्हें अच्छी आमदनी होती है वृद्धावस्था में आर्थिक संकट उत्पन्न होता है। २४, २७, २८, ३२, ३५, ३९, ४०, ४८ और ५६ वें वर्ष में अच्छी आमदनी होती है। ३६, ३८, ४४, ४६ और ६४ वें वर्ष में आर्थिक संकट होता है।

अगहन मास में उत्पन्न होनेवाली नारियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न होनेवाली नारियां सफल गृहिणी होती हैं, इन्हें माता बनने की उत्कट इच्छा रहती है और जब से इनका

विकास आरंभ होता है उसी समय से माता बनने की इच्छा जागृत हो जाती है, इनका स्वभाव मिलनसार होता है, और मधुर भाषण करना खूब जानती है। कपट और छिपाव की भावना इनमें रहती है। सेवाभाव इनमें कूट-कूट कर पाया जाता है। ये घर के प्रत्येक व्यक्ति की सेवा करने में आनन्द पाती है। ये चतुर और चालाक भी पहले दर्जे की होती हैं। बातून भी इतनी अधिक होती है कि अपने सामने अन्य को बातें करने देना अपनी शान के खिलाफ समझती हैं। इनकी बुद्धि प्रखर होती है और समय पड़ने पर बुद्धिमानी की सलाह देती हैं।

कला और जानवरों से इन्हें अधिक ममत्व होता है। चीजों के संग्रह करने में ये बड़ी प्रवीण होती हैं। लेखिका और अध्यापिका इस मास की जन्मी नारियां बन सकती है। इनका कण्ठ मधुर होता है पर गाना इन्हें नही आता है। नृत्य कला से इन्हें घृणा होती है, भाषण और उपदेश देने में ये कुशल होती है, बात की बात मे लेक्चर देने लगती है, इनका भाग्य अच्छा होता है, लौकिक दृष्टि से इन्हें सारे सुख-सामान मिल जाते है। उत्तरार्द्ध में इन्हें वैधव्य का दुख भी उठाना पड़ता है। जिन नारियों का जन्म मंगलवार को होता है वे नारियां पुरुष जैसे स्वभाव की होती है तथा कठोर कार्य करने में किसी से पीछे नही रहती। शारीरिक श्रम भी अच्छा कर सकती है, पति से प्रेम कम करती हैं।

शुक्रवार और शनिवार को दोपहर के बाद जन्म लेनेवाली देवियाँ अत्यन्त संवेदनशील होती है, करुणा, दया इनमें अत्यधिक होती है। इनका दाम्पत्य-जीवन भी सुखमय व्यतीत होता है। गुरुवार और बुधवार को मध्यान्ह के पहले जन्म लेनेवाली नारियां बहु संतानवाली होती हैं, इनका जीवन दरिद्री होता है। अन्न-वस्त्र की चिन्ता इन्हें सदा बनी रहती है। इस मास के कृष्ण पक्ष में ३, ५, ७ को रोहिणी या कृत्तिका नक्षत्र में जिनका जन्म होता है वे नारियां प्रायः संपन्न घरानों में जाती है। इनका भाग्य श्रेष्ठ होता है इस मासवाली नारियों को १२, १४, १५, १७, १८, २०, २१, २२, २५, २७, ३२, ४७, ४९, ५०, ५१, ५४, ५५ और ६१ वे वर्ष कष्टकारक होते है, १७ वे वर्ष में प्रदर या अन्य रोग होते है। इस मास की जन्मी देवियां अपनी संचयशीलता के कारण अपनी निजी सम्पत्ति रखती है। २५ वर्ष की आयु से इनके पास अर्थ संचित होने लगता है। पिता के घर से इन्हे सम्पत्ति मिलती है। मामी और भाइयों का सुख इन्हें कम मिलता है। माँ और पिता का स्नेह इन्हें अधिक मिलता है। १३ वर्ष की आयु में इन्हें दुर्घटना का सामना करना पड़ता है तथा इस दुर्घटना से बचने के लिये सतर्क रहने की आवश्यकता है।

पौष मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में उत्पन्न हुए व्यक्ति आशावादी, दार्शनिक और प्रभावशाली होते हैं। ये स्वतंत्रता के उपासक तथा अपने विचारों को स्पष्ट व्यक्त करनेवाले होते हैं। कभी-कभी जोश में आकर अनुचित काम भी कर डालते हैं, जिसका इन्हें पीछे पछतावा रहता है। धर्म और राजनीति के ये जानकार होते हैं, बहस करने में इनका मुकाबिला दूसरे व्यक्ति आसानी से नहीं कर सकते। ये तार्किक और गणितज्ञ होते हैं, विचार इनके स्थिर नहीं होते और समय तथा परिस्थिति के कारण अपने विचारों को एकाएक बदल डालते हैं। इनकी अनुभूति अत्यन्त गहरी होती है, ज्ञान का संचय और वितरण आसानी से कर सकते हैं उदारता और दिखावा इन्हें अधिक पसन्द होता है, अनेक विषयों से संबंध रखते हुए भी किसी एक विषय के ये पूर्ण पण्डित होते हैं तथा उस अभीष्ट विषय की ओर इनकी अभिरुचि सदा बनी रहती है।

ये परिश्रम अधिक करनेवाले होते हैं, इनका बचपन विशेष अच्छा नहीं होता। पिता का सुख कम मिलता है तथा पैतृक संपत्ति भी अधिक नहीं मिलती। इन्हें शांति अधिक प्रिय होती है, और प्रत्येक कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न करना अभीष्ट होता है। दूसरों पर अनुशासन का कार्य भी ये अच्छी तरह कर सकते हैं। इनका स्वभाव साधारणतः मिलनसार होता है। इनमें एक विशेषता यह होती है कि

अस्थिरता के कारण ये अपने ध्येय को सदा बदला करते हैं यदि ये अपने ध्येय को निश्चित करलें और उसके ऊपर सारी शक्ति लगाकर चलें तो इन्हें आशातीत सफलता मिलती है, तथा जनता के सम्माननीय हो सकते है। अपनी योग्यता का प्रदर्शन ये कानून, धर्म, दर्शन, गणित, इतिहास, ज्योतिष, लोक-व्यवहार और नीति द्वारा कर सकते हैं।

पौष मास में जन्मे व्यक्ति शिक्षक, अकाउन्टेन्ट, लाइब्रेरियन, मैनेजर, क्लर्क, इन्जिनियर, शिल्पकार, सुनार, लेखक, वक्ता, वकील, जज, सेनापति, वैज्ञानिक, घोड़ों के व्यापारी, वस्त्र के व्यापारी, रबड़ की वस्तुओं के व्यापारी, एवं रेशम के व्यापारी होते है। प्रायः इस मास में जन्मे व्यक्ति धर्म, दर्शन, और उपदेश के द्वारा भी आजीविका कमाते है। सबसे अधिक सफलता इस मास के जन्मे व्यक्तियों को वस्त्र व्यवसाय में मिलती है, सिल्क के व्यापार में इन्हे अपरिमित लाभ होता है, घोड़ों के व्यापार से भी इन्हे धनागम होता है। नौकरी करनेवाले व्यक्तियों को किसी काम के प्रबन्ध में अधिक सफलता मिलती है और ये व्यक्ति अपने विवेक और चतुराई द्वारा सफल प्रबन्धक होते हैं। जिस कार्य को अपने हाथ में लेते हैं उसे पूरा करके छोड़ते हैं। किसी खान या मिल में नौकरी करने पर इस मासवाले ज्यादा लाभ उठाते हैं और धन संचय भी इन्हीं कार्यों से कर सकते हैं। इस मासवाले व्यक्ति घूस लेने में परहेज नहीं करते। तथा इधर उधर से भी पैसा

खींचा करते हैं, खर्चीले होते हैं, और धन संचय करने में प्रायः ये असफल होते हैं।

जिन व्यक्तियों का जन्म शुक्ल पक्ष में होता है वे व्यक्ति धनी होते हैं, कृष्णपक्ष में जन्मे व्यक्तियों के पास धन कम रहता है तथा सदा आय-व्यय का व्यौरा बराबर रहता है। इनके चरित्र में शिथिलता होती है, तथा संगति के कारण ये बिगड़ जाते हैं, कभी-कभी अच्छा निमित्त मिलने से ये उन्नतिशील भी हो जाते हैं और इनका मानसिक विकास भी अच्छा हो जाता है। जिन व्यक्तियों का जन्म कृष्णपक्ष में १, २, ४, ७, ८, १०, ११, १२, १४, और ३० को होता है वे व्यक्ति प्रायः मध्यम परिस्थिति के होते हैं और इनका जीवन सुखमय बीतता है। पौष मास में इतवार को २१ घटी १७ पल इष्टकाल पर जन्म-लेनेवाले व्यक्ति भाग्यशाली होते हैं और सहकारी निमित्तों के मिलने पर बहुत बड़े आदमी हो सकते हैं। इसी दिन जिनका जन्म ३३ घटी ४० पल इष्टकाल पर होता है वे प्रायः प्रमादी और जुआरी होते है। पराधीन रहकर अपनी अजीविका उत्पन्न करते हैं तथा स्त्री-बच्चे आदि भी इनके स्वभाव और दुर्गुणों से परेशान हो जाते हैं और अन्ततोगत्वा इनका जीवन भाररूप हो जाता है। सोमवार को ९ घटी १६ पल इष्टकाल पर जिन व्यक्तियों का जन्म होता है वे सिल्क के व्यापार में खूब धन कमा सकते हैं, ऊन और पटुआ के व्यापार में भी उन्नति कर सकते हैं।

सोमवार को २४ घटी ३६ पल इष्टकाल के आस पास जन्म-लेने-वाले व्यक्ति प्रोफेसरी और सैन्य संचालन में निपुणता प्राप्त कर लेते हैं। इस समय में जन्मे व्यक्ति का यश अन्तः-राष्ट्रीय होता है तथा सम्मान इन्हें सब जगह से मिलता है। स्वभाव इनका नम्र और विनयी होता है, जहां रहते हैं वहीं इन्हें आदर और सम्मान मिलता है। ये मंत्र-तंत्र आदि के भी अच्छे जानकार होते हैं। लोकोपयोगी अनेक विद्याओं के ज्ञाता होते हैं तथा अपने अदम्य उत्साह द्वारा समाज में एक नया सुधार उपस्थित करते हैं, पहले-पहल हल्का विरोध होता है लेकिन आखिरकार इन्हींकी विजय होती है। इस मास के मंगलवार की रात में जन्म ग्रहण करनेवाले व्यक्ति अत्यन्त धूर्त्त और चतुर होते है, ये व्यापार में इतने निपुण होते है कि बिना पूंजी के अच्छा रोजगार कर लेते है तथा थोड़े ही दिनों में अच्छा पैसा पैदा करते हैं। इसी दिन जिनका जन्म मध्यान्ह में होता है वे बड़े अच्छे तार्किक होते है, इनकी प्रतिभा विलक्षण होती है। तथा इनके द्वारा साहित्य का सृजन होता है, कवि भी ये हो सकते हैं तथा मानव मन की कोमल एवं सूक्ष्म भावनाओं का निरूपण भी ये करते हैं, बुधवार की रात में जिनका जन्म होता है, वे चालाक और कामुक होते हैं, इनका चरित्र भी दूषित होता है। ईमानदारी भी इनमें नहीं होती।

पौष के उत्तरार्द्ध में जन्म लेनेवाले व्यक्ति मिलनसार और शिक्षित होते हैं। प्रायः इस मास में जन्मे व्यक्ति एकान्तप्रिय

होते हैं, इनका व्यक्तित्व विशाल होता है और ये अपने जीवन में बड़े-बड़े काम करते है। इनके विचार बड़े ही मजबूत होते हैं, धार्मिकता इनके जीवन में जरूर रहती है। दीन और दरिद्रों के प्रति इनके हृदय में बडी भारी सहानुभूति होती है। प्रायः ये शांत और गंभीर होते हैं, इन्हें देख सहसा इनके विचलित होने का कोई अनुमान नहीं कर सकता। विचारों को दबा कर ऐसा रखते है कि औरों को उसका वास्तविक पता चलना दुष्कर हो जाता है, इन लोगों को या तो पूर्ण सफलता मिलती या पूर्ण विफलता। कार्यपटु होने के कारण प्रायः सफलता अधिक मिलती है, इनमें साहस अधिक नहीं होता।

यदि कदाचित साहस कर बैठे तो बड़े-से-बड़े कार्यों को विध्न बाधाओं के आनेपर कर ही डालते है। प्रायः जबतक ये जीवित रहते हैं इनके कार्यो का जनता अभिनन्दन नहीं करती। मृत्यु के पश्चात् इनके कार्य-कलाप बड़े आदर से देखे जाते हैं। इस मास में जन्मे व्यक्तियो का स्वभाव एक-सा नही होता। कुछ लोग क्रान्तिकारी, विप्लवी और स्वेच्छाचारी होते है तथा कुछ जीवन में संयत, शांत और व्यवस्थित कार्य करनेवाले होते है।

विवाह और मित्रता—पौष मास में जन्मे व्यक्तियों का विवाह प्रायः युवा वस्था में होता है। इन्हे पत्नियां अच्छी मिलती है। शादी के वर्ष १७, १९, २०, २१, २२, २४, २७, २९, ३०, ३१ और ३९ माने गये है। प्रायः इस मासवाले

व्यक्तियों के दो विवाह भी होते हैं, इनमें वासना इतनी तीव्र रहती है कि ये उसे सरलता से नहीं दबा पाते, फलतः इनका इधर-उधर अनुचित सम्बन्ध भी देखा जाता है। प्रायः ये मुंहफट होते हैं अपने हृदय की सारी बातों को कह डालते हैं। जिनका जन्म इस मास में १, ४, ७, ८, १०, ११, १२, १४ और १५ को होता वे प्रायः अधिक कामुक और प्रेमी होते हैं, इनका स्वभाव अधिक प्रेमिल होता है तथा प्रेम के कारण ये अनुचित कार्य भी कर डालते हैं। जिन लोगों का जन्म ६ और १० का होता है उनके निश्चित तीन विवाह, या एक विवाह दो, उपपत्नियां होती है।

मित्रता की दृष्टि से विचार करने पर अवगत होता है कि इस मासवालों को मित्र-संख्या साधारण होती है। सच्चे और हितैषी मित्र प्रायः इन्हें नहीं मिलते। मनोरंजन के लिये इनके मित्र सदा इन्हें घेरे रहते हैं। शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है। इनका स्वभाव जिद्दी होने के कारण प्रायः सर्वत्र शत्रुओं का वातावरण रहता है।

अच्छा और बुरा समयः—इस मास में जन्मे व्यक्तियों का जीवन साधारणतः सुखमय बीतता है। ३९ वर्ष की आयु से लेकर ४२ वर्ष की आयु तक इनका समय बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। इनके जीवन के १७, ३५, ४४ और ६२ वें वर्षों में विशेष परिवर्तन होता है तथा इन वर्षों का सदुपयोग होने से आगे का

जीवन सुखी होता है। विशेष रूप से विचार करने पर २४, ३४, ३८, ३९, ४२, ४४, ४६, ४७, ४८, ५०, ५१, ५३, ५७, ५९, ६२, ६५, ६७ और ७२ वें वर्ष विशेष अच्छे होते हैं इन वर्षों में व्यक्ति की उन्नति अधिक होती है तथा वह यश और सम्मान खूब प्राप्त करता है। १६, १८, २२, २३, ३६, ४१, ४३, ५२, ५६, ६१, ७१ और ७७ वें वर्ष हानिकारक होते हैं। इन वर्षों में आर्थिक क्षति तथा कौटुम्बिक कष्ट होते हैं।

जिन व्यक्तियों का जन्म पौष बदी १२ को होता है, उनका जीवन शुरू से १६ वर्ष की अवस्था तक अन्य के आश्रित रहता है तथा २५ वर्ष की आयु से इनका भाग्योदय होता है। कृष्ण-पक्ष की ३, ६, ८, ९, १० और ११ को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों का आखिरी जीवन सुखमय होता है तथा मध्य में कुछ कष्ट होता है। जिनका जन्म शुक्लपक्ष में ४, ५, ११, १२, और १४ को होता है उनके लिये ४२ से ४५ वर्ष तक का समय विशेष सावधान रहने का है।

घातक वर्ष—जिन व्यक्तियों का जन्म पौष मास में होता है, उन्हे ५, ६ वर्ष की आयु तक शारीरिक कष्ट रहता है। जन्म से १२, १७, २१, २७, ३२, ४५, ४८, ५७, ५८, ६४, ६७, ७० और ७४ वें वर्ष अकालमृत्यु दायक होते हैं। ४४ वर्ष की आयु में ही इनके स्वास्थ्य में कुछ परिवर्तन नजर आते हैं तथा इस वर्ष से इनका स्वास्थ्य गिरना आरंभ होता है। यदि इस वर्ष की

व्यक्ति सावधानी पूर्वक व्यतीत करदे तो फिर उसका स्वास्थ्य प्रायः जीवन भर के लिये अच्छा रहता है।

सन्तान-सुख—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को सन्तान सुख साधारण होता है। जिनका जन्म शुक्लपक्ष में होता है उन्हें संतान सुख अधिक होता है। और जिनका जन्म कृष्णपक्ष में होता हैं उन्हें संतान कम होती है। कृष्णपक्ष को १, २, ४, ५, ७, ९, १०, १२, १४ और ३० को जन्म लेनेवाले व्यक्तियों को अल्प संतान या ३ पुत्र और १ कन्या तथा इन्हीं तिथियों में सन्ध्या समय जन्म लेने वाले व्यक्तियों को संतानाभाव होता है।

शुक्लपक्ष की ५, ७, १० और १४ तिथियों को जन्म लेने-वाले व्यक्तियों के ४ संताने होती हैं।

गुरुवार, मंगलवार, सोमवार और शनिवार को जन्मे व्यक्तियों को अच्छा संतान सुख एंव रविवार, शुक्रवार और बुधवार को रात में जन्म लेने वालों को अल्प संतान सुख एवं इन्हीं दिनों में दिन में जन्म लेनेवालों को अच्छा संतान-सुख होता है।

अनुकूल समय—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को अगहन, माघ, श्रावण, और चैत्र मास अच्छे होते हैं। तिथियों में १, ३, ८, १३ और १५ अच्छी होती हैं। प्रत्येक पक्ष की ४ और ६ अनिष्टकारक एंव अवशेष तिथियां मध्यम होती हैं। वारों में बृहस्पतिवार विशेष अच्छा, रविवार हानिकारक और अवशेष

साधारण होते हैं। जन्म से २७ वां वर्ष विशेष उन्नति का होता है। इनकी उम्र में ३१ से ३९ वर्ष तक समय उन्नति के लिये स्वर्णावसर बताया गया है।

आर्थिक स्थिति—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को २४ वर्ष की आयु में आमदनी होती है। प्रारम्भ में इन्हें आर्थिक संकट रहता है। २४, २८, ३२, ३३, ४०, ४५, ४८, ५४ और ६२ वें वर्षों में अधिक आमदनी होती है। प्रारम्भ के १६ वर्ष साधारण आर्थिक कष्टमय २३, २५, ३०, ४३, ४९, ५८, ६५, ६७ और ७० वे वर्ष आर्थिक संकट के हैं। साधारणतः इस मास के जन्मे व्यक्ति नौकरी पेशा करते है। व्यापारी कम होते हैं।

पौष मास में उत्पन्न होने वाली नारियों का फलादेश

इस मास में जन्मी नारियां अत्यन्त स्नेहशील, और दया-मयी होती हैं। इनका स्वभाव मिलनसार और निराभिमानी होता है। व्यवस्था करने में बड़ी निपुण होती हैं। किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित ढंग से सम्पन्न करना इन्हें अच्छा आता है। इनके प्रेमिल स्वभाव के कारण घर के लोग तो प्रसन्न रहते हैं पर अन्य पड़ोसी इत्यादि भी खुश रहते हैं। इनमें कार्य करने की बड़ी भारी क्षमता होती है और दिन-रात परिश्रम करती रहती हैं। लेखिका, नर्स और प्रबन्धक का कार्य बहुत अच्छी तरह से कर सकती हैं।

इस मास में जन्म लेनेवाली नारियों को संतान अधिक उत्पन्न होती है। इनका विवाह प्रायः शिक्षित व्यक्तियों के साथ होता है। दाम्पत्य-जीवन अत्यन्त सुखमय रहता है। जिनका जन्म १, २, ४, ८, १० और १४ तिथियों को होता है वे नारियां बड़ी भाग्यशाली होती है तथा इनके कारण पति की उन्नति होती है। ११, १२ और १३ तिथियों मे जन्म लेनेवाली नारियां स्वतंत्र प्रकृति की होती है, वे स्वयं आजीविका उत्पन्न कर सकती है। १७ वर्ष की आयु से लेकर २१ वर्ष की आयु के बीच में इन्हें स्त्रियोचित रोग होते है, जो देवियां खटाई, मिर्च आदि तीक्ष्ण हानिकारक पदार्थों का सेवन करती है उनका स्वास्थ्य इस उम्र मे जरूर खराब हो जाता है। इसलिये इस अवस्था में सावधान रहना चाहिये। इन्हे संतान १६ वर्ष की आयु से लेकर २१ वर्ष की आयु के बीच मे हो जाती है।

इस मास में जन्मी नारियों को ३९ वर्ष की आयु में आर्थिक कष्ट होता है। इस समय अशुभ ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव के कारण अर्थ जन्य कष्ट उठाना पड़ता है। आषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन, पौष, और चैत्र मास में जन्मे व्यक्तियों के साथ विवाह होने से सुखी होती है। जन्म से ५, ८, १७, १९, २१, २४, २६, २९, ३२, ३९, ४५, ४८, ५४ और ६२ वे वर्षों में रोग जन्य कष्ट होता है। अल्पायु कारक १७, २१ और ३९ वे वर्ष बतलाये गये हैं।



माघ मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में जन्म लेनेवाले व्यक्ति कुशल कार्य-कर्त्ता होते हैं। ये लोग सत्यनिष्ठ, विचारवान, राजनीतिज्ञ, व्यापारी और धर्मात्मा होते है। शिक्षाविभाग के लिये अधिक उपयुक्त हो सकते हैं। भूमि के प्रबन्ध में भी पटु होते हैं। इस मास के जन्मे व्यक्तियों में पांच प्रतिशत जमीदार होते हैं। किसी भी कार्य को नियमित रूप से करते है, उतावलापन तथा जल्दबाजी इनमें नहीं होती। ये महत्त्वाकांक्षी होते है तथा जीवन में अपना एक उपयुक्त स्थान बनाना चाहते है। परिश्रम से ये जी नहीं चुराते है और बैठे-बैठे ही किसी भी कार्य को पूरा करने की उत्कट इच्छा रखते हैं।

इनका जीवन प्रायः कर्त्तव्य परायण होता है, आत्म कल्याण की ओर अधिक झुकते हैं, धैर्य इनमें ऊंचे दर्जे का होता है। कठिन से कठिन विपत्ति के आने पर भी धैर्य को नहीं छोड़ते है। इनके जीवन में अनेक परिवर्तन होते है तथा परिवर्त्तन इच्छुक होना इनका स्वाभाविक गुण होता है। नियम पालने में ये शिथिल नहीं होते, विपत्ति के समय भी आचार-विचार को नहीं छोड़ते हैं। संसार से ४० वर्ष की अवस्था में इन्हे घृणा हो जाती है और एक अवसर ऐसा भी आता है जिससे इन्हे उदासीन जीवन बिताना पड़ता है। स्वात्मानुभूति के ये बड़े प्रेमी होते है। इस मास में जन्मे कुछ व्यक्ति कवि भी होते हैं तथा इनकी कविता अत्यन्त ऊंचे दर्जे की होती है। शृंगार और

शांत रस की अच्छी कविता करते हैं। ये गायक होते हैं जिससे अपनी कविता गाकर लोगों के हृदय पर उसका प्रभाव अच्छा डालते हैं। इस मासवाले गाना सुनने के लिये ये बहुत उत्सुक होते हैं तथा संगीत और नृत्य से इन्हें अधिक प्रेम होता है।

माघ मास के जन्मे १० प्रतिशत व्यक्ति सफल शिक्षक होते हैं और ये अपने कार्य में अटूट श्रम करते हैं, यदि शिक्षा-विभाग का कुछ भार इन पर छोड़ दिया जाता है तो ये बड़े उत्तरदायित्व के साथ उसका निर्वाह करते हैं। इस महीने में जन्म लेने वाले व्यक्तियों में ८० प्रतिशत शिक्षित और शेष अशिक्षित होते है। ये प्रबन्धक भी अच्छे होते है।

विचारशील होने के कारण इनकी प्रत्येक बात बड़ी उपयोगी होती है। कार्य की प्रगति करने में बड़े कुशल व्यक्ति होते है। इन्हे आटा, कागज और कपड़े की मिलों में अच्छा लाभ हो सकता है तथा संगमर्मर के बर्त्तन या अन्य सामान और सौदागरी की अन्य चीजों का व्यापार करे तो अच्छा लाभ उठा सकते हैं, फल और मेवों की खरीद-फरोख्त में भी लाभ हो सकता है। इस मास के जन्मे सैकड़े दश व्यक्ति बड़े व्यापारी होते है और मिल-व्यवस्था या अन्य बड़े-बड़े फरमों की व्यवस्था में पूर्ण हाथ बटाते है।

इनका स्वभाव साधारणतः मिलनसार होता है, ये बड़ों के आज्ञापालक होते हैं और उनका आदर करते हैं। स्वभाव से ये कंजूस होते हैं और पैसे को बचाना अपना धर्म समझते हैं,

लेकिन इनका अदृष्ट ऐसा होता है कि जितना पैसा बचाना चाहते हैं उतना ही अधिक खर्च होता है। फिर भी, ये धनी होते हैं और इनका रहन सहन ऊंचे दर्जे का होता है। इस मास के जन्मे अधिकांश व्यक्ति मध्यम दर्जे के धनी होते हैं। हां, इस महीने वालों में एक विशेषता यह होती है कि ये दरिद्री प्रायः नहीं होते अन्न, वस्त्र की विकट समस्या इनके पास नहीं आने पाती तथा खर्च के लिये सदा पैसा इन्हें मिलता रहता है।

इस मास वाले व्यक्तियों में एक विशेषता यह होती है कि इनका स्वभाव आकर्षक होता है तथा ये विनोदप्रिय होते हैं।

जिनका जन्म माघ मास के उत्तरार्द्ध में होता है वे सफल वैज्ञानिक व्यापारी और बैरिष्टर होते हैं। वे कानून के इतने अच्छे जानकार होते हैं कि अच्छे-अच्छे लोग इनकी बराबरी नहीं कर पाते। नवीन आविष्कारों के पश्चात् ये कुछ चीजों का नव-निर्माण और नवीन व्यवस्था ऐसी करते हैं जिससे सारा संसार आश्चर्य में पड़ जाता है। पंचायती निवटारा करना तथा लोकहित की बात करना, इनका नैसर्गिक गुण होता है।

इनका भाग्य बड़ा अच्छा होता है और जहां ये जाते हैं वहीं इनका आदर होता है। जिन व्यक्तियों का जन्म कृष्ण-पक्ष की १, ७, और १३ तिथियों की रात को होता है वे व्यक्ति आलसी और आत्म-कल्याण के इच्छुक होते हैं। शुक्लपक्ष की ४, ७, १२ और १५ को जन्म लेनेवाले व्यक्ति डाक्टर होते हैं, तथा नवीन पेटेंट दवाइयां निकालते हैं। सर्जरी में निपुण

होते हैं, और चीर-फाड़ के कार्य में इन्हें अच्छी सफलता मिलती है तथा ख्याति प्राप्त करते हैं।

जुआ खेलने की आदत पड़ जाने से इस मासवालों को अपनी सम्पत्ति का सर्वनाश करना पड़ता है। ४४ वर्ष की आयु से इनकी आमदनी बहुत बढ जाती है। लक्ष्मी इनकी दासी होती है।

रविवार और सोमवार को जन्मे व्यक्ति कार्यकुशल, व्यापारी तथा राजमान्य होते हैं। मंगलवार की रात को जन्मे व्यक्ति अधिक भाग्यवान और परिश्रम शील होते हैं। जिनका जन्म मंगलवार को दिन के दोपहर से पहले होता है वे प्रायः अध्ययनशील और गणितज्ञ होते है, इनसे अन्वेषण का कार्य अच्छा होता है। इतिहास और दर्शनशास्त्र के संबंध में नवीन प्रकाश डालते है। बुधवार और गुरुवार को जन्म ग्रहण करने वाले व्यक्ति साहित्यिक होते है तथा अनुसंधानात्मक कार्य भी करने में प्रवीण होते हैं।

शुक्रवार को जन्म लेनेवाले व्यक्ति भावुक होते हैं तथा अपनी भावुकता में आकर कभी-कभी अनुचित कार्य भी कर डालते है, इनका चित्त चंचल होता है और एक वस्तु पर एक सा ख्याल नहीं रख सकते। शनिवार को जन्मे व्यक्ति पहलवान होते है, मोटर ड्राइवर, हलवाहक या अन्य किसी मशीन के चालक होते है। इनका स्वभाव कठोर होता है, शारीरिक श्रमसाध्य कार्यो को योग्यता पूर्वक कर सकते है।

विवाह और मित्रता—इस मास में जन्मे व्यक्तियों का विवाह प्रायः १६ वर्ष की आयु में होता है, कुछ व्यक्तियों का १०, ११ वर्ष की आयु में भी विवाह होता है। ग्रहों की दृष्टि से विचार करने से ज्ञात होता है कि १४, १६, १७, १८, २०, २१, २४, २५, २६, २८, ३२ और ४१ वे वर्षों में विवाह होता है। जिनका जन्म ४ घटी १५ पल इष्टकाल पर इस महीने में होता है, उनका प्रायः विवाह नहीं होता या विवाह हो जाने के बाद जल्द ही स्त्री का मरण हो जाता है।

जिनका जन्म १, ३, ५, ७, ८ और १३ तिथियों में होता है, उनकी प्रायः दो शादियां होती हैं। १, ७, तिथि को जन्मे व्यक्तियों की तो तीन शादियां भी हो सकती हैं। चरित्र इन लोगों का साधारण होता है, कुछ व्यक्ति गुप्त प्रेम अन्य स्त्रियों से भी रखते हैं, लेकिन इनकी बात प्रायः प्रकट हो जाती है।

इस मास में जन्मे व्यक्तियों की मित्रता ज्येष्ठ, अगहन, और आषाढ़ में जन्मे व्यक्तियों के साथ अच्छी रहती है। मित्रता देर में होती है, परन्तु सच्ची मित्रता होती है। ये अपने मित्रों की सदा मदद करते हैं, तथा मित्रों को अच्छे काम में लगा कर उनका हित साधन करते है। इनका स्वभाव मिलनसार होता है, जिससे इनके मित्र अधिक होते हैं, प्रायः धनी घराने के व्यक्तियों से ही इनकी मित्रता होती है और ये मित्र भी अनैतिक होते हैं। जिनका जन्म शनिवार की रात को होता है उनके शत्रु भी अधिक होते हैं और ये शत्रु सदा इन्हें

कष्ट दिया करते हैं। मित्र इनके दिखावटी होते हैं और समय आने पर शत्रु का काम करते हैं। श्रावण, आश्विन मास में जन्मे व्यक्तियों का इनसे अच्छा व्यवहार नहीं होता है। इन दोनों मासों में जन्मे व्यक्ति प्रायः इनके शत्रु होते हैं। व्यवहार-कौशल के कारण ये अपने चारो ओर के वातावरण को शान्त बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं।

घातक वर्ष—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को गुर्दे और पाचनक्रिया के रोग अधिकतर होते है, ठंडक से इन्हें लकवा, निमोनिया, खांसी होने की संभावना है। १८ वर्ष की आयु से २५ वर्ष की आयु के मध्य में हैजा, चेचक रोग भी होते हैं। जन्म से प्रारंभ के २१ दिन कष्टकारक होते हैं। ३, ५, १५, १७, २४, ३९, ४०, ४५, ५२, ५४, ५५, ५६, ५९, ६३ और ७२ वें वर्ष घातक होते हैं। जिनका जन्म १ और ७ तिथियों में होता है उनके लिये १६, १७, २४, २६, २९, ३४, ३९, ४०, ४१, ४५, ५४, ५९, ६३, ७२, ७४ वे वर्ष घातक है। ३, ९, ११ और १२ तिथियों को जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिये १९ और २४ वें वर्ष विशेष कष्टकारक होते हैं। भौमवार और शनिवार को जन्मे व्यक्तियों के लिये १, ७, ११, १६, १९, २९, ३२, ३५, ३७, ४०, ४२, ४५, ४७, ४९, ५४, ५७, और ६४ वें वर्ष अकाल मृत्युदायक होते हैं। गुरुवार, बुधवार और सोमवार को जन्मे व्यक्तियों के लिये २, ८, १४, १६, १९, ३२, ३७, ४०, ४२, ४४, ४९, ५४, ५७, ५९, ६३, ६४, ६७ और ७२ वें वर्ष

घातक हैं। रविवार को और शुक्रवार को जन्मे व्यक्तियों के लिये १, २, ४, ७, १०, १२ १७, १९, २४, २७, ३२, ३४, ३९, ४२, ४५, ४६, ५७, ६२, ६३ और ६७ वें वर्ष घातक हैं। खुजली इन्हें कष्ट देती रहती है।

आर्थिक स्थिति—इस मासवाले प्रायः धनी होते हैं। व्यसनों के कारण धन और यश की हानि होती है। २१, ३७, ३९, ४८, ६३ वें वर्ष आर्थिक दृष्टि से विशेष हानि-प्रद हैं २७, ३०, ३२, ४२, ४५, ४६, ४९, ५०, ५५, ५७ और ६८ वें वर्ष लाभ-प्रद हैं। सफेद वस्तुओं के व्यापार में अधिक लाभ होने की संभावना है।

संतान सुख— इस मास में जन्मे व्यक्तियों को अत्यधिक संतान पैदा होती है। जिनका जन्म रोहिणी नक्षत्र में होता है उन्हें ५ पुत्र और ६ कन्याये, मृगशिर या श्रवण नक्षत्र में जन्म लेनेवालों को ४ पुत्र ५ कन्याएँ, धनिष्ठा और रेवती में जन्म लेनेवालों को २ पुत्र ७ कन्याएँ, भरणी और शतभिषा में जन्म लेनेवालों को ५ कन्याये, अश्विनी और अभिजित में जन्म लेनेवालों को संतानाभाव या अल्प संतान, पुष्य या स्वाति में जन्म लेनेवालों को ५ पुत्र और १ कन्या, पुनर्वसु और कृत्तिका में जन्म लेनेवालों को ४ पुत्र और ३ कन्याएँ, आश्लेषा और मघा में जन्म लेनेवालों को १ पुत्र और ४ कन्यायें, विशाखा और ज्येष्ठा में जन्म लेनेवालों को ३ पुत्र और १ या २ कन्याएँ, अनुराधा और तीनों पूर्वाओं में जन्म-

लेने वालों को अल्प संतान, मूल और तीनों उत्तराओं में जन्म-लेनेवालों को बहु संतान एव आर्द्रा नक्षत्र में जन्म ग्रहण करने वालों को ५ सन्तानें होती है।

जिन व्यक्तियों का किसी भी नक्षत्र के तृतीय चरण के अन्त में जन्म होता है उन्हें प्रायः संतान नही होती। बहुत प्रयत्न के बाद दो पुत्र और एक कन्या के होने का योग आता है। साधारणतः इस मासवालों को ६ पुत्र और दो कन्याएँ या एक कन्या उत्पन्न होती है।

अनुकूल समय—इस मास में जन्मे व्यक्तियों के लिये वैशाख, ज्येष्ठ, कार्त्तिक, अगहन और माघ मास अच्छे होते है दिनो में शनिवार सबसे श्रेष्ठ दिन है, गुरुवार सबसे निकृष्ट और हानिकारक है. रविवार और मंगलवार मध्यम है, अवशेष दिन साधारणतया अच्छे है। तिथियों मे २, ७, ११, और १३ अच्छी है। ४ और ९ हानिकारक एव अवशेष तिथियां मध्यम है।

संख्यायों में इन्हे ८ की संख्या श्रेष्ठ होती है तथा ४ और ८ के संयोग से बनी संख्याओं से बचना चाहिये जैसे ४८, ८४ आदि जिन संख्याओं का योग ८ रहता है वे संख्याए भी श्रेष्ठ है। जैसे ६+२, ७+१, ५+३, ४+४ आदि। आसमानी रंग और काले रंग की वस्तुएं धारण करने से अशुभ ग्रहों का प्रभाव दूर हो जाता है। इनके लिये महत्त्वपूर्ण समय १९ वर्ष से २७ वर्ष तक की आयु का है इसे श्रेष्ठ बना लेने पर समस्त

आयु सुखपूर्वक व्यतीत होती है। परिवर्तन इसी समय के अन्तर्गत आते है। पिता की अपेक्षा माता का सुख अधिक होता है।

प्रायः इस मास में जन्मे व्यक्तियां को पैतृक संपत्ति मिलती है और ये इसका सदुपयोग कर धन की वृद्धि करते हैं। इनका भाग्योदय २७ वर्ष की आयु में होता है।

अच्छा और बुरा समय - १८, २४, २७, २९, ३२, ३७, ४५, ४६, ४७, ४९, ५३, ५८, ६४, ६८ और ७४ वे वर्षों में अधिक अनुकूल समय आता है। इन वर्षों मे आर्थिक और सामाजिक अवस्था अच्छी रहती है। १७, १९, २३, २६, ३०, ३५ ३७, ४०, ४४, ५१ ५८, ५६, ६३, और ६५ वे वर्षों में कुछ विपत्तियां आती है तथा इन वर्षो में मानसिक संकट अधिक आते है। ४५ और ४६ वे वर्ष में गठिया, पक्षाघात, रक्तचाप खुजली से कष्ट होता है। ५३ वाँ वर्ष मानसिक अशान्तिदायक होता है।

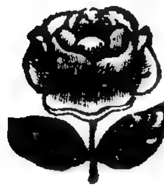
माघ मास में उत्पन्न होने वाली नारियों का फलादेश

इस मास में जन्म लेने वाली नारियाँ छोटे-छोटे कार्यों को भी सावधानी से करती है। ये प्रत्येक कार्य को अपने ढंग से करती हैं तथा जब तक इनका मन लगता है तब तक कार्यों को बड़ी मेहनत के साथ उन्नत बनाने का प्रयत्न करती हैं। वे किसी भी काम को बिना पूरा किये नहीं छोड़ती है। वे इतना

अधिक परिश्रम करती हैं कि घर गृहस्थी के समस्त कार्यों को अपने हाथों से बात की बात में कर डालती हैं। भोजन बनाना इन्हें अच्छा आता है, प्रत्येक वस्तु का निर्माण कलापूर्ण ढंग से करती हैं। प्रायः घर के बड़े आदमी इनकी फैशन पसन्दगी के कारण नाराज रहते हैं। इन्हें फैशन से अत्यधिक प्रेम रहता है, शौकीनी की चीजें नित नवीन चाहती हैं। गला इनका मधुर होता है, वाद्य से इन्हे प्रेम रहता है और नृत्य कला में भी रुचि रखती हैं, इनका स्वभाव मिलनसार होता है पर स्पष्ट बात कहने में ये किसी से नहीं चूकती है, इनकी कार्यक्षमता का सभी लोहा मानते है। वासना इनमें अधिक रहती है, धर्मभीरुता इनमें कूट-कूट कर पाई जाती है। पति सेवा अच्छी तरह करती हैं दया और सेवा ये दोनों चीजें इनमें पाई जाती हैं।

इन्हे भ्रमण करने का अधिक शौक होता हैं, तीर्थयात्राएं अधिक करती हैं, इनका २४ वर्ष की आयु के बाद का जीवन सुखमय बीतता है। इस मास की जन्मी कुछ नारियां कचहरी, स्कूल आदि सार्वजनिक कार्यों को भी करती हैं, इनका व्यावहारिक जीवन अच्छा होता है। भाग्य और पुरुषार्थ दोनों पर ये भरोसा करती हैं, जब तक इन्हे अपने ध्येय में सफलता नहीं मिलती, शान्ति नहीं होती। संतान सुख इन्हे साधारण होता है।

ज्येष्ठ और अगहन मास में जन्मे व्यक्तियों के साथ विवाह होने से ये अधिक सुखी होतीहैं, तथा इनके दाम्पत्य जीवन में चार चांद लग जाते हैं, धैर्य और सहनशीलता इनमें अधिक होती है। कभी-कभी जब इन्हें शनक आती है तो ये अकरणीय कार्य को कर डालती है। १६ वर्ष की अवस्था तक इनका जीवन बड़ा खतरनाक होता है। २, १५, १६, १७, २०, २२, २४, ३४, ३८; ३९, ४०, ४२, ४३, ५४, ५७, ५८, ६०, ६२, ६४, और ६५ वें वर्ष घातक बताये गये हैं।



फाल्गुन मास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस मास में जन्मे व्यक्तियों का स्वभाव मिलनसार होता है, ये आवश्यकता के समय अपना रूप बहुत जल्दी बदल लेते है। इनके मन की थाह पाना बड़ा कठिन है। मनुष्य को पहचानने की शक्ति इनमें अधिक होती है। ये अवसरवादी होते हैं, अवसर मिलते ही आगे बहुत बढ जाते है। सामाजिक भावना इनमें अधिक रहती है। सभा-सोसाइटियों में अधिक भाग लेते है, सेवावृत्ति भी पाई जाती है। इस माह में जन्मे व्यक्तियों में से अधिकांश मानव-जीवन के लक्ष्य को हृदयं-गम कर अनुकूल जीवन का विशिष्ट लक्ष्य चुन उसे दृढता के साथ प्राप्त करते हैं। आत्मविश्वास की भावना बलवती रहती है।

एक अंग्रेज ज्योतिर्विद् ने इस मासवालों का फल बताते हुए कहा है कि इनके जीवन में आशा का लघु-दीपक झिलमिल-झिलमिल प्रकाश कर जीवन-मार्ग को अलंकृत और आनंदपूर्ण करता रहता है। परन्तु इनके साथ एक कठिनाई यह रहती है कि संगीत के प्रभाव के कारण इनका सर्वनाश भी हो जाता है। हृदय इनका इतना कोमल होता है कि दूसरे का रंग बहुत आसानी से चढ़ जाता है। यद्यपि ये स्वतंत्र-विचार के होते है लेकिन कभी-कभी गोचर में अष्टम केतु के आने से इनकी बुद्धि तर्कहीन हो जाती है तथा मोह का आवेग इतनी तेजी से बढ़ता है, जिससे इनका पतन भी हो जाता है।

नारद संहिताकार ने इस मासवालों की मानसिक अवस्था का विश्लेषण करते हुए बताया है कि ये भावुक और संवेदन-शील होते हैं। सहानुभूति की तरंगें इनके विचारों में कम्पन उत्पन्न करती रहती हैं। इनकी भावनायें अच्छी, पर विचार बिखरे हुए और शिथिल होते हैं। कभी-कभी बुरे और विरोधी विचारों की तरंगे इन्हें पराजित कर लेती हैं। तात्पर्य यह है कि बुद्धि स्थान में गोचर के शनि या राहु के आने पर मन दुर्बल, विचार शिथिल और शक्ति हीन भावनायें उच्च एवं गतिहीन होती है। इस अवस्था में इन व्यक्तियों के ऊपर अन्य लोगों का प्रभाव बहुत आसानी से पड़ता है, जिससे इनका चारित्रिक पतन भी हो सकता है।

अध्ययन की दृष्टि से विचार करने पर प्रतीत होता है कि इस मासवाले भाषाविज्ञान, कला, दर्शन, समाज शास्त्र, भूगोल, पुरातत्त्व, चिकित्सा एवं अर्थशास्त्र के अच्छे ज्ञाता होते है। १२ प्रतिशत शिल्प कला के ज्ञाता, १४ प्रतिशत चिकित्सक, १६ प्रतिशत प्रोफसर, शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, सम्पादक, लेखक, १८ प्रतिशत अन्वेषक, वैज्ञानिक, तथा नवीन वस्तुओं के आविष्कर्त्ता एवं शेष ४० प्रतिशत अशिक्षित और अक्षर ज्ञान से रहित होते हैं। कृषक वर्ग के लोग इस मास-वाले वनस्पति-विज्ञान में निपुण हो सकते है, खेती के उतार-चढ़ाव का ज्ञान अच्छा रहता है।

यदि इन्हें कृषि की शिक्षा दी जाय तो ये उसमें अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इनके विचार स्वतंत्र होते हैं, ग्राम पंचायत में इनका प्राधान्य रहता है। मस्तिष्क परिष्कृत, और कार्य करने की शक्ति अधिक होती है। आलस्य को ये अपने पास भी फटकने नही देते।

यद्यपि सामाजिक सुधार करने की ओर इनकी रुचि होती है, लेकिन वे इसमें सफल नही हो सकते। प्राचीन ख्याल के लोग इनसे असंतुष्ट रहते है। पर इन्हें किसी की परवाह नहीं रहती, जितना संघर्ष इनके सामने आता है उतने ही ये विचारों के पक्के होते जाते है। एक वर्ग विशेष के लोगों पर इनका प्रभुत्व रहता है। न्याय और तर्क के ये बड़े कायल होते है, बिना न्याय के ये एक कदम भी आगे नही बढना चाहते है, कार्य करने की लगन भी इनमें अपूर्व होती है, जहाँ रहते हैं वहां का वातावरण सदा गतिशील रहता है। इनके जीवन में ऐसे एक दो अवसर आते है जिनमें इन्हे अधिक मान मिलता है। यदि इनके साथ कडाई का व्यवहार किया जाता है तो ये उसे सहन नही करते हैं और तुरन्त बगावत कर बैठते है।

वैसे तो ये सादा व्यवहार पसन्द करते है, लेकिन विशेष अवसरों पर खुशामद भी पसन्द करते है। जो व्यक्ति इनकी खुशामद करता है, वही इन्हे ठग सकता है।

इस मासवाले किसी भी कार्य का प्रारंभ बड़ी तत्परता से करते है, लेकिन मध्य में विघ्न आने पर उस कार्य को अधूरा

ही छोड़ देते हैं। अन्त तक करने की क्षमता इस मासवालों में कम ही व्यक्तियों में पाई जाती है। अध्ययन, अध्यापन अन्वेषण और कला के कार्यों में इन्हें अधिक सफलता मिल सकती है। ये कार्य इनकी अभिरुचि के अनुकूल होने के कारण अधिक सफलता के साधन माने गये हैं।

आचार्य नारचन्द्र का मत है कि ये बड़े हौसले वाले होते हैं, इन्हें साधारण पद से संतोष नहीं होता। ये सदा उत्तरदायी पद के अभिलाषी रहते है। दूसरों पर अधिकार जमाने की चिन्ता इन्हे सदा लगी रहती है। अपने व्यवसाय में इन्हे पूर्ण लाभ होता है। इस मास के जन्मे जो व्यक्ति छोटे-छोटे रोजगार के कार्य करते है, उन्हें अच्छा लाभ होता है। बड़े व्यापारियों को मशीनरी के कार्य में अधिक सफलता मिलती है। यों तो इन्हे आमदनी साधारणतः अच्छी होती है, खर्च भी इनका आमदनी के बराबर होता है। धन संचय की प्रवृत्ति होते हुए भी ये संचित करना नहीं जानते है। एक तरह से इन्हे धन बचाना आता ही नहीं है। यद्यपि ये किफायत सारी से काम लेना चाहते है, लेकिन अपनी आदत से लाचार होने के कारण किफायती कार्य इनसे होता नही है।

रविवारी पंचमी तिथि को जन्म ग्रहण करने-वाले इस मास के व्यक्ति भद्र परिणामी, कार्य कुशल और देश सेवक बनते है। इन्हे सांसारिक कार्यों में अभूतपूर्व सफलता मिलती है। मंगलवार को भरणी नक्षत्र में जन्म ग्रहण करने वाले खूंखार

और लड़ाकू होते हैं। गुरुवार को पुष्य नक्षत्र में जन्मे इस मास के व्यक्ति विद्याप्रेमी, धनी, सुन्दर और स्वस्थ होते हैं। श्रवण नक्षत्र में गुरुवार या सोमवार को जन्मे व्यक्ति धर्मात्मा, शान्त-परिणामी, परोपकारी, और उत्कृष्ट अध्यात्म प्रेमी बताये गये हैं। इनकी विचार-धारा मौलिक और जगत के लिये सुखकर होती है।

श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मे व्यक्ति वाद्य-प्रिय और विलासी भी बताये गये है। सोमवार को एकादशी तिथि में जन्म लेनेवाले उत्कृष्ट धनी होते है, इन्हे कहीं से धन की प्राप्ति होती है। जिनका जन्म इसी दिन २७ घटी ५६ पल इष्टकाल पर होता है उन्हे लाटरी या जमीन से धन की प्राप्ति होती है। इनका भाग्य अच्छा होता है। जहाँ रहते हैं वहाँ सभी लोग इनके प्रेमी हो जाते है। इनमें एक विशेषता यह भी पाई जाती है कि ये अपनी बातचीत की हुशियारी से अन्य लोगों को जल्द ही अपने अनुकूल बना लेते है।

विवाह और मित्रता—इस मास के जन्मे व्यक्तियों के मित्र अधिक होते हैं। प्रायः इनके सभी मित्र हँसमुख और मिलनसार होते है। बचपन के साथी भी जीवन के अन्त तक मित्रता निभाते हैं। विवाह इनका अच्छी सुन्दर स्त्री से होता है। ६५ प्रतिशत इस मासवालों का विवाह होता है। विवाह के वर्ष ८, १४, १५, १८, २०, २१, २२, २४, २६, ३२,

३८, और ४२ बताये गये हैं। इन्हें कौटुम्बिक सुख अच्छा मिलता है। प्रायः इस मासवाले सभी व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय बीतता है। जिनका जन्म इस महीने में १, २, ५, ६, ९, ११ और १३ तिथियों में होता है उनके प्रायः दो या तीन विवाह होते है, पर इतना यहां विशेष अवगत करना चाहिये कि इष्टकाल की घड़ियां सम और पल विषम होने से इस फल में व्यतिक्रम भी हो सकता है।

वासना और नैतिकता की दृष्टि से इस महीने के जन्मे व्यक्ति साधारणतः दृढ चरित्रवाले होते हैं, बहुत कम अनैतिक मिलेगें। इनकी आत्मा कुपथ में जाने से बहुत घबराती है और सर्वदा न्याय-मार्ग पर चलना ही इन्हें इष्ट होता है। ३४ वर्ष की अवस्था के बाद शुक्लपक्ष में जन्मे व्यक्ति कुछ भक्की और वासनाग्रस्त होते है। होलिकाष्टक में जिनका जन्म होता है वे प्रायः कार्य कुशल होते है, लेकिन इनका लैङ्गिक आचरण शिथिल होता है। इनकी एक या दो उपपत्नियां रहती है।

घातक वर्ष—इस मासवाले व्यक्तियों का स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहता है। रक्तचाप, बवासीर, प्रमेह, और स्नायु विकार के रोग इन्हें होते है। १, ५, ८, ११, १७, २७, २९, ३४, ३५, ३८, ४२, ४३, ४८, ४९, ५२, ५३, ५५, ५७, ६२, ६८ और ७१ वे वर्ष घातक बताये गये हैं, जिनका जन्म रविवार को होता है उनके लिये १७ वां वर्ष अकालमृत्यु

द्योतक है। २१, २७, २६, ३५, ३७, ३८, ४२, ४३, ४५, ४६, ५३, ५५, ५७ और ६३ वें वर्ष उन्हें घातक होते है। सोमवार को जन्म ग्रहण करनेवालों के लिये ३६ वें वर्ष में बड़ी भारी बीमारी आती है। इसके अनन्तर ५२, ५५, ६२ और ६८ वे वर्ष घातक होते हैं। मगल को जन्म लेनेवालों के लिये २६, २७, ३१ और ३४ वे वर्ष कष्टदायक बताये गये हैं।

बुधवार को जन्मे व्यक्तियों के लिये १६, २१, २५, २७, ३४, ३८ और ५३ वे वर्ष कष्टदायक, गुरुवार को जन्मे व्यक्तियों के लिये १४, १८. २७, २६, ४३, ४६, ६२ और ६८ वे वर्ष कष्टदायक २१ शुक्रवार को जन्मे व्यक्तियों के लिये ११, २६, ४३, ४४, ५३, ५५, ५६ और ६५ वें वर्ष घातक एवं शनिवार को जन्मे व्यक्तियों के लिये २८, ४२, ४६, ५२, ५७, ६५, ६८ और ७१ वे वर्ष घातक होते है। वायुकारक वस्तुएं इन्हे अधिक हानि पहुंचाती हैं।

अनुकूल समय—माघ, चैत्र, अगहन और वैशाख इस मास के जन्मे व्यक्तियों के लिये अच्छे होते हैं। तिथियों में २, ३, ४, ६, ११, १३, १४ और १५ विशेष सिद्धिदायक हैं। गुरुवार, शुक्रवार और मंगलवार अच्छे होते हैं। शनिवार और १२ तिथि हानिकारक है। २८ वर्ष की आयु से लेकर ३५ वर्ष की आयु तक का समय विशेष सावधानी का है। इस समय का सदुपयोग करने से सारी जिन्दगी सुधर जाती

है। जन्म से २१, २३, ३३, और ३७ वें वर्ष आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अच्छे नहीं होते। इन वर्षों में अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जहाँ तक संभव हो मुकद्मेबाजी से उपर्युक्त वर्षों में अवश्य बचना चाहिये। ४२ वर्ष की आयु में एक बड़ा भारी झंझट सामने आता है। इससे बचने के लिये रविवार का व्रत करना चाहिये।

आर्थिक स्थिति—इस मास में जन्मे व्यक्ति साधारण धनी होते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यापार से धन अधिक कमाते हैं। २५ वर्ष की अवस्था में भाग्योदय होता है। २५, २८, ४०, ४५, ५१ और ६३ वे वर्षों में इनकी आमदनी अच्छी होती है। खर्च के लिये इन्हें कष्ट कभी नहीं होता है, पर विशेष धनी कम ही व्यक्ति होते हैं। पैतृक सम्पत्ति इन्हें अवश्य कुछ मिलती है।

संतान सुख—फाल्गुन मास में जन्मे व्यक्तियों के लिये संतान-सुख साधारण होता है। इन्हें १८, २०, २२, २३, २५, २७, २९, ३३, ३४, ३६, ३७, ३९, ४२, ४३, ४५ और ४९ वे वष में संतान प्राप्ति होती है। जिनका जन्म शुक्लपक्ष की २, ४, और ५ को मध्याह्न के बाद होता है, उन्हे तीन पुत्र और दो कन्याये होती हैं। इसी पक्ष की ७ और ८ तिथि को आधी रात के बाद जन्म लेनेवालों को पाच पुत्र और तीन कन्याये; इन्हीं तिथियों में दोपहर के पहले जन्म लेनेवालो को सिर्फ तीन पुत्र होते है।

कृष्णपक्ष की १, ३, ४ और ७ तिथि को अपराह्ण में जन्म लेनेवालों को प्रायः संतानाभाव, मध्यान्ह के पूर्व जन्म लेने वालों को ४ पुत्र और १ कन्या, मध्य-रात्रि के पूर्व जन्म लेने-वालों को एक पुत्र और तीन कन्यायें, और रात्रि के अंतिम पहर में जन्मे व्यक्तियों को ४ पुत्र होते है। इसी पक्ष में ५, ८, ११ और १३ तिथियों में प्रातःकाल तिथि प्रारंभ होने के दो घंटे के भीतर जन्मे व्यक्तियों को चार पुत्र और तीन कन्यायें, दो घंटे के बाद और ५ घंटे के पहले जन्मे व्यक्तियों को सिर्फ ५ कन्यायें, मध्यान्ह समय में जिस समय छाया का अभाव हो, जन्मे व्यक्तियों को संतानाभाव या अल्पसंतान, मध्यान्ह के आधा-घंटा दिन ढल जाने के बाद इन तिथियों में जन्मे व्यक्तियों को बहु संतान, और रात में जन्मे व्यक्तियों को दो पुत्र और ५ कन्याये होती है। यों तो इस मासवाले अधिकांश व्यक्तियों को अल्प-संतान सुख या संतानाभाव होता है। इन व्यक्तियों को प्रतिदिन पीपल या तुलसी के पेड़ के पास कुछ समय रहना चाहिये।

फाल्गुन मास में जन्मी नारियों का फलादेश

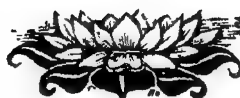
इस मास में जन्मी देवियां रूपवती और गुणवती होती हैं। इनका गार्हस्थिक जीवन साधारणतः अच्छा रहता है। प्रबन्ध करने में ये निपुण होती हैं, घरेलू उद्योग धंधों में भी इनका मन खूब लगता है। ये जिस कार्य को अपने हाथ में

लेती हैं, कलापूर्ण ढंग से उसे करती हैं। इनका स्वभाव अच्छा होता है। पढ़ने लिखने से इन्हें प्रेम रहता है और शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति कर लेती हैं। प्रबन्धकार्य में इन्हें अच्छी सफलता मिलती है, संघर्ष से इन्हे भय रहता है, थोड़े से झंझटों के आने पर घबड़ा जाती हैं। इनका मानसिक विकास योग्य साधनों के मिलने पर अच्छा होता है। न्यायालाय संबंधी कार्यों को भी ये योग्यतापूर्वक कर सकती है। इनकी अभिरुचि सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की ओर रहती है। अवसर आने पर ये क्रियात्मक कार्य भी कर सकती हैं। सहनशीलता, मृदुलता, दयालुता, परोपकारता और उदारता आदि गुण इनमें पाये जाते है। जिन देवियों का जन्म कृष्णपक्ष को २, ५, ७, ८ और १२ तिथियों में होता है, वे गृहस्थी के कार्य मे और भी अधिक निपुण होती है।

इस मास मे जन्मी देवियों का विवाह पौष, आषाढ और माघ मास के जन्मे व्यक्तियों के साथ कर देने पर अच्छा होता है। इन पुरुषों के साथ इनका दाम्पत्य जीवन सुखमय बीतता है। जिनका जन्म इस मास की २, ७, ८, १०, ११, १२ और १५ तिथि को होता है उनका वैवाहिक जीवन वैशाख और श्रावण मास में उत्पन्न व्यक्तियों के साथ शादी करने से अधिक सुखमय रहता है। १९ वर्ष की अवस्था में इस मास में जन्मी नारियों के साथ एक अद्भुत घटना घटती है, जिससे इनके जीवन में एक विचित्र प्रकार का परिवर्तन होता है।

१६ वर्ष की अवस्था से लेकर २३ वर्ष की अवस्था तक का समय विशेष सावधानी का है।

इन्हें संतान-सुख अच्छा होता है। प्रायः इन्हें ७ तक संतानें होती है, कृष्णपक्ष की जन्मी नारियों के ऊपर ४२ वर्ष की अवस्था में विपत्ति आती है, जिससे इन्हें सब प्रकार का कष्ट होता है, यदि इस कष्टनिवारण के लिये वे रविवार का व्रत ४० वर्ष की आयु से करें तो अधिक अच्छा हो। इनके लिये घातक वर्ष १, ४, ८, १३, १६, २४, २६, २६, ३२, ३५, ३६, ४२, ४५, ४६, ५७, ६२ और ६५ वे हैं। इन वर्षों के अतिरिक्त जन्म से ४, ५, ७ और ८ वे मास भी अनिष्ट कारक हैं। इन्हें २४ वर्ष की आयु में एक बीमारी होती है।



चैत्रमास में उत्पन्न हुए व्यक्तियों का फलादेश

इस महीने में जन्मे व्यक्ति भावुक, मिलनसार, कार्यपरायण और उद्योगी होते हैं। विघ्न-बाधाओं को बात की बात में पार कर लेते हैं। यद्यपि इनका स्वभाव एकान्त प्रिय होता है, पर सार्वजनिक कार्यों में अधिक भाग लेने के कारण जल्द नेता बन जाते हैं। इनकी शिक्षा साधारण होने पर भी, ये अपनी कार्यपटुता से प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। यों तो इस मास के जन्मे व्यक्ति सैकड़े पचास शिक्षित होते हैं, तथा सैकड़े चौदह उच्च शिक्षित होते हैं। कला-कौशलों से इन्हें प्रेम होता है। कृष्णपक्ष की अपेक्षा शुक्लपक्ष में जन्मे व्यक्ति अधिक भाग्यवान्, मननशील और उत्तरदायी होते हैं। जिनका जन्म चैत्र सुदी पूर्णिमा को होता है, वे प्रायः धनी, कलापारखी और चलते-पुरजे होते हैं। चैत्रवदी १, २, ४ और ७ तिथियों को दोपहर के पश्चात् जन्म ग्रहण करनेवाले व्यक्ति कृषिकार्य में विशेष निपुण होते हैं, परन्तु कुछ व्यक्ति व्यापार में भी प्रवीणता प्राप्त करते हैं। चैत्रसुदी ९, १३ को जन्म लेनेवाले महान् होते हैं।

नारचन्द्र और नारदसंहिता के अनुसार इस मास के जन्मे व्यक्ति शिक्षक, मैनेजर, साधारण नौकर, जिलाधीश, पुलिस-अफसर और साधारण चिकित्सक होते हैं। यदि ये व्यक्ति उद्योग-धन्धों के विकास में लग जाते हैं, तो इन्हें अच्छी सफलता मिलती है। व्यवसाय की बुद्धि जन्मजात होती है,

यदि थोड़ासा सहयोग मिल जाय, तो फिर ये अधिक उन्नतिशील हो सकते है।

जिस व्यक्ति का जन्म चैत्रवदी ९ शनिवार को दोपहर के दो बजे होवे, वह व्यक्ति अधिक उन्नति करता है, उसका यश सर्वत्र व्याप्त रहता है। अन्ताराष्ट्रीय कार्यों में उसे ख्याति मिलती है, साधारणतः शनिवार और मंगलवार को जन्मे इस मास के व्यक्ति पहलवान, लड़ाकू और सफल सैनिक होते हैं। इनका शरीर ५ फुट ? इंच से लेकर ५ फुट ९ इंच तक ऊँचा होता है। रंग गोरा, शरीर दुबला-पतला और स्वभाव रुक्ष, पर अभिमानी होता है।

आर्थिक स्थिति—इस महीने में जन्म ग्रहण करनेवाले व्यक्ति सर्वदा धन की कमी का अनुभव करते है। इनमें तृष्णा इतनी अधिक होती है, जिससे विपुल परिमाण में धन के होने पर भी ये अपने को तुच्छ समझते है। सैकड़े दस इस मास के जन्मे व्यक्ति अधिक धनी, सैकड़े पच्चीस मध्यम दर्जे के धनी और सैकड़े पन्द्रह साधारण धनी होते है। अवशेष व्यक्ति दरिद्री होते है। इस महीने की विषम तिथियों में जन्मे व्यक्ति प्रायः दरिद्री होते है, पर धातुओं के व्यापार में इन्हें धन की आमदनी होती है। रावण-संहिता के मतानुसार चैत्र सुदी १, ५, ९, १०, १३, १५ को जन्मे व्यक्ति अच्छे धनी और यशस्वी होते है। ३० वर्ष की आयु में इस मासवालों

को अकस्मात् धन मिलता है। व्यापार में वृद्धि, राज्य से लाभ और सुसराल से भूसम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

जिनका जन्म गुरुवार और सोमवार की रात को इस महीने में होता है वे २२ वर्ष की आयु से धन कमाने लगते हैं, किन्तु जिनका जन्म इन्हीं दिनों में दिन का होता है, वे २५ वर्ष की आयु से धन कमाते है। मंगल, बुध और शुक्रवार को दिन में जन्मे व्यक्तियों को कभी भी कोई आर्थिक कष्ट नहीं होता है, वे २४ वर्ष की आयु से अपने व्यवसाय में लग जाते हैं, जिससे योगक्षेम के लायक सदा अर्जित करते रहते है। उपर्युक्त वारों में रात में जन्मे व्यक्तियों को जीवन के पूर्वार्द्ध में आर्थिक कष्ट और उत्तरार्द्ध में धन लाभ होता है। वास्तव में इस मास के जन्मे व्यक्तियों के लिये २०, २२, २३, २४, २८, ३२, ३५, ४१, ४९, ६४ वें वर्ष आर्थिक दृष्टि से विशेष महत्त्व-पूर्ण है।

विवाह—इस मास में जन्मे व्यक्तियों का विवाह प्रायः जल्दी होता है। रावणसहिता और भद्रबाहु-संहिता के अनुसार इस मासवालों के विवाह वर्ष १०, ११, १२, १४, १६, १८, १९ और २२ बताये है। पाश्चात्य ज्योतिषियों के मत से इस मासवालों का विवाह २१ वर्ष से लेकर ३० वर्ष की आयु तक होता है। सैकड़े बत्तीस व्यक्तियों का विवाह अल्पवय में, सैकड़े अट्ठाईस व्यक्तियों का विवाह युवावस्था में और सैकड़े

पन्द्रह व्यक्तियों का विवाह प्रौढावस्था या वृद्धावस्था में होता है। सैकड़े पच्चीस व्यक्तियों का विवाह नहीं होता है। नारचन्द्राचार्य ने बताया है कि जिनका जन्म चैत्रवदी ३ को सायंकाल होता है, उनके दो या तीन विवाह और जिनका जन्म शुक्लपक्ष की सम तिथियों में होता है, उनके भी प्रायः दो विवाह होते है।

मित्रता—इस मास के जन्मे व्यक्तियों की मित्रता अधिक व्यक्तियों से होती है। ये जहाँ रहते है, वहाँ मित्रों का एक गिरोह रखते है। शत्रु इनके बहुत कम होते है। ४० वर्ष की आयु में एक बड़े शत्रु का जन्म होता है, जिससे इन्हें अन्त तक संघर्ष करना पडता है। शुक्लपक्ष-वाले व्यक्ति इस नियम के अपवाद भी होते है।

स्वास्थ्य—साधारणतः स्वास्थ्य अच्छा रहता है। परन्तु २३ वर्ष की आयु के पश्चात् अकस्मात् रोग उत्पन्न होते है, जिससे कष्ट होता है। ४, ५, ७, ९, १०, १४, १६, १९, २०, २३, २८, ४०, ४२, ४४, ४८, ५०, ५१, ५४, ५७ और ६७ वे वर्ष कष्टप्रद होते है। इनमें स्वास्थ्य को हानि होती है और ५४ तथा ६७ वे वर्ष अकालमृत्यु दायक भी होते हैं। इनको वात जन्य गठिया, लकवा, खुजली और संक्रामक रोग होने का भय रहता है।

चरित्र की कमजोरी और दृढ़ता—इस महीने में जन्मे व्यक्ति प्रायः सत्यनिष्ठ और ईमानदार होते हैं। चरित्र के

अत्यन्त पक्के होते हैं। इनकी नैतिकता की छाप आस-पास के सभी व्यक्तियों पर पड़ती है। शुक्लपक्ष के जन्मे व्यक्ति अत्यन्त धर्मात्मा, दयालु और सत्यवक्ता होते हैं। अपने आचरण के बल से ये नेता भी बनजाते है। किन्तु कृष्णपक्ष के व्यक्तियों में आचारणहीनता भी पाई जाती है।

अच्छा और बुरा समय—इस मास में जन्मे व्यक्तियों का भाग्योदय यों तो १८ वर्ष की आयु में ही हो जाना है, परन्तु इनके लिये २२ वर्ष से लेकर २७ वर्ष की आयु तक का समय महत्व पूर्ण हैं, इसी समय इनके भाग्य का निर्माण होता है, यदि इस समय का सदुपयोग किया गया तो फिर भावी जीवन सुखमय व्यतीत होता है। ३१ वर्ष की आयु से लेकर ३६ वर्ष की आयु तक अत्यन्त सुखप्रद है, इन वर्षों में इस मास के जन्मे व्यक्ति सब प्रकार का सुख प्राप्त करते है। ५५ से लेकर ५६ वर्ष की आयु का समय भी शान्तिदायक है। १४, १८, २४, ३७, ३६, ४२, ४५, ४६, ५३ व वर्ष कष्टप्रद होते है।

शारीरिक सुख-दुःख की दृष्टि से ११, १७, २७, ३२, और ४२ वे वर्ष विशेष महत्व के है, इन वर्षों में इस मासवालों को या तो शारीरिक दृष्टि से अत्यन्त कष्ट होता है, अथवा अत्यन्त सुख प्राप्त करते है। इनके लिये श्रावण, कार्त्तिक, माघ, फाल्गुन और चैत्र मास सभी कार्यों के लिये अच्छे होते हैं। इन महीनों में ये नवीन कार्य आरम्भ कर सकते है

इस मास के जन्मे व्यक्तियों के लिये रवि और शुक्र ये दो दिन अच्छे होते हैं, तिथियों में ९, १०, १३, १५ अच्छी बताई गई हैं।

संख्या—इस मासवालों के लिये ६, ५ और ३ के अंक अच्छे होते हैं तथा इन अंकों के योग से बनी हुई संख्याएँ भी शुभ मानी गई है। रेश या फाटका लगानेवालों को इन अंकों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

सन्तान—इस मास में जन्मे व्यक्तियों को सन्तान सुख अच्छा होता है। प्रथम सन्तान १७, २२, २५, २८, ३२ वर्ष की आयु में होने का योग है। जिनका जन्म इस महीने में सोमवार को आर्द्रा नक्षत्र में होता है, उन्हें संतान नहीं होती तथा जिनका गुरुवार को १५ घटी १० पल इष्टकाल पर जन्म होता है, उन्हें ३८ वर्ष की आयु में सन्तान होती है। कृष्णपक्ष में जन्मे व्यक्तियों को कन्याएँ अधिक और शुक्लपक्ष में जन्मे व्यक्तियों को पुत्र अधिक होते हैं। कुल सन्तानें ८ तक होती है, किन्तु जिनका रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होता है, उनके ५ ही सन्तानें होती हैं।

विशेष फलादेश—चैत्रमास में जन्मे व्यक्ति परोपकारी होते हैं, इन्हें ३० वर्ष की आयु में सम्मान मिलता है, राजमान्य, देशमान्य और अपने वर्ग के लिये पूज्य भी इसी आयु में हो सकते हैं। किन्तु यह फलादेश चैत्र सुदी १३ तक जन्म ग्रहण

करने वाले व्यक्तियों को ही मिलता है। ३० वें वर्ष में इन्हें अकस्मात् धन प्राप्ति होती है, परन्तु मंगल ग्रह की अनिष्टकारी दृष्टि होने से इन्हें इस फल की प्राप्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अतएव मंगल ग्रह की शान्ति कराना आवश्यक है। ४८ वर्ष से लेकर ५२ वर्ष की आयु तक किसी बड़े व्यापार की संभावना है, इस व्यापार में सहस्रों रुपये की आमदनी होती है। सूर्य के उच्च होने पर जन्म ग्रहण करने-वाले बिना किसी के सहयोग के अपना विकास करते है। वैशाख की सन्धि अर्थात् चैत्र पूर्णिमा की समाप्ति के बाद जन्मे व्यक्ति अत्यन्त प्रभावशाली होते हैं। शासन करने मे इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता है। देश-विदेश में सब जगह आदर पाते है।

चैत्रमास में जन्मी नारियों का फलादेश

इस महीने में जन्मी देवियां सुन्दर, गौरवर्ण और ऊँचे कद की होती हैं। इनका दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है। इन्हें १५ वर्ष की आयु में कुछ चिन्ताएँ होती है तथा चैत्रमास में जन्मी नारियों को चालीस प्रति सैकड़े २४ वर्ष की आयु में वैधव्य जीवन की यातनाएँ सहनी पड़ती है। यद्यपि कुछ देवियाँ १९ वर्ष की आयु में भी विधवा हो जाती हैं, किन्तु अनुपात २४-२५ वर्ष की अवस्था का ही है। साठ प्रति सैकड़े भाग्यवान् और सुखी होती हैं।

इस मास की नारियों को सन्तान अधिक उत्पन्न होती है। प्रथम सन्तान १४, १६, १८, १६ और २५ वर्ष की आयु में होती है। इनका स्वभाव साधारणतया अच्छा होता है, माता जैसा वात्सल्यभाव इनमें पाया जाता है। कृष्णपक्ष की १, ३, ४, ५, ६ और ११ को जन्मी देवियाँ प्रायः शिक्षित होती हैं तथा शुक्लपक्ष में जन्मी नारियाँ सभी साक्षरा होती हैं। हाँ जिनका जन्म सन्ध्या काल में होता है, वे मूर्ख होती हैं। प्रातः-काल सूर्योदय से लेकर २॥ घंटे के भीतर जिनका जन्म होता है वे राज-रानी का सुख भोगती है, जैसे-जैसे दिन ढलता जाता है, वैसे-वैसे शुभ फल का ह्रास और अशुभ फल की वृद्धि होती जाती है। चैत्र, वैशाख, आषाढ, माघ और फाल्गुन में जन्मे व्यक्तियों के साथ विवाह करने से इस मास को जन्मी नारियों का सौभाग्य अच्छा होता है तथा दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक बीतता है। ज्येष्ठ और पौष मास में जन्मे व्यक्तियों के साथ विवाह करने से वैधव्य योग का फल प्रायः भोगना पड़ता है, दाम्पत्य जीवन में कलह, अशान्ति भी होती है।

ज्येष्ठ मास के जन्मे व्यक्तियों के साथ विवाह सम्बन्ध चैत्रमास के शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि में जन्मी नारियों का होने से सन्तान नहीं होती तथा कृष्णपक्ष की द्वादशी तिथि को जन्मी देवियों का सम्बन्ध अगहन वदी ४ को जन्मे पुरुष के साथ होने से २८ से ३२ वर्ष की आयु के मध्य में सन्तान होती है। जिन देवियों का जन्म चैत्रवदी ५ बुधवार को रात में

होता है, वे प्रायः धनी होती है तथा उनके भाग्य का सुख अन्य व्यक्ति भी उठाते है, जहाँ उनका पदार्पण होता है, वहाँ सुख और शान्ति व्याप्त रहती है। साधारणतः ये ३१ वर्ष की आयु में विशेष सुखी होती हैं। इनके जीवन के १८, २०, २४, ३१, ३८, ४४ और ५२ वे वर्ष महत्वपूर्ण होते है। इन वर्षों में इनका शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक विकास होता है। कृष्णपक्ष में जन्मी नारियों की आंखे कुछ कमजोर होती हैं, जिससे उन्हें चश्मा लगाना पड़ता है। शुक्लपक्ष की २, ५, ८ को जन्मी नारियाँ सम्पन्न होती हैं, पर इनका स्वभाव चिड़चिड़ा होता है।

